1144 hours

MR. SPEAKER: Now I call upon Shri Shanta Kumar to move the motion and speak.

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, इससे पहले कि प्रस्ताव पेश किया जाये, मैं अपनी एक कठिनाई आपके सामने और आपके माध्यम से सदन के सामने रखना चाहता हूं।

राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पेश होने जा रहा है, इसलिए मैं सदन में रहना चाहता हूं, मुझे रहना भी चाहिए। लेकिन इसी समय राज्य सभा में भी धन्यवाद का प्रस्ताव लिया जा रहा है। इसके साथ-साथ एक विदेशी मेहमान भी आये हुए हैं जिनका कार्यक्रम पूर्व निश्चित था और उनसे मुझे अभी साढ़े बारह बजे मुलाकात करनी है। अगर चर्चा आरंभ हो रही है, तो मैं इस समय यहां उपस्थित हूं लेकिन अगर राज्य सभा में मेरी मांग होगी तो मुझे राज्य सभा में भी जाना पड़ेगा। मैं सदन से सहयोग की आशा करता हूं और आपसे अनुमति चाहता हूं कि मुझे दोनों सदनों में समय बांटकर काम निकालने की इजाजत दी जाये।

MR. SPEAKER: Shri Shanta Kumar.

... (Interruptions)

SHRI NARESHKUMAR PUGLIA CHUNNALAL (CHANDRAPUR): I will take only one minute. ... (Interruptions)

... (व्यवधान)

श्री मोहन सिंह : अध्यक्ष महोदय, हमने नियम १९३ के अंतर्गत नोटिस दिया था और आपने निर्देश दिया कि थोड़ी देर बाद हमारी बात सुनेंगे। आपके वचन पर हम बैठ गए।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Tomorrow.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Only shri Shanta Kumar's speech will go on record.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Will you please take your seats? Hon. Members, please take your seats.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Shri Mohan Singh, please take your seat.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please take your seats.

श्री मोहन सिंह : आपने आश्वस्त किया था कि दो मिनट हमारी बात सुनेंगे। उत्तर प्रदेश में कानून और व्यवस्था की जो गंभीर हालत है, उसे हम नियम १९३ के अंतर्गत चर्चा का विषय बनाना चाहते हैं क्योंकि केन्द्र सरकार की विशेष जिम्मेदारी दलित, महिलाओं और अल्पसंख्यकों की हिफाजत करने की है।

... (व्यवधान)

कल सुन लें।

... (व्यवधान)

हम आपकी आज्ञा का अनादर नहीं कर रहे हैं। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER : Please give your notice tomorrow. I will give you a chance.

... (Interruptions)

DR. SUBRAMANIAN SWAMY (MADURAI): But the Home Minister is here.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER : Please take your seats.

DR. SUBRAMANIAN SWAMY : He can he make a statement on the murder of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad's leader in Madurai. He belongs to the frontal organisation of RSS.

MR. SPEAKER : Shri Subramanian Swamy, please take your seat. Except the speech of Shri Shanta Kumar, nothing will go on record.

(Interruptions)*

---

*Not recoded

Title: Shri Shanta Kumar moved the Motion of Thanks on the President's Address, delivered to both Houses of Parliament assembled together on the 25th March, 1998. Shri Vaiko seconded the motion Forty-Four amendments were moved.(Not Concluded)

1147 hrs.

राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव

श्री शांता कुमार (कांगड़ा) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

ठकि राष्ट्रपति की सेवा में निम्निलिखित शब्दों में एक समावेदन प्रस्तुत किया जाये':-

'कि इस सत्र में समवेत लोक सभा के सदस्य राष्ट्रपति के उस त

५

अभिभाषण के लिए जो उन्होंने २५ मार्च, १९९८ को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष देने की कृपा की है, उनके अत्यंत आभारी हैं'।

मान्यवर अध्यक्ष महोदय, चुनाव के जंगल में उठी हुई हवायें अब शांत हो रही हैं। विश्वास मत के समय ठंडी और गर्म हवा चली। मैं आशा कर रहा हूं कि वे भी अब मंद हो रही हैं। आरोप-प्रत्यारोप लगाए गये, बहुत कुछ कहा-सुना गया। मैं यह अपेक्षा करता हूं कि अब थोड़े शांत और शालीन वातावरण में मान्यवर राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर एक रचनात्मक चर्चा हो। मैं यह चर्चा प्रारंभ कर रहा हूं।

राष्ट्रपति के अभिभाषण में सबसे बड़ा जोर इस बात पर दिया गया है, जो आज की आवश्यकता है, बदली हुई राजनीतिक परिस्थितयों की आवश्यकता है कि सहयोग, मेल-मिलाप और सहमति के द्वारा देश की समस्याओं का समाधान किया जायेगा। यहां चर्चा हुई और उस चर्चा में यह बात कहने, उठाने और साबित करने की कोशिश की गई कि जनमत, जनता का आदेश,

जनादेश किसके साथ है। सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के कारण भारतीय जनता पार्टी को जनता ने जनादेश दिया है, यह माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा। लेकिन उसके साथ एक बहुत बड़ी बात माननीय प्रधानमंत्री जी ने कही कि यदि दो-तिहाई बहुमत भी हो तो भी देश का शासन चलाने के लिए मेल-मिलाप, सहयोग और सहमति की राजनीति की आवश्यकता है।

श्री शान्ता कुमार जारी वोटों के प्रतिशत के आधार पर अलग-अलग दावे किये गये, अलग-अलग बातें की जा सकती हैं कि जनादेश किसके साथ है। लेकिन एक बात तो निश्चित है कि जनादेश सरकार चलाने के लिए है, जनादेश सरकार तोड़ने के लिए नहीं है। जनादेश हर छह महीने के बाद प्रधान मंत्री बदलने के लिए नहीं है। जनादेश हर १८ महीने के बाद फिर से चुनाव की भट्टी में देश को झोंकने के लिए नहीं है। जनादेश एक बात के लिए तो निश्चित है कि देश में एक सरकार हो, वह सरकार काम करे, गरीबी दूर हो, बेरोजगारी दूर हो और जनादेश उनके लिए तो बिल्कुल नहीं है, जिनकी सीटें घट गई हैं, जो घटकर आज संसद के अन्दर आये हैं। यह जनादेश सरकार चलाने के लिए है।

जैसा कि प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि इस अभिभाषण में जिस बात पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया कि जनादेश के पीछे सहमति की भावना है। आज देश राजनीति के संक्रमणकाल में से गुजर रहा है और उस संक्रमण काल में भारतीय जनता पार्टी को सबसे अधिक सीटें देने के बावजूद भी पूर्ण बहुमत नहीं मिला है, इसलिए बहुत से समविचार दल सरकार चलाने के लिए आगे बढ़े हैं। इस अभिभाषण में और माननीय प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण में सबसे अधिक जोर सहमति की ओर दिया है, मैं यह निवेदन करूंगा कि देश की ज्वलन्त और बुनियादी समस्याओं का समाधान करने के लिए आज समय की जरूरत है कि उस सहमति की राजनीति को आगे बढ़ाया जाये। उस सहमति की राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए, उस तरफ से भी और इस तरफ से भी, एक बुनियादी जरूरत है और वह जरूरत यह है कि हम देश के प्रति प्रतिबद्ध हैं। अपनी-अपनी पार्टी के प्रति भी हमारी वफादारी है, लेकिन सबसे बड़ी वफादारी इस देश के प्रति है और देश के प्रति अपनी वफादारी को निभाने के लिए इस सहमति की राजनीति को आगे बढ़ाने के लिए हम पूर्वाग्रह छोड़ें। आपके बारे में हमारे जो पुराने विचार हैं, यदि आवश्यकता हो तो उनमें सुधार करें। हमारे बारे में जो पूर्वाग्रह आपने बनाये हैं, उनमें आप सुधार करें, पुरानी धारणाओं को बदले बिना सहमति की राजनीति नहीं चलेगी और सहमति की राजनीति को चलाये बिना यह देश आगे नहीं बढ़ेगा। इस देश की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान नहीं होगा।

इसलिए एक बात, जिसके बारे में बहुत अधिक चर्चा हुई है, होती है और जिसके कारण हमारे खिलाफ बहुत कुछ कहा जाता है, हमारे खिलाफ मोर्चे बनते हैं, दल इकट्ठे होते हैं, साम्प्रदायिकता का नाम लिया जाता है, सैकुलरवाद का नाम लिया जाता है, इस अभिभाषण में इस सम्बन्ध में दो बातें मुख्य रूप से कही गई हैं। एक बात तो यह कही गई है कि सैकुलरवाद भारतीय परम्परा का अंतरंग अंग है, क्योंकि हम भारतीय परम्परा पर विश्वास करते हैं, क्योंकि हम भारतीय संस्कृति के आधार पर पुरानी नींव पर एक नया निर्माण करके चले हैं। इस अभिभाषण में यह कहा गया है कि सैकुलरवाद, इस देश की परम्परा का अंतरंग अंग है। दूसरी बात हमने कही है कि हम उसके प्रति प्रतिबद्ध हैं। मैं विपक्ष के मित्रों से कहूंगा कि हमपर विश्वास करें। हम खुले-आम इस बात को कह रहे हैं कि सैकुलरवाद हमारे देश की परम्परा का हिस्सा है और सैकुलरवाद पर हमारी पूरी आस्था है। हमने राष्ट्रपति महोदय के इस अभिभाषण में ये दो मुख्य बातें कही हैं। जब हम कहते हैं कि सैकुलरवाद हमारी परम्परा का अंतरंग अंग है तो उसका अर्थ यह है कि इस देश में पुराने समय में पूजा पद्धति के नाम पर झगड़े नहीं हुए। इस देश में जितनी पूजा पद्धतियां हैं, उतनी किसी देश में नहीं हैं। विचारों की आजादी, विचारों की स्वतंत्रता, जितनी इस देश में रही है, वह अपने आपमें एक बहुत बड़ी मिसाल है। पूजा करने के तरीके पर कभी इस देश में कोई झगड़ा नहीं हुआ। पिछली चर्चा में इस तरह से यह सवाल उठाया गया है।

आज देश की राजनीति में हम सब लोगों में से कोई सोच भी नहीं सकता कि कुछ वर्गों को छोड़कर राजनीति की जा सकती है।

मेरे मुसलमान भाई इस देश के हैं, मेरे ईसाई भाई इस देश के हैं, सभी धर्मों को मानने वाले इस देश के हैं, वे हमारे हैं और सभी धर्म हमारे हैं। सभी पूजा-पद्धतियां हमारी हैं। मस्जिद, गुरूद्वारे और चर्च हमारे हैं। हम इस प्रतिबद्धता को प्रकट कर रहे हैं। कोई गलतफहमी यदि आपस में है तो समय आ गया है उसको दूर किया जाए। एक-दूसरे को समझने की जरूरत है। देश के करोड़ों मुसलमान भाइयों को छोड़कर, देश के करोड़ों अन्य धर्मों को मानने वाले लोगों को छोड़कर कोई राजनीति नहीं कर सकता, कोई इसकी कल्पना नहीं कर सकता। यह भाग हमारे इतिहास में रहा है। इस देश में विचारों की स्वतंत्रता बहुत अधिक रही है।

अध्यक्ष महोदय, देश के इतिहास में दो घटनाएं घटी हैं। उनकी ओर मैं माननीय सदस्यों का ध्यान दिलाना चाहता हूं। हमारे भारत में महात्मा बुद्ध आए। उन्होंने वैदिक कर्मकांड के खिलाफ बगावत की। भगवान के बारे में मौन हो गए। एक प्रकार से उन्होंने वैदिक धर्म के खिलाफ बगावत की, लेकिन वे किसी की हिट लिस्ट में नहीं आए। वे ८० वर्ष जीए। इस देश के लोगों ने उनको अवतार कह दिया। वैसी ही एक घटना दुनिया में और घटी। प्रभु ईसा आए। उन्होंने भी यहूदी धर्म के खिलाफ बगावत की, लेकिन उनको सुना नहीं गया और सूली पर लटकाया गया। यह भारत है जहां विचारों की स्वतंत्रता की सीमाएं बहुत ऊंची हैं। पश्चिम के विद्वान मैक्समूलर १३ वर्ष ऋग्वेद का अध्ययन करते रहे और जब उन्होंने उपनिषदों का अध्ययन शुरू किया तो कहा था कि विश्व में सत्य की खोज करने में भारत के ऋषियों ने, मनीषियों ने जितनी ऊंची उड़ान लगाई है, कोई और लगाता तो फेफड़े फट गए होते। विचारों की स्वतंत्रता की सीमाएं भारत में नहीं हैं। यहां चार्वाक आए। उन्होंने कहा -खाओ-पीओ, मौज-मस्ती करो, कोई पुनर्लोक नहीं है। उनको भी सुना गया और वे भी किसी हिस्ट लिस्ट में नहीं रहे। उनके खिलाफ किसी प्रकार का विद्रोह नहीं हुआ। विचारों की स्वतंत्रता भारत की संस्कृति का अंतरंग हिस्सा है।

गीता में बहुत कुछ लिखा गया है। मुझे गीता का एक श्लोक सबसे ऊंचा लगता है। कुरूक्षेत्र के मैदान में अर्जुन पूछ रहा है -मुझे रास्ता बताएं। भगवान कृष्ण अर्जुन को सखा-दोस्त मानते हैं। १८ अध्याय कहने के बाद एक बात जो भगवान कृष्ण ने कही, मैं उसको गीता में सबसे ऊंची बात मानता हूं। उन्होंने कहाः

इति में ज्ञानमाख्यातम् गुद्ध-गुद्ध तरम् मया

विमृश्य एतत् अशेषेष यत् इच्छासि तत कुरु।

अर्जुन, तुझे सारे रास्ते बता दिए। यह कर्म का रास्ता है, यह भक्ति का रास्ता है, यह ज्ञान का रास्ता है, सारे रास्ते मैंने तुझे बता दिए, अब अशेषेण विमृश्य, अच्छी तरह से गहराई से सोच और तुझे जो ठीक लगता है, वह कर। विचारों की स्वतंत्रता, विचारों की आजादी जो भारत में नहीं तो वह कहीं भी नहीं है। मेरा निवेदन है कि शब्दों में न जाइए। एक शब्द का अर्थ आपके लिए कुछ हो सकता है और हमारे लिए कुछ हो सकता है। शब्दों के पीछे भावना क्या है, इस पर जाइए।

हम हिन्दुत्व की बात करते हैं, आप नाराज हो जाते हैं। आज से १०० साल पहले स्वामी विवेकानन्द ने खड़े होकर कहा था -

"I am the proudest Hindu ever born."

मुझे हिन्दू होने पर गर्व है और उन्हें किसी ने कम्युनल नहीं कहा था। सुप्रीम कोर्ट ने हिन्दुत्व की व्याख्या की है। लेकिन हम जो शब्द कहते हैं उसके पीछे हमारी भावना क्या है, हमारे मित्र उसको समझने की कोशिश करें। सेक्युलरवाद हमारी संस्कृति का अंतरंग अंग है और उस पर हमारी आस्था है। लेकिन राजनीति की ऐनक से जब देखा जाता है तो चीजें उल्टी-सीधी नजर आती हैं।

गुजरात में श्री शंकर सिंह वाघेला जब हमारे साथ थे तो कम्युनल थे। लेकिन जब हमसे अलग हो गए तो सेक्युलर हो गए। तभी एक अखबार में कार्टून आया था। वाघेला खड़े हैं और भारतीय जनता पार्टी की पीठ में छुरा घोंप रहे हैं, कांग्रेस के मित्र उनसे कह रहे हैं कि वाघेला जी जब आपने भाजपा की पीठ पर छुरा घोंपा, तब हमें पता चला कि आप साम्प्रदायिक वेश में १०० प्रतिशत सेक्युलर हैं।

12.00 hrs.

राजनीति की ऐनक से जब देखा तो चीजें अलग-अलग नजर आई। मैं अपने मित्रों से निवेदन करना चाहता हूं कि इस देश के सभी लोगों को साथ लेकर चले बिना कोई राजनीति नहीं चला सकता। सारे भारत को एक मानकर चले बिना देश आगे नहीं बढ़ सकता। आप हमारी भावनाओं की कद्र करें, आप हमें समझने की कोशिश करें। वोट और अविश्वास की राजनीति से हम ऊपर उठें, यही मेरा निवेदन है। इस अभिभाषण में भूख, भय और भ्रष्टाचार से देश को बाहर निकालने का संकल्प किया गया है। आज इस देश के अंदर भूख है।

मैं एक बात और स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जब पचास सालों के कामों की हम चर्चा करते हैं तो कोई यह नहीं कह सकता कि पचास सालों में देश ने विकास नहीं किया, कहना भी नहीं चाहिए। कुछ क्षेत्रों में देश ने बहुत विकास किया है, जैसे विज्ञान और टैक्नॉलोजी का क्षेत्र ऐसा है जहां बहुत विकास हुआ है और जहां विकास हुआ है, उसका श्रेय हमारे कांग्रेस के मित्रों को जाता है। यह श्रेय उनको देने में हम कुछ कंजूसी नहीं करेंगे। मैं हिमाचल से आया हूं। हिमाचल प्रदेश में जब कुछ मित्र जाते हैं, उनको लगता है कि यह पहाड़ी प्रदेश है, यहां बहुत अच्छी सड़कें हैं, सेब उत्पादन के क्षेत्र में बहुत काम हुआ है। मैं इस बात को हमेशा कहता हूं कि इसमें हिमाचल के सबसे पहले कांग्रेस के मुख्य मंत्री डा. परमार का कॉन्ट्रीब्यूशन है, हमें इस बात को कहने में संकोच नहीं करना चाहिए। हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि देश के बहुत से क्षेत्रों में विकास हुआ है, तरक्की हुई है, इसका श्रेय कांग्रेस को जाता है लेकिन उस ि वकास का श्रेय यदि कांग्रेस के मित्र लेना चाहते हैं और हम देना चाहते हैं तो जो कमियां रही हैं, उनकी जिम्मेदारी भी आपको लेनी होगी।

इस देश के दो दृश्य हैं- एक दृश्य यह है कि कई क्षेत्रों में देश ने बड़ी तरक्की की है, उसका श्रेय आपको है। हमें भी दुनिया के सामने खड़े होने में फक्र है कि कुछ क्षेत्रों में हमने बहुत तरक्की है। लेकिन भारत का एक और दृश्य भी है, वह यह है कि आज यहां लगभग बत्तीस-चौंतीस करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे हैं। उनको खाने के लिए दो वक्त की सूखी रोटी भी नहीं मिलती। 'स्टैटिस्टिकल आउटलाइन ऑफ इंडिया' के मुताबिक जो मानव विकास सूचकांक है, इसमें भारत १३५वें स्थान पर है। मुझे चिंता इस बात की है कि छोटा सा कोरिया, मलेशिया, चीन और यहां तक की श्रीलंका भी हमसे आगे हैं। १३४ देश मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से हमसे आगे चले गए और हम १३५वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

आज 'यूनिसेफ' की रिपोर्ट, जिसमें दुनिया के बच्चों की स्थिति का उल्लेख किया गया है, उसे पढ़कर हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। दुनिया में हर साल साठ लाख बच्चे मरते हैं क्योंकि उनके मां-बाप उनको पौष्टिक भोजन नहीं दे पाते। उन साठ लाख बच्चों में सबसे ज्यादा संख्या, चौबीस लाख बच्चे, भारत के हैं जिन्हें दूध तथा पौष्टिक भोजन नहीं मिल पाता है। इस देश में हर साल चौबीस लाख बच्चे मरते हैंयह बड़ा दर्दनाक दृश्य है।

मैं केवल एक राजनैतिक व्यक्ति नहीं हूं। मैं हिन्दी का छोटा सा एक लेखक भी हूं। जिस घर में दूध के बिना बच्चे मरते हैं, मैं वहां पहुंच जाता हूं, उस मां के पास पहुंच जाता हूं जिसका बच्चा दूध के बिना मर गया है। हमें आज़ादी मिले पचास साल हो गए हैं और हम आज़ादी की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं लेकिन इस देश में चौबीस लाख बच्चे इसलिए मर जाते हैं क्योंकि उनको पौष्टिक भोजन और दूध नहीं मिल पाता। दुनिया में सबसे ज्यादा गरीब, अनपढ़, बेरोजगार तथा बीमार आज भारतवर्ष में हैं।

कालाहांडी की चर्चा हमारे मित्र नवीन पटनायक जी कर रहे थे कि वहां भूख से तड़प-तड़प कर लोग मरते हैं। ऐसा भी सुनने में आया है कि एक बहन ने अपनी पन्द्रह साल की लड़की को पचास रुपए में बेच दिया। आरोप-प्रत्यारोप लगाना आसान है लेकिन हम उनके नुमाइंदे हैं जिनको दूध नहीं मिल रहा है और जो भुखमरी के कारण मर रहे हैंदेश का एक दृश्य यह भी है। अभी तेईस मार्च को शहीद भगत सिंह की याद में हमने बलिदान दिवस मनाया। मेरे मन में विचार आया कि आज अगर भगत सिंह जी भारत में आकर देश को देखें कि यहां कितनी परेशानी और भ्रष्टाचार व्याप्त है और कालाहांडी में उस जगह पर जाएं जहां उनके सामने एक वह मां है जिसने अपनी लड़की को पचास रुपए में बेच दिया।

शान्ता कुमार टारी उनसे पूछा - तुम कहां की हो? उसने कहा - मैं भारत की हूं। इस पर भगतसिंह माथा पीट कर बोले कि मैं गलत जगह आ गया हूं। यह वह भारत नहीं हो सकता, जिसके लिए हमने फांसी का फंदा चूमा था। यह तस्वीर देश की है। भूख से मुक्ति दिलाने का संकल्प इस नई सरकार ने किया है। भूख से मुक्ति दिलाने के लिए और संकल्प को पूर्ण करने के लिए सहमति की राजनीति का हाथ हमने आपकी तरफ बढ़ाया है। इसमें राजनीति नहीं हैं। इसमें देश के उन करोड़ो लोगों के प्रति अपने कर्तव्य की बात है।

महोदय, देश में आतंकवाद के कारण भय की जो स्थिति है, उससे राहत दिलाने की आवश्यकता है। उससे मुक्ति दिलाने की बात है। हमने देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करने की बात भी कही है।

... (व्यवधान)

मेरे उधर के मित्र, मैं देख रहा हूं, मुझे देख कर आप जरूर कुछ कहेंगे, मैं जानता था

... (व्यवधान)

आपने हिमाचल प्रदेश के बारे में बहुत कुछ कहा है और हमने बहुत कुछ सुना है, और सुनने के लिए तैयार हैं। लेकिन इस सवाल के बारे में जो दूसरा पक्ष है, वह भी आप सुनें। हिमाचल प्रदेश में पहले कांग्रेस की ६८ में से ६० सीटें थी। पूर्ण बहुमत था और जनादेश था, लेकिन अब के चुनाव में कांग्रेस को जनादेश नहीं मिला। ६० सीटस के मुकाबले कांग्रेस की ३१ सीटस रह गईं और हमारी २९ सीटस आईं। हमारे एक माननीय सदस्य का स्वर्गवास हो गया और हमारी २८ सीटस रह गईं। सुखराम जी ने चुनाव लड़ा और उनकी चार सीटस आईं। वहां सरकार कोई नहीं बना सकता था। हिमाचल की जनता ने कांग्रेस को सरकार बनाने का जनादेश नहीं दिया। हिमाचल की जनता ने गैर कांग्रेस सरकार बनाने का जनादेश दिया। ऐसी परिस्थिति के अन्दर - और यह सच्चाई है - सुखराम जी के साथ सरकार बनाने के लिए कांग्रेस के लोग कोशिश करते रहे । कांग्रेस के लोग दिल्ली आए थे और उनको अपने साथ लेना चाहते थे। यदि सुखराम जी कांग्रेस के साथ चले गए होते, तो कांग्रेस की सरकार बन गई होगी और इस पर हमारे मित्र कहते कि श्री सुखराम जी अपने घर वापिस आ गए हैं। उनके घर की वापिसी हो जाती। अब वहां सरकार किसी को तो बनानी थी और जनादेश सरकार बनाने के लिए दिया था।

... (व्यवधान)

कांग्रेस के लोग कोशिश कर रहे थे, लेकिन

सुखराम जी उनके साथ नहीं गए। भारतीय जनता पार्टी ने हिमाचल में जनादेश का पालन करने के लिए और जैसा जनता ने जनादेश दिया था, कांग्रेस की सरकार नहीं बल्कि गैर कांग्रेस की सरकार बननी चाहिए, उस जनादेश का पालन करने के लिए, हमें सरकार बनाने के लिए सहयोग करना पड़ा। आप लोग अगर इस बात से सहमत हैं, तो आइए कोई नई व्यवस्था करें और आचार संहिता बनायें कि इस प्रकार के लोगों से कोई हाथ नहीं मिलाएगा। मैं अपनी पार्टी की तरफ से विश्वास दिलाता हूं, आइए आचार संहिता बनायें और सभी उस पर दस्तखत करें कि किसी भी परिस्थिति में कोई भी व्यक्ति ऐसे व्यक्ति से हाथ नहीं मिलाएगा, लेकिन वह तो आप करने के लिए तैयार नहीं है। आपको मौका मिला होता, तो आप करते

... (व्यवधान)

कांग्रेस के जिन नेताओं पर आरोप लगें हैं, जो नेता चार्ज-शीटेड हैं, वे भी आपकी पार्टी में बैठे हैं। एक ऐसे बड़े नेता को आप कांग्रेस वर्किंग समिति का सदस्य बनाने के लिए चर्चा कर रहे हैं। हममें से किसी ने ऐसा किया है, तो कहिए और अगर हमारी कमी है, तो बताइए, लेकिन यह भी वह बताए, जो पाक हो, साफ हो, जिसने ऐसा पाप कभी न किया हो। चालीस सालों तक आप यह गलत काम करते रहे और गलत कामों से समझौता करते रहे, केवल सत्ता की राजनीति करते रहे। भ्रष्टाचार की कालिख से जिनके घर पूरे के पूरे कालेपन से पुते हुए हों, वे लोग हम पर वार करते हैं, तो यह बात उचित प्रतीत नहीं होती है।

महोदय, यह तो वही बात हुई कि जैसे महाभारत में कर्ण का रथ कीचड़ मे फंस गया

... (व्यवधान)

अर्जुन जब वार करने लगे, तो कर्ण ने कहा - अर्जुन, मेरा रथ कीचड़ में फंस गया है और धर्म युद्ध का वास्ता दिया तथा कहा कि यह धर्म युद्ध है।

श्री शांता कुमार जारी तुम अधर्म कर रहे हो। तब अर्जुन ने कहा था, कर्ण, तुम कौरव आज मुझे धर्म सिखा रहे हो। मेरे पुत्र अभिमन्यु का आपने किस तरीके से, अन्याय से वध किया था। लाख का घर बना कर, उसे जला कर अन्याय करने की कोशिश की थी। जुए का खेल रच कर पांडवों को हराने की कोशिश की थी। द्रोपदी का चीरहरण किया था, तब आपको धर्म की याद नहीं आई। आज आपको धर्म की याद आई है। हमें कहना हैं तो कहें, हम सुनने के लिए तैयार हैं, लेकिन वे कहें जिन्होंने ४० साल में कोई पाप न किया हो।

... (व्यवधान)

जिन्होंने पाप-दर-पाप किए हैं, ऐसे लोगों को कोई भी ऐसी बात कहने की आवश्यकता नहीं है। ... (व्यवधान)

श्री कान्तिलाल भूरिया (झाबुआ) : महोदय, भारतीय जनता पार्टी की कथनी और करनी में कितना अंतर है।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Hon'ble Member, please take your seat.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon'ble Member, please take your seat.

(Interruptions)*

MR. SPEAKER: It will not go on record. Please take your seat.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon'ble Member, please take your seat. This is not good.

---

* Not recorded

श्री शांता कुमार : माननीय अध्यक्ष महोदय, उधर बैठे मित्रों से मेरा निवेदन है, मैं पहली बार बोल रहा हूं। मैं हिमाचल प्रदेश से आता हूं और वहां की विधानसभा में रहा हूं, जहां पर इस किस्म की टोका-टाकी बिल्कुल नहीं होती।

... (व्यवधान)

श्री कान्तिलाल भूरिया : भारतीय जनता पार्टी का चरित्र उजागर हो गया। आज इनकी कथनी और करनी में कितना अंतर है।

(Interruptions)*

MR. SPEAKER: This will not go on record. Shri Shanta Kumar, please address the Chair.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Hon'ble Member, this is not good. Please take your seat. There will be an opportunity for you to speak.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: You will have a chance to rebut it. Please hear me. You will have a chance to rebut it. What is this? Please take your seat. Please sit down.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Now, sit down first.

(Interruptions) *

MR. SPEAKER: This will not go on record. There will be an opportunity for you to rebut it. What is this? Shri Shanta Kumar, please address the Chair now.

... (व्यवधान)

ृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी) : अध्यक्ष जी, मेरा एक निवेदन है कि पिछले तीन-चार दिनों में हमारे सदन में जो चर्चा हो रही है उस पर कुल मिला कर बाहर की टिप्पणी अच्छी नहीं है। मैं किसी एक पक्ष या दूसरे पक्ष की बात नहीं कर रहा हूं। सारे सदन से आपके माध्यम से अनुरोध करता हूं कि जो एस्टेब्लिश्ड प्रेक्टिस है कि अगर किसी माननीय सदस्य को कोई प्वाइंट ऑफ आर्डर उठाना है तो उसका एक तरीका है। उसका संबंध किसी रूल से होना चाहिए। किसी भाषण के बीच में कोई बात कहनी हो, वह यील्ड करता हो तो उससे रिकवेस्ट करे कि आप यील्ड करें, मुझे कोई बात कहनी है। यील्ड करने पर वह बात कही जा सकती है। इन दो प्रक्रियाओं के माध्यम से अगर हम सदन की कार्यवाही चलाएंगे तो सुविधा होगी, अन्यथा कम से कम इन तीन-चार दिनों में कुल मिला कर इस सदन की छवि अच्छी नहीं गई है, यही मेरा अनुरोध है।

... (व्यवधान)

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : आपका पक्ष इससे सहमत है तो हम बिल्कुल सहमत हैं। ... (व्यवधान)

---

* Noyt recorded

MR. SPEAKER: What he has said is meant for the entire House.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: This is not good. Shri Jogi, please take your seat. What is this?

... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हमारे पक्ष की जिम्मेदारी ज्यादा है, मैं मानता हूं।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Shanta Kumar, please address the Chair.

श्री शांता कुमार : अध्यक्ष महोदय, इस अभिभाषण में बुनियादी समस्याओं के संबंध में भय, भूख और भ्रष्टाचार से देश को मुक्त कराने का संकल्प हमारी सरकार ने किया है। जहां तक बुनियादी समस्याओं का संबंध है, बहुत सी बातें कही गई हैं। मैं एक बात का विशेष उल्लेख करूंगा, जिसकी चर्चा कल भी हुई कि पीने का पानी देने की समस्या को प्राथमिकता दी जाएगी।

श्जो हमारा नेशनल एजेंडा है, उसमें उसके लिए पांच वर्ष की अवधि तय की गयी है। यह सचमुच बड़े दुख की बात है कि आदमी को जिंदा रहने के जिस शुद्ध हवा और पानी की जरुरत है वह अभी तक मुहैया नहीं करायी जा सकी है। खैर, हवा तो भगवान देता है लेकिन शुद्ध पानी भी हम आजादी के ५० वर्षों बाद देश की जनता को नहीं दे सके यह अत्यन्त दुख की बात है। शुद्ध पानी न मिलने के कारण बीमारियां बढ़ती हैं और लोगों की परेशानियां बढ़ती हैं। कल यहां शंका प्रकट की गयी कि पांच सालों में सभी गांवों को पीने का पानी कैसे दिया जा सकता है? मैं समझता हूं कि अगर हममें इच्छा-शक्ति होगी और सबका सहयोग होगा, तो इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

हिमाचल प्रदेश में, हमारी सरकार १९७७ में बनी थी। मुख्यमंत्री के रूप में वहां मुझे काम करने का मौका मिला था। महोदय, हिमाचल प्रदेश में जहां सबसे अथिक नदियों में पानी बहता है, वहां पीने के पानी की समस्या थी। वहां पर आठ-आठ किलोमीटर की दूरी से पानी लाना पड़ता था। कुछ गांव ऐसे हैं जो ऊपर बसे हुए हैं और वहां चार किलोमीटर नीचे जाकर पानी लाना पड़ता था। इस काम में घर का एक सदस्य हमेशा लगा रहता था। वह सदस्य घर से रोटी बांधकर ले जाता था और पीने के पानी के काम में लगा रहता था। जब हमारी सरकार वहां आई, तो उसने इस दिशा में काम किया। जो काम तीस साल में वहां नहीं किया जा सका था वह काम हमने ढाई साल में कर दिखाया। हजारों लोगों को हमने पीने का पानी उपलब्ध कराया। मैं समझता हूं कि अगर इच्छाशक्ति होगी तो यह काम जरूर पूरा होगा।

बुनियादी बातों के साथ-साथ हमारी सरकार ने इस अभिभाषण में यह बात भी कही है कि पांच साल के अंदर हम हर गांव और कस्बे को पीने का पानी उपलब्ध कराएंगे। हिमाचल प्रदेश में जब हमने हर गांव में पीने का पानी दिया तो उसके बाद एक सर्वे करवाया कि वहां पर स्वास्थ्य की क्या स्थिति है? वहां रिपोर्ट आई कि जिन-जिन गांवों में शुद्ध पीने का पानी मिल गया था वहां पेट की बीमारियां ८० प्रतिशत कम हो गयी थीं। इसलिए इस समस्या को प्राथमिकता देने की बात हमारी सरकार ने कही है।

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने कहा कि हमें आजाद हुए पचास साल हो गये हैं और आजादी की स्वर्ण-जयंती हम मना रहे हैं, कमियों और उपलब्धियों की चर्चा हम कर रहे हैं। हमारी जो राजनैतिक व्यवस्था इन पचास सालों में रही है उस व्यवस्था पर आज प्रश्नचिन्ह खड़े हो गये हैं। जो भी लोग आज राजनीति में हैं उनके लिए आज एक चुनौती है, पूरी राजनीतिक व्यवस्था पर आज एक प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है क्योंकि आज राजनैताओं का वह सम्मान नहीं रह गया है जो ५० साल पहले था। पहले इस देश में एक नेता कहता था कि 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा', तो देश के पूरे नौजवान उसके लिए खड़े हो जाते थे, लेकिन आज नेता शब्द ही एक गाली बन गया है। लोगों का राजनीतिक व्यवस्था से आज विश्वास उठ गया है और आस्थाएं टूट रही हैं।

... (व्यवधान)

पिछले आठ सालों में कितने चुनाव हुए और उन पर कितना खर्च हुआ? आज जरुरत इस बात की है कि पूरी की पूरी राजनैतिक व्यवस्था पर फिर से विचार किया जाए। इसलिए हमने संविधान की समीक्षा की बात कही है। उसका अर्थ संविधान को बदलने का नहीं है, संविधान की भावनाओं के खिलाफ जाने का नहीं है, अर्थ केवल इतना ही है कि हमारा ५० वर्षों का जो अनुभव है, उसके आधार पर कुछ नया सोचा जाए, कुछ परिवर्तन किया जाए। बार-बार के चुनाव, अस्थिरता, दल-बदल, भ्रष्टाचार - इन सारी समस्याओं पर फिर से विचार करने की जरुरत आज पैदा हुई है।

कल यहां पर शक किया गया कि संविधान की समीक्षा का विचार लोकतंत्र के लिए खतरनाक है, उससे लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। संविधान की समीक्षा लोकतंत्र के लिए खतरा नहीं है, खतरा तो वैसे ही पैदा हो गया है - राजनैतिक व्यवस्था जिस ढंग से आज टूट रही है, लोगों का विश्वास इस व्यवस्था से जैसे हिल रहा है, उसको बहाल करने के लिए यह जरूरी है कि संविधान की समीक्षा की जाए।

श्केवल प्रमुख विद्वान ही नहीं, आज गांव का व्यक्ति भी कहता है कि बार-बार चुनाव के लिए मत आओ, दिल्ली जाकर काम करो। वे हम से पूछते हैं कि हर छः महीने

में क्यों चुनाव हो रहे हैं? आम आदमी अनुभव कर रहा है कि इस व्यवस्था में परिवर्तन करने की जरूरत है। इस अभिभाभण में कहा गया है कि एक आयोग बनाया जाएगा और वह जो सिफारिशें करेगा, उनको लेकर हम यहां आएंगे। संविधान में टू-थर्ड मैजोरिटी के बिना किसी किस्म का संशोधन नहीं हो सकता। संविधान में ८० संशोधन किए जा सकते हैं। आज की आवश्यकता के मुताबिक यदि कुछ और संशोधन आवश्यक हों तो वे संशोधन करने की बात इस अभिभाषण में कही गई है।

अध्यक्ष महोदय, सरकारिया आयोग की सिफारिशों पर कार्यवाही करने की बात एक बड़ी महत्वपूर्ण है। वह इसलिए भी है क्योंकि मैं समझता हूं कि केन्द्र सरकार राज्यों के साथ न्याय नहीं कर सकी है। मुझे दो बार हिमाचल प्रदेश का मुख्यमंत्री रहने का मौका मिला है। मैंने आज तक प्रदेश की राजनीति की है। प्रदेश में रहने वाले यह अनुभव करते हैं कि

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER : Please conclude. Many hon. Members are there to speak.

... (Interruptions)

SHRI SHANTA KUMAR : I am the Mover of the Motion. So, I must be given time.

MR. SPEAKER : You have taken the maximum time - more than half-an-hour. There are also other hon. Members to speak. Please conclude.

SHRI SHANTA KUMAR : I will take ten more minutes.

अध्यक्ष महोदय, मुझे बताया गया था कि मैं प्रस्ताव रख रहा हूं तो मुझे बोलने का ज्यादा समय मिलेगा। मैं दस मिनट में अपनी बात समाप्त करने की कोशिश करूंगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि केन्द्र से राज्यों को न्याय नहीं मिलता। विकास करने की मुख्य जिम्मेदारी राज्यों की है लेकिन वित्तीय अधिकार केन्द्र में सीमित हो गए हैं। सरकारिया कमीशन की रिपोर्ट आए वर्षों हो गए हैं। उस पर पूरी तरह से अमल नहीं किया गया। जरूरत इस बात की है कि राज्यों को अधिक वित्तीय अधिकार दिए जाएं। मैं अपने वित्त मंत्री जी को बधाई देता हूं जिन्होंने वी.डी.आई.एस. स्कीम के अन्तर्गत लगभग तीन-साढ़े तीन हजार करोड़ रुपए के अलावा एक हजार करोड़ रुपए और दिए। उन्होंने कुल करों का २९ परसैंट राज्यों को देने के लिए कानून बनाने का आश्वासन दिया है। यह काम बहुत आवश्यक है क्योंकि राज्य अपने विकास की सारी स्कीमों को तभी अच्छी तरह से चला सकते हैं। राज्यों को वित्तीय अधिकारों के साथ-साथ स्वायत्तता देने की भी जरूरत है। मैं जब मुख्यमंत्री था, हमारी हमेशा यह शिकायत रहती थी कि वर्षों तक मामले लटकते रहते हैं। अपने प्रदेश में कोई बड़ा उद्योग शुरु करने के लिए परमिशन और कई मंत्रालयों की स्वीकृति लेनी पड़ती है। इसकी वजह से वर्षों तक मामले लटकते रहते हैं। उसमें कुछ सुधार हुआ है लेकिन पूरा सुधार नहीं हुआ। उदारीकरण की जरूरत केवल इकोनमिक क्षेत्र में ही नहीं है, उसकी जरूरत यहां भी है। प्रदेशों को अपने यहां प्रोजैक्ट और उद्योग लगाने की स्वायत्तता हो, स्वतंत्रता हो। उसमें बिना कारण केन्द्र की ओर से अड़चन न डाली जाए। स्वीकृति देने की लालफीताशाही से उन प्रोजैक्टस को न लांघा जाए। यह बहुत जरूरी है। इस दृष्टि से मैं समझता हूं कि हमने इस अभिभाषण में बड़ी महत्वपूर्ण बात की है।

मैं एक और निवेदन करना चाहता हूं। हिमालय के आंचल में कुछ छोटे-छोटे राज्य बसे हैं - जैसे हिमाचल है, मेघालय है, अरुणाचल प्रदेश है. नॉर्थ ईस्ट के दूसरे प्रदेश हैं। ये छोटे-छोटे प्र ादेश हैं। उनकी समस्याएं अलग-अलग हैं। हिमाचल प्रदेश में जब बर्फ पड़ती है तो पूरे का पूरा मेरा जिला लाहौल स्पीति जो कि चीन के साथ लगता है, वह बंद हो जाता है। वहां सड़क बनाने का खर्च ज्यादा आता है, रख-रखाव का खर्च ज्यादा आता है। उनकी समस्याओं पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

अध्यक्ष महोदय, आज गंगा को साफ करने की परियोजना चली है, यह एक अच्छी योजना है। गंगा हिमालय से निकलती है। पर्यावरण का बहुत बड़ा खतरा हिमालय के लिए पैदा हो गया है। हिमालय की रक्षा देश के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण बात है। इसलिए मैं मुख्यमंत्री के तौर पर बार-बार कहता रहा कि इस देश को एक राष्ट्रीय हिमालय नीति बनानी चाहिए। हिमालय की रक्षा करना भारत की रक्षा के लिए जरूरी है। हिमालय की रक्षा हिमालय के आंचल में बसे छोटे-छोटे प्रदेश नहीं कर सकते। इसके लिए भारत सरकार को विशेष सहायता देनी चाहिए ताकि हिमालय जो भारत का प्रहरी है, भारत के जीवन का आधार है, उसकी रक्षा हो सके। इसके लिए छोटे-छोटे राज्यों की, जो सीमा पर बसे हैं, मदद की जानी चाहिए।

राष्ट्रपति के अभिभाषण में राज्यपाल की भूमिका के बारे में कुछ बातें कही गई हैं। मैं समझता हूं कि यह बहुत आवश्यक है। राज्यपाल के पद की गरिमा को बहाल किया जाए और राजभ वन का उपयोग किसी प्रकार की राजनीति के लिए न किया जाए।

मैं इस बारे में एक ही बात कहना चाहता हूं कि हिमाचल प्रदेश में १९९२ में हमारी सरकार थी। अयोध्या में एक घटना घटी। हिमाचल प्रदेश में कुछ नहीं हुआ। एक मच्छर भी नहीं मरा। पूर्ण शांति रही लेकिन हिमाचल की सरकार को भंग किया गया। इतना ही नहीं, हिमाचल प्रदेश से हमारी पार्टी के एक विधायक अयोध्या गए थे। वापस आकर उन्होंने कहा कि मस्जिद तोड़ने में मैंने हिस्सा लिया है। दूसरे दिन हमारी सरकार ने अपने ही विधायक को गिरफ्तार किया। इसके बाद भी हमारी सरकार को भंग किया गया और उस समय जिन राज्यपाल महोदय ने हमारी सरकार को भंग किया था, आज वही श्री वीरेन्द्र वर्मा जी इस लोक सभा के सदस्य हैं और मैं कहना चाहता हूं कि विधान सभा को भंग करने के दो दिन पहले जब पत्रकारों ने पूछा था तो उस समय के राज्यपाल महोदय ने कहा था कि हिमाचल की सरकार संविधान के मुताबिक चल रही है। लॉ एंड ऑर्डर की कोई समस्या नहीं है लेकिन दो दिन के बाद पता नहीं किस दबाव में, किस तरीके से उनसे रिपोर्ट ली गई और हिमाचल की सरकार को भंग किया गया। इस पद का दुरुपयोग इस प्रकार नहीं होना चाहिए और शायद इसीलिए कुछ दिनों के बाद उस वेदना के कारण, उस परिस्थिति के कारण उन्होंने राज्यपाल के पद से त्यागपत्र दे दिया था।

अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में एक ही बात कहना चाहता हूं। इस अभिभाषण में बहुत सी बातें कही गई हैं लेकिन मुख्य बात यह है कि आज देश के सामने पचास सालों के बाद जो गरीबी की समस्या है जो बेरोज़गारी की समस्या है, जो पिछड़ेपन की समस्या है, जो गांवों में लोगों को बुनियादी अधिकार नहीं मिल रहे हैं, ये समस्याएं हैं। उन समस्याओं के प्रति हम सबकी मिली-जुली प्रतिबद्धता है। क्या यह पांच साल हम उन गरीबों के लिए समर्पित नहीं कर सकते। इसलिए राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में बुनियादी समस्याओं के साथ साथ आम सहमति की बात कही है। मुझे विश्वास है कि राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में हमारी सरकार ने जो अपना मंतव्य प्रकट किया है कि एक नया अध्याय देश की राजनीति में शुरू हो, देश की बुनियादी समस्याओं के बारे में हम पार्टियों की दीवारों से ऊपर उठकर काम करने की कोशिश करें। देश का गरीब हमसे यह अपेक्षा कर रहा है। चर्चा हो रही है कि ऐटम बम बनाया जाए या न बनाया जाए। लेकिन देश के अंदर ३४ करोड़ लोग गरीब है, कालाहांडी के अंदर बच्चों को बेचने वाले माता-पिता, बेरोज़गारी की आग में झुलसती हुई जवानी, यह भी एक ऐटम बम है जो हमारे घर में रखा गया है। वह ऐटम बम बने या न बने यह सवाल तो अलग है लेकिन इसका क्या होगा इस पर सबको मिलकर विचार करना होगा। देश का गरीब अब ज्यादा दिन इंतज़ार नहीं करेगा। नेताओं के भाषणों का बेरोज़गार ज्यादा इंतज़ार नहीं करेगा इसलिए माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा इस इस अभिभाषण में जो सहमति की राजनीति का हाथ विपक्ष की ओर बढ़ाया गया है, मैं आशा करंगा कि उसमें आपकी तरफ से रचनात्मक योगदान होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से सदन पारित करे, इस निवेदन के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हं।

">SHRI VAIKO (SIVAKASI): Mr. Speaker, Sir, the fact that I have been called to second this Motion of Thanks to the hon. President of India moved by my esteemed colleague Shri Shanta Kumar, makes this opportunity a memorable one in my public career.

The hon. President gave the message of confidence, a message for the prosperous future to the people of India when he addressed a Joint Session of both Houses of Parliament which significantly clarifies the agenda of Shri Atal Bihari Vajpayee, the policies and decisions of this Government, the decisions which will be proved creditable and successful with authenticity and unassailability.

Sir, I was listening with attention to the speech made by the Mover of this Motion of Thanks, Shri Shanta Kumar. We have to take stock of what we have come across over the passage of the five decades since 1947. The late lamented Pandit Jawaharlal Nehru, the Jewel of India, hoisted the Tricolour with Ashok Chakra at the midnight of 14-15 August 1947, when the whole world was sleeping. I recall his words that `we have made a tryst with destiny.'

Sir, Pandit Nehru was a visionary and a legend of our times. Of course, when we take into account the stock of what we have got over half a century, we find that we have met with both success and failure. We have got so many achievements. But we have faced crises and challenges also. Pandit Nehru was also conscious of the fact that we have met disappointments and failures. With that consciousness in mind, he had look at the poem which he cherished all his life, the poem of Robert Frost. It says and I quote:

"The woods are lovely, dark and deep

But I have promises to keep,

And miles to go before I sleep

And miles to go before I sleep."

Sir, after five decades of Independence; after we have spent crore and crores of rupees, after we implemented Five Year Plans and Annual Plans, I shudder to hear, I shudder to read that people die of hunger, people die of disease as they do not get proper medical care. Some mothers have to sell their babies for a square meal which they do not find. Sir, people have to lie on the platforms and pavements without a roof over their heads. Of course, we have taken commendable strides in industrial development, in strengthening our Armed Forces. Of course, gone are the days of looking for PL 480 and resorting to imports of foodgrains. Today, we are proud to say that we have got self-sufficiency. At times, we are able to export our grains. For this, the whole credit goes to the farmers and nobody else. But I am pained to say that the miserable lot of our farmer, the agriculturist who has brought the credit of self-sufficiency of food grains to this country, has not changed. He is not able to liberate himself from the shackles of death; from the shackles of poverty; and he is not able to take care of his children. His misery continues.

Sir, in this Presidential Address, this matter has been taken into consideration. Therefore, this goes to say that agriculture has suffered on account of decline in investment. The Government will halt this decline and earmark up to 60 per cent of the Plan funds for these crucial segments of our economy. The more important point is that subsidies will continue but they will be better targeted.

The Government is committed to re-establish our farmers as a strong and self-confident community enjoying the fruits of prosperity. The farmers are braving scorpions and snakes even at the dead of night when they go to their fields to irrigate the land. They are suffering day and night. If their misery is not erased and if they are not assured of a better living, just imagine, if they come to a decision to strike work, if they lay their hands off in despair, there will be no cultivation. If they abandon cultivation what will happen? Therefore, this Government would honour the farmers and agriculturists for their contribution to this country. We are going to take steps in this regard.

The election results for the Twelfth Lok Sabha have established one factor that the regional aspirations have come to play a dominant role in formulating the policies and programmes of this country. So, according to the changes, we have to face this regionalism. Regional aspirations should not be viewed as parochialism. This Government, with deep consideration and thinking, has come forward to attend the demands of the States for higher allocation of resources. At the same time, we have to face the twin challenges today; one is the alarming population growth and the other is the very serious problem of unemployment, both educated and uneducated. Otherwise the mind of the youth may wander in despair and frustration at times to extremism.

12.38 hrs (Shri P.M. Sayeed in the Chair)

We recognised adult franchise. In recent years a very genuine demand for reserving 33 per cent of seats for women in the Parliament and State Legislatures has been raised. This Government has made a commitment that the pending legislation will be taken up immediately. I would like to appeal to the hon. Members of this House cutting across party lines to come forward and support the legislation which the whole country is looking forward to.

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): In the same form.

SHRI VAIKO : Yes, it can be as has been promised to honour the aspirations of all sections of the society. Our hon. Prime Minister has already stated that when a decision like this is taken, all parties will be taken into confidence.

One important factor which has come to the political arena in recent years is the slogan of social justice. The first amendment to the Constitution guaranteed reservation for the backward class people in employment opportunities. But there are many States where there is a problem in this regard.

But we have to accept and agree on one point. In order to bring social justice, the reservation for the backward classes, the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes and also the minorities should be protected and guaranteed. I am proud to say that I belong to a State where the social justice concept was pioneered. The credit goes to our `Thanthai Periyar', the great revolutionary of social justice and rationalism and our late lamented great leader, the noble son of Tamil mother, the legend of Tamil masses for centuries, Arignar Anna and the great leader of not only the Congress Party, but the whole India Perunthalaivar Kamaraj. During 1950-51, due to the agitation of our movement and the persuasion of Shri Kamaraj, Pandit Jawaharlal Nehru accepted the demand and the First Amendment was enacted.

Today, we have given a commitment in this Address that the Government will take all appropriate measures to uphold the existing percentage of reservation in educational institutions at the State level. This has become a problem. In 1994, the then Government of Tamil Nadu under the able stewardship of Dr. Jayalalitha unanimously passed an enactment, a legislation in the Legislature of Tamil Nadu. The Constitution Amendment to put it in the Ninth Schedule of the Constitution was passed by Parliament. But today, the need is that there should be a Constitution Amendment not only to guarantee but also to empower the States to decide the percentage of reservation according to the discretion of the State Legislatures because impediments and bottlenecks have been put in the implementation of the 69 per cent reservation. I expect and request for support in this regard from the hon. Members of the many political parties who have supported the legislation to put it in the Ninth Schedule of the Constitution. When such an appropriate legislation is brought before Parliament, I request hon. Members to support that legislation also.

A national water policy which will provide for effective and prompt settlement of disputes and a time-bound implementation of the award has been proposed. Hon. Shri P.A. Sangma has raised certain doubts about this promise. But we have to evolve a national water policy keeping in mind the concept which has been enshrined in the international law by international forums regarding rivers even crossing the boundaries of countries.

Today, I have a feeling of pride, jubilation and happiness. The words of Arignar Anna, which I have always cherished in my heart come to my memory. In the year 1963, when many hon. Members of the Lok Sabha were sitting in the gallery of the Rajya Sabha, Anna made a statement on the floor of Rajya Sabha. I remember his words and I quote:

"I can never forget that I have got a hoary language called `Tamil'. I will be never satisfied and I cannot be contained till that language in which my forefathers spoke, in which my poets have given sermons and scriptures, in which we have got classics and literature of inexhaustible knowledge will find a due place as one of the official languages of the Union of India.

Sir, all these years no step was taken in this regard. Now, there is a beginning. Let us look at this. We have taken a step. We have stated,

"The Government will set up a Committee to study the feasibility of treating all the 18 languages included in the Schedule VIII of the Constitution as official languages."

While speaking on the Confidence Motion, Shri Chandrashekhar, expressed some fears and some apprehensions about this promise. I should not be misconstrued by any quarter in this House because I am putting forth my point of view without any fear or prejudice. There is a couplet or Kural in Tamil under the heading Arivudaimai in Chapter 43 which says,

"Epporul yaryarvai ketpinum apporul

meyporul kanba dharivu".

This means, `To grasp the truth from everywhere and everybody, that is wisdom fair'. This country is a great country with a very large landscape. We are competing with China in population growth. This great country should remain united always. On behalf of my party, the Marumalarchi Dravida Munnetra Kazhagam, I would like to say that we are committed to the unity and integrity of India. There should not be any doubt, not even an iota of doubt about this. But we cannot forget the past.

The Mauryas were there, the Guptas were there and the Moghuls were there. Then the British came. Till then this long landscape right from the lofty peaks of the Himalayas to the sacred shores of Kanyakumari, this was not one country. Of course, we can point out many ills of the British Raj, but the one great contribution of that Raj is the unity of India. Since our country is multi-religious, multi-lingual and multi-ethnic, all the languages should be given equal treatment, equal opportunities and equal status in order to strengthen the concept of unity and integrity of India. The sense of equality should be injected in the minds of the people throughout the country.

Sir, religion cannot unite. There are many nation states in Europe. But Christianity could not unite them. India has got many religions and sects. You may ask: Is it practical? But we have to analyse and visualise the dangers and challenges that we have to face if the hegemony of one language is imposed on others.

Sir, what happened in th Soviet Union? They had made tremendous progress in several fields. They were a mighty power, competing or at times even surpassing the United States. But what happened to the Soviet Union? What had happened in Yugoslavia? It will never happen and it should never happen in India.

So, what happened in Yugoslavia should not be repeated here and it will not be repeated here. What happened in the Soviet Union will not be repeated here and should not be repeated here. Therefore, it is a good beginning commenced by the Atal Bihari Vajpayee Government. Pandit Nehru gave that option to the people speaking other than Hindi. That is why, we are not clamouring for English; that also should continue; till that time all the languages enjoy equal rights. For this, I have to commend, I have to applaud this commendable step taken by the Vajpayee Government.

Our friends not only here but throughout the country should not have any misconception as if we are going to totally scrap and bring a new Constitution. Not at all. This Constitution has been amended more or less 80 times. In the Constituent Assembly debates, in its closing stages, Dr. Baba Saheb Ambedkar, in his wisdom, clarified this point. I quote his speech given on the 25th November, 1949 in the Constituent Assembly.

"The Assembly has not only refrained from putting a seal of finality and infallibility upon this Constitution by denying to the people the right to amend the Constitution as in Canada or by making the amendment of the Constitution subject to the fulfilment of extraordinary terms and conditions as in America or Australia, but has provided a most facile procedure for amending the Constitution."

Not only that. He visualised the forthcoming scenario and challenges. Therefore, again on this pertinent point of amending the Constitution, without giving a rigid finality, he stated:

"Jefferson, the great American statesman who played so great a part in the making of the American Constitution, has expressed some very weighty views which the makers of Constitution, can never afford to ignore. In one place, he has said:-

"We may consider each generation as a distinct nation, with a right, by the will of the majority, to bind themselves, but none to bind the succeeding generation, more than the inhabitants of another country."

I repeat the sentence, "We may consider each generation as a distinct nation". So, we cannot bind the succeeding generation. The next generation may view it differently. Therefore, flexibility should be there. Avenues for amending the Constitution should be there. That is why, the procedure for amending the Constitution was made more facile than as in Australia or Canada or America.

With this background, if you nave an unbiased look to meet the challenges of the time, the Constitution may be reviewed without changing the fundamental structure. The basic structure was stated in clear terms in the Supreme Court judgement.

The President's Address also pays attention to an important new dimension of this last decade of the 20th century.

"Every citizen has the right to feel secured and be free from fear."

Rabindranath Tagore in his verse stated:

"Where the mind is held high,

Where the head is held high,

Where that mind is free from fear,

In the heaven of freedom,

Let my country awake."

So, we should be free from hunger; we should be free from ignorance; we should be free from fear.

To liberate ourselves from the psyche of fear and apprehension and to strengthen security, we have to be more vigilant while exercising control over the Government machinery. The country heaved a sigh of relief and felt a sense of happiness when the aeroplane reached very late at Coimbatore. Shri Lal Krishna Advani, President of the Bharatiya Janata Party, in his own words said, "Thanks to the Almighty, I was saved." By the blessing of the Goddess of Nature, he was saved that fateful day due to delayed arrival of the aeroplane. More than 60 people were killed. And more than a hundred people were wounded. The figure included the Hindu as well as the Muslim boys who were working from dawn to dusk just to get Rs. 4 or Rs. 5 to earn their livelihood. They were also killed. In Coimbatore, I went to all the hospitals console every youth, every adult male or female person belonging to

both the Muslim and the Hindu communities. When they were crying with bleeding injuries, I went to them. I shared their tears. I shared their grief. Side by side a Hindu boy, a Muslim boy was also lying injured. They came from poor families. They were returning home. And when they reached near the meeting place, the bomb blast took place. The blood was flowing in the streets of Coimbatore.

Imagine what would have happened had something happened to Shri Advani. Even I could not imagine what they would have been had something happened to him. Hundreds of `Naokhalis' would have been repeated. A River of blood would have been flowing and people would have been killed enmass. Instead of nurturing brotherhood, the people would have taken up arms against each other. I feel very sorry to point out that the State Government, which should have been responsible in Tamil Nadu, failed in its duty.

(Interruptions) It should not go on record.

MR. CHAIRMAN : Shri Baalu, this is not the way to rebut. You can do so when you get your chance.

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I am on my legs.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, how many more minutes will you take?

SHRI VAICO : I will take only ten minutes more. ... (Interruptions) I will speak after lunch.

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, if there is anything that you want to rebut, you can do so when you get a chance to speak.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Let me complete. If there is anything objectionable, then, of course, you raise it according to the Rules. If it is a point of order, you can raise it. If it is objectionable, of course, you can bring it to the notice of the Chair.

But he has only accused the Government. If you want, you can give details when you speak and say that it is not like that.

Please, that is not the way. You are a senior Member. You please cooperate with the Chair, otherwise it would be difficult to conduct the business of the House.

13.00 hours

The Lok Sabha then adjourned for Lunch till Fourteen of the Clock.

14.05 hours

The Lok Sabha re-assembled after Lunch at Five minutes

past Fourteen of the Clock.

(Shri Basudev Acharia in the Chair)

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS - Contd.

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko may continue his speech.

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Mr. Chairman, in the month of December, 1997, three bomb blasts took place in the passenger trains in Tamil Nadu in which many people were killed. In those most unfortunate and grievous incidents a young boy who had gone to Chennai to appear for IAS examination was killed. The poor parents of that boy who were dreaming that their son would become an IAS officer or a Collector one day, had to receive the shattered dead body of their dear son.

Sir, following the serious bomb blast that took place in Salimangalam in which four persons were killed, intelligence reports uncovered a diabolical plot to attack and kill top leaders of BJP, particularly, Shri Advani and Shri Vajpayee. In the headlines we saw the name of Tamil Nadu. The leaders of Bharatiya Janata Party lodged a complaint, gave a representation to the Government to take serious action against the people involved in it and to prevent such occurrences.

On that fateful day, when more than sixty people were killed in the bomb blasts in Coimbatore, 25 bomb blasts took place, particularly, on the

route from the airport to the meeting place one after another. There was a bomb blast in the Government hospital in which several people were killed including a lady nurse. The sinister plan and plot was to attack and kill Shri Advani at the hospital, had he been rushed there following a possible escape from the attack on the dais. Such a grievous tragedy took place.

Sir, I am pained to say that the Chief Minister of Tamil Nadu, hon. Dr. Karunanidhi made rash and irresponsible statements that the people of Tamil Nadu should chase away the sadhus and sanyasis of BJP who were coming from the North. ...(Interruptions)

SHRI VAIKO : This was the statement made by Dr. Karunanidhi. ...(Interruptions)

SHRI S.S. PALANIMANICKAM (THANJAVUR): This is a totally baseless allegation.

MR. CHAIRMAN: Please take your seats.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, you will get your chance to speak. Please take your seat.

SHRI VAIKO : The Statement made by the hon. Chief Minister of Tamil Nadu appeared in every newspaper not only once but more than once. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri Baalu, you will get the chance.

... (Interruptions)

SHRI VAIKO : I quoted the exact words of Dr. M. Karunanidhi. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, please...

... (Interruptions)

SHRI VAIKO : Pandara paradesigal vadakkea erundu varugiravargal virattappadavendum. Here, the meaning of `pandara paradesigal' is the B.J.P. and that they should be chased from the soil of Tamil Nadu who are coming from the North. ... (Interruptions)

SHRI SUDHIR GIRI (CONTAI): I am on a point of order.

The Chief Minister of Tamil Nadu is not present here in the House. His name cannot be taken here. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Giri, under what rule you are raising a point of order?

SHRI SUDHIR GIRI : Any allegation cannot be made on him ... (Interruptions) This is my point of order.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order. He is not making any derogatory remark, Shri Giri.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Giri, he is not making any derogatory remark against the Chief Minister of Tamil Nadu.

... (Interruptions)

SHRI PROMOTHES MUKHERJEE (BERHAMPORE-WB): The statement of Chief Miniter was published in the newspaper. How far it is justified? ... (Interruptions) How far it is authentic? ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, please take your seat.

He is referring to a statement made by the Chief Minister.

Shri Vaiko, are you quoting from the newspaper report or what statement are you referring to?

SHRI VAIKO : I take the responsibility, Sir. ... (Interruptions)

MAJ. GEN.BHUWAN CHANDRA KHANDURI AVSM (GARHWAL): For the last two days during the discussion on the Confidence Motion, they have been quoting newspaper reports. Have you objected to it? ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. Let him continue.

... (Interruptions)

SHRI V. SATHIAMOORTHY (RAMANATHAPURAM): It is the life and death of Tamil Nadu.

MR. CHAIRMAN: Only Shri Vaiko is permitted to speak.

(Interruptions)

SHRI VAIKO : Will they say that the Chief Minister of Tamil Nadu has never uttered those words? Let that be recorded. Let them say that, then I will yield. Let them say that the Chief Minister of Tamil Nadu has never uttered those words? Let it be recorded, I mean it. ... (Interruptions) I cannot help them.

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN (COIMBATORE): The statement of DMK is encouraging terrorists. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Do not make such remarks.

This will not go on record.

(Interruptions) ... (Not recorded)

Only the speech of Shri Vaiko will go on record.

SHRI PROMOTHES MUKHERJEE : This is a constitutional point. ... (Interruptions)

SHRI BALRAM JAKHAR (BIKANER): Mr. Chairman, Sir, will you please advise our hon. friends here that this is the discussion on the Motion of Thanks to the President's Address; this is not concerning the States; and let us go on with the subject? ... (Interruptions)

SHRI VAIKO : Sir, it is concerning the security of the country. ...(Interruptions)

SHRI PROMOTHES MUKHERJEE : Sir, the hon. Minister, Shri Ram Naik was in the Rules Committee and we sat ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri Promothes Mukherjee, please take your seat. The Minister of Home Affairs is on his legs.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L. K. ADVANI): Mr. Chairman, Sir, I would not have intervened had it not been for what Shri Balram Jakhar said. What was being exchanged now was not relating to the State of Tamil Nadu. I do not know whether the Chief Minister of Tamil Nadu has said what my colleague has just now said. I have not read it. If it has not been said, the hon. Members from the other side are free to contradict it saying that it has not been said and the matter might end there. ... (Interruptions)

should not take the time of the House by telling the concocted story. ...(Interruptions)

SHRI L. K. ADVANI) Whatever the Government has to say about the situation there or about the recent incidents, I will certainly say tomorrow. But today the point is very limited; whether a statement of this kind - on the face of which, it is a highly objectionable statement - has been made or not. If it has not been made, you can contradict it. If it has been made as he has said, let it remain as it is. That is all. ...(Interruptions)

SHRI E. AHAMED (MANJERI): The hon. Member, Shri Vaiko is not able to produce it before the House or lay it on the Table of the House. Again and again he is repeating the same thing. There is nothing wrong in alleging anything but it should be supported by the document, in conformity with the rules. ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, please try to conclude now.

... (Interruptions)

SHRI PROMOTHES MUKHERJEE : Sir, is the newspaper report sufficient to charge against the Chief Minister? I want to know this from the hon. Minister and the House....(Interruptions)

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri E. Ahamed, do you have any point of order? Otherwise, please take your seat.

... (Interruptions)

SHRI SURESH KURUP (KOTTAYAM): Sir, normally allegations are not made against a person who is not present in the House. ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I know that. He is not making any allegation. He is referring to a statement.

... (Interruptions)

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri T.R. Baalu, I will go through the proceedings. If there is anything objectionable, that will be removed from the proceedings.

... (Interruptions)

Thanks to the President's Address? ...(Interruptions)

SHRI VAIKO : Sir, the life of Shri Advani was at stake. ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Ahamed, he is not yielding. You will have to raise only a point of order.

... (Interruptions)

SHRI VAIKO : Sir, the life of Shri Advani was at stake. ...(Interruptions)

every word has got some meaning. Please ask him to speak only relevant points. ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, you should not refer to it. If you want to refer to it, you will have to take the permission.

... (Interruptions)

SHRI VAIKO : Sir, my point is that the hands of the police were tied not only throughout Tamil Nadu those days but had there been permission to take action without any interruption or hindrance from the Government, they could have taken same action as they have taken after the tragedy..(Interruptions) He is objecting to this. What is the objection?

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri Baalu, why are you objecting to this? This is his view which he is expressing. He has every right to express his views. You have a right to express your views.

producing any relevant record to you, he should not level charges. (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Now, at least, Shri Vaiko, please try to conclude.

SHRI VAIKO : The hands of the police were tied.

MR. CHAIRMAN: You please conclude.

SHRI VAIKO : My time was swallowed by the interruptions.

MR. CHAIRMAN: Before lunch break you told that you would speak for only 10 minutes.

SHRI VAIKO : But I was not permitted even to complete one sentence. What should I do?

MR. CHAIRMAN: Already 20 minutes have passed.

SHRI VAIKO : That is not my fault. Sir, with all the force at my command, I charge the Tamil Nadu Government and the Chief Minister of Tamil Nadu, Shri Karunanidhi for dereliction of duty and criminal negligence of duty to prevent the massacre.... (Interruptions) With all the force at my command, I charge the Government of Tamil Nadu, the Chief Minister of Tamil Nadu with dereliction of duty.

SHRI E. AHAMED : Sir, I am on a point of order. (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, Shri Ahamed is on a point of order. Please take your seat. You can speak after that.

SHRI E. AHAMED : Sir, under Rule 352 sub-clause (v), "a Member while speaking shall not reflect upon the conduct of persons in high authority unless the discussion is based on a substantive motion drawn in proper terms". ... (Interruptions) Let me complete.

SHRI VAIKO : All the leaders of political parties...(Interruptions)

SHRI E. AHAMED : Sir, I may be permitted to say that even in the explanation also, it has been stated that. ....(Interruptions)

SHRI VAIKO : Why has he forgotten what all the leaders of the political parties have said about the various Chief Ministers? (Interruptions)

SQN LDR. KAMAL CHAUDHARY (HOSHIARPUR): He is not speaking about any individual.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Chaudhary, please take your seat.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, please take your seat.

... (Interruptions)

SHRI E. AHAMED : The words `Persons in high authority mean persons whose conduct can only be discussed on a substantive motion drawn in proper terms under the Constitution or such other persons whose conduct, in the opinion of the Speaker, should be discussed on a substantive motion drawn up in terms to be approved by him'..(Interruptions)

SHRI VAIKO : It is a very good point of order! Sir, I want to know whether Shri Ahamed was present when the Confidence Motion was discussed on the floor of the House. I want to know whether he was present here or not. Many of the leaders of the political parties had made derogatory remarks about the Chief Ministers of many States on the floor of this House.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, let him explain first.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please take your seat.

SHRI E. AHAMED : Sir, I would say that when he is referring to the conduct of the Chief Minister of a State, he must have come here with the necessary documents and authenticated them before the House..(Interruptions)

Then there is a possibility.

SHRI VAIKO : That is the document which says what has happened. What more evidence do you want? Do you want some more people to be killed.

SHRI E. AHAMED : Shri Vaiko, you can very well refer (Interruptions)

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Ahamed, please be seated.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Vaiko, you can mention but you cannot discuss.

SHRI VAIKO : Sir, I have mentioned that due to the negligence of duty and due to the dereliction of duty, this has happened. Sir, whoever abets or instigates an offence, also becomes liable to prosecution.

Therefore, Sir, those who have abetted it, who have failed in their duty to prevent the massacre, they are also liable to be prosecuted ... (Interruptions)

from the record... (Interruptions) It is not relevant... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Shri Baalu, we will go through the proceedings and if there is anything objectionable, we will remove that from the proceedings. Let him continue now.

SHRI VAIKO : Sir, 98 per cent of the Muslim population does not agree with these sentiments.

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI VAIKO : Sir, what happens then? After the horses have galloped and run away, they are trying to bolt the stable. They are searching every Muslim's house today just as an ....(Interruptions) In the President's Address, there is a reference commending the elections...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please take your seats. Let him continue.

SHRI VAIKO : Sir, the hon. President of India has thanked the Election Commission of India for conducting the General Elections with despatch and efficiency. The very same Election Commission gave not only an advice, it made a statement that there should not be any opinion poll to be published in the newspapers. But defying that instruction, they have published the opinion poll results in the weeklies, magazines and newspapers, particularly in Tamil Nadu because the soothsayers, astrologers and pollsters played a very dominant role in predicting, that In Tamil Nadu, the Democratic Progressive Front, that is the AIADMK, would not get more than three seats. But the people of Tamil Nadu are the ultimate judges. They have trounced the DMK Front....(Interruptions).

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, why are you disturbing all the time? Please take your seat...(Interruptions).

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH): Sir, I am on a point of order.

MR. CHAIRMAN: What is your point of order?

SHRI SATYA PAL JAIN : Sir, rule 349 (i) says:

"Whilst the House is sitting, a Member--

(i) shall not interrupt any Member while speaking by

disorderly expression or noises or in any other

disorderly manner."

MR. CHAIRMAN: All should abide by this rule. Shri Jain.

SHRI SATYA PAL JAIN : Yes, Sir. I am pointedly pointing out that the hon. Member has been a senior Minister in the Government of India. If he has to say anything, he can say it later on. He is not allowing him to complete EVEN one sentence. If there is any expression against the Chief Minister, he can raise it on a point of order or on a point of clarification. But he is not permitting him to speak. I want your ruling on this, Sir. I want you to kindly ask the hon. Member to observe this rule and also Rule 349 (ix).

MR. CHAIRMAN: I have already said that all the Members should follow these rules.

SHRI SATYA PAL JAIN : Including the DMK Members!

MR. CHAIRMAN: All, not only DMK Members.

SHRI VAIKO : Sir, the Democratic Progressive Front... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Perhaps this is your last sentence.

SHRI VAIKO : Sir, I will complete the whole sentence within two minutes and then finish.

The Democratic Progressive Front headed by the AIADMK came with flying colours. We have thirty Members in this Lok Sabha. So, what happened to the astrologers, pollsters and soothsayers and also the so-called opinion poll experts? The people gave their verdict in Tamil Nadu for three reasons. One is: A stable Government under the leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee.

Secondly, they were mortally shocked over the bomb blasts in Coimbatore and the people have given their verdict against the failure of the Tamil Nadu Government which has not delivered goods to the people over the past two years. Because of this thing, to bring truth to light - our friends are very much agitated - the Central Government should order a CBI inquiry about what happened in Coimbatore. I would request the Government to order a CBI inquiry. Then the real culprits who are occupying high places in the Government of Tamil Nadu will be brought to light. ...(Interruptions)

I thank from the core of my heart the hon. President of India for having delivered the Address. I thank from the core of my heart the electorates of Sivakasi constituency who have sent me here to take part in the deliberations. Therefore, I would appeal to my

friends on all sides to support this Motion moved by my friend and colleague, Shri Shanta Kumar.

With these words, I commend the Motion for adoption and conclude.

MR. CHAIRMAN : Motion moved:

"That an Address be presented to the President in the following terms:-

`That the Members of Lok Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on the 25th March, 1998.' "

Hon. Members present in the House, whose amendments to the Motion of Thanks have been circulated, may, if they desire to move their amendments, send slips to the Table within 15 minutes indicating the serial numbers of the amendments they would like to move. Those amendments only will be treated as moved.

A list showing the serial numbers of amendments treated as moved will be put up on the Notice Board shortly thereafter. In case any Member finds any discrepancy in the list, he may kindly bring it to the notice of the officer at the Table immediately.

">

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर): सभापति जी, अभी-अभी राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर शान्ता कुमार जी और श्री वैको साहब ने अनुमोदन हेतु प्रस्ताव सदन के सम्मुख रखा, उसी के विषय में मैं कुछ कहना चाहता हूं।

वैसे देखा जाए तो राष्ट्रपति जी का अभिभाषण गवर्नमेंट का ही अभिभाषण होता है, लेकिन चूंकि वह राष्ट्रपति जी के मुखारविन्द से यहां दिया जता है इसलिए उसे राष्ट्रपति जी का अभिभाषण कहते हैं। उनकी ओर से इसमें कुछ सुझाव भी दिए गए हैं। हम हमेशा इस बात का आदर करते हैं और पूरे तौर-तरीके से इसके ऊपर सोचते हैं, गवेषणा करते हैं और जो कुछ सुधार लाने की आवश्यकता समझते हैं, जो कुछ हम महसूस करते हैं, उसके बाद उसे यहां कहते हैं।

सभापति महोदय, देखा जाए तो राष्ट्रपति जी का अभिभाषण सरकार के कार्यों का लेखजोखा होता है, लेकिन यह सरकार अभी-अभी आई है, इसलिए उसके कामकाज के लेखेजोखे का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। इस सरकार की कुछ आशाएं एवं आकांक्षाएं हैं जिनका प्रतिबिम्ब इस अभिभाषण में मिलता है। राष्ट्रपति महोदय ने देश में कतिपय घटनाओं को छोड़कर लोक सभा के चुनाव शांतिपूर्ण और अच्छे ढंग से कराने के लिए चुनाव आयोग की प्रशंसा की है। यह बात सही है कि भारत के लोग प्रजातंत्र में विश्वास रखते हैं और उसकी जीवित मिसाल यह देश है जिसके चारों तरफ यदि हम नजर दौड़ाकर देखें, तो अनेक देशों में प्रजातंत्र धाराशाही होता नजर आया है।

लेकिन यही एक देश है जिसमें हम सजग रूप से जीवट होकर रहते। मैं चाहता हूं कि हम जीवट रहें। इसके लिए यही सबसे उत्तम प्रणाली है जिससे लोगों का और हमारा आपस में सम्पर्क रहता है। प्रजातंत्र एक ऐसा सिद्धांत है जिसमें भाईचारा भी कायम रहता है और विचारों का टकराव भी रहता है। इसमें आपस में कोई कटुता नहीं होती, कोई दुश्मनी नहीं होती। इसमें ि वचारों का आदान-प्रदान, और उनसे उत्पन्न समस्याओं के समाधान होते हैं। हमारे सामने माननीय दिग्गज साथी श्री आडवाणी जी बैठे हैं और नाईक जी आदि सभी बैठे हैं। हमने हमेशा इस बात को देखा है कि हमारा आपस में भाईचारा है, अपनत्व है चाहे विचारों का कितना भी टकराव क्यों न हो। कभी भी कटुता नहीं है। मैं नहीं चाहता कि यह कटुता कभी आये। आज कुछ बातें ऐसी देखने में आ रही हैं जिससे मन में डर लगता है कि कहीं राजनीति का स्तर न गिर जाये। हम आपस में एक दूसरे से अलग न हो जायें। बात हम एकता की करते हैं, एकजुट होकर काम करने की करते हैं, इस मातृभूमि की सेवा करने की करते हैं लेकिन कहीं उसमें कुछ विघटन न आ जाये या कोई और चीज न आ जाये।

आपने देखा होगा कि राष्ट्रपति जी के द्वारा कुछ संकेत दिये गये हैं और वे संकेत बहुत अच्छे दिये गये थे कि किस तरीके से काम करना है। किस तरीके से हमें आपस में मिलकर, बातचीत करके, एक दूसरे की सहायता करके इस देश के लिए काम करना है। यह देश अपना है। अभी शांता कुमार जी जैसा कह रहे थे, मैं उनसे सहमत हूं कि हमें मिलकर काम करना है और मिलकर काम करना तरक्की की निशानी होती है। जिस घर में आपस में साम्य होता है, वह तरक्की करता है और जहां टकराव होता है वहां अवनति होती है। उस टकराव से बचने की चेष्टा प्रजातंत्र की निशानी है। वैसे किसी ने ठीक ही कहा है कि:

"Democracy is a hard core granite, but it is surrounded by a host of conflicting ideas."

जो हमारे सुझाव हैं, जो विचार हैं, हम उनसे उससे घबराते नहीं बल्कि टकराकर उनका परिमार्जन करते हैं। उनमें कुछ नयी चीजें पैदा करते हैं। विचारों के टकराव से नये विचार पैदा होते हैं। उन्होंने लिखा है और कहा भी है कि सरकार चलाने वालों के आचरण पर निर्भर रहने वालों का स्थायित्व कैसा हो? यहां पर श्री वाजपेयी जी मौजूद नहीं हैं। वह मेरे परम मित्र हैं, हमारा आपस में बड़ा भाईचारा है और बहुत सामंजस्य है। मैं आज उनको बधाई देना चाहता था क्योंकि यह कुर्सी किसी की बपौती नहीं है। यह कुर्सी इस देश के लोगों की अमानत है, जो हमें और आपको चुनकर भेजते हैं ताकि हम उनकी सेवा में रत रहें और काम करें। इसलिए इस पर कभी आपका और कभी हमारा बैठना हो सकता है। इसमें कोई ऐसी बात नहीं है जिससे आपको या हमें या किसी को कोई तकलीफ हो। लेकिन यह मिलती क्यों है और किसलिए मिलती है? इसे आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूं।

आज वे यहां नहीं हैं। मैं उनको बधाई देना चाहता हूं लेकिन मेरे दिल में उस विषय को लेकर कुंठा है कि मैं उनको बधाई दूं तो कैसे दूं। मेरे दिल में उनके प्रति बड़ी अच्छी भावना है, उनके प्रति बड़ा मैत्री भाव है क्योंकि सैद्धान्तिक तौर पर, नैतिकता के बल पर मैं समझता था कि वह खड़े रहेंगे और टिके रहेंगे। वह जो कुछ कहेंगे, उस पर टिके रहेंगे। इसलिए मैं उनका बड़ा आदर करता हूं। मैं अभी भी समझता हूं कि शायद वह अपने आपको ठीक समझते हों, लेकिन कुछ ऐसे दबाव हो सकते हैं जिसमें वह दब गये हों, उनकी सोच में कुछ कोहरा छा गया हो, कुछ इस प्रकार की बातों हो गई हों जिससे दब कर उन्होंने आवरण डालने की चेष्टा की है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि यदि वह होते तो मैं उनसे बात करता कि ऐसा क्यों हुआ। आपने ऐसा क्यों किया। मुझे आपसे ऐसी आशा नहीं थी। आप तो कम से कम ऊपर रहकर काम करते ताकि इस देश को भी अच्छा लगता और हमें भी अच्छा लगता। ये सारी बातें ठीक हैं क्योंकि आप प्रधान मंत्री हैं। आज जिस तरीके से काम हो रहा है, उससे मुझे देश के प्रति डर लगता है। मुझे इस बात का डर लगता है कि यह कहीं सिर्फ स्वार्थ की राजनीति तो नहीं रह गयी, यह सिर्फ अपने लिए कुर्सी की लड़ाई तो नहीं रह गयी। यह कुर्सी बहुत बड़ी बीमारी है।

श्री चंद जी, बहुत बड़े दिग्गज हुए हैं, जो कि चौधरी छोटू राम के भतीजे थे।

He died as the Speaker of the Haryana Assembly.

उन्होंने एक दिन मुझसे पूछा कि बलराम जी, आपको पता है कि सबसे बड़ी बीमारी कौन सी है? मैंने कहा कि टी.बी. है, कैंसर है। उन्होंने कहा कि आप बड़े भोले हो। फिर मैंने कहा कि आप ही बता दो कि कौन सी बड़ी बीमारी है। वह अपनी हरियाणवी भाषा में कहने लगे कि 'अरे भाई कुर्सी का काटया कभी ठीक नहीं हुआ' यानी कुर्सी का कटा हुआ कभी ठीक नहीं होता। इस तरीके की बात है। कुर्सी का मसला है। कहीं-कहीं रंग बदलने की बात आ जाती है, चली जाती है। सब कुछ है।

श्री जाखड़ - जारी गिरधर की कुंडलियों में लिखा है। मैंने पुराने जमाने में पढ़ा था। वह तो पैसे की बात थी।

कह गिरधर कवि राय जगत में यह रंग देखा

बिन पैसे यार जगत में विरला ही देखा।

यदि इसके साथ-साथ ताकत भी जोड़ दें -

कह गिरधर कवि राय जगत का यह रंग देखा

बिन ताकत यार जगत में विरला ही देखा।

आज ताकत का मसला आ गया है। इसलिए ताकत के लिए लोग प्रेम और भावना प्रदर्शित करते हैं, रंग बदलते हैं। मैंने भी लोगों को रंग बदलते देखा है। हमारे सजाए हुए लोग, हमारे अ पने ही लोग बदल जाते हैं और हमें कहना पड़ता है -

हमारे ही तराशे हुए पत्थर के सनम,

आज मंदिर में भगवान बने बैठे हैं।

मैं क्या करूं, दिल पर पत्थर रखकर यह भी सहना पड़ता है। लेकिन यह कोई नई बात नहीं है। मैं वाजपेयी जी को यह भी कहना चाहता हूं कि जिस तरह से उधार लेकर सरकार बनाई है, मुरली मनोहर जी नहीं हैं, उन्होंने एक बात ठीक कही थी कि आपने नहीं बनाया, आप हमें भी कहते हैं कि नहीं बनाओ तो काम कैसे चलेगा। लेकिन किस आधार पर बनाएंगे, क्यों बनाएंगे। एक सिद्धान्त की बात है। हमारा निशाना क्या है। उसमें साथ चलने के लिए दोस्ती होती है। लेकिन सौदेबाजी चले, यह बात मुझे कुछ जंचती नहीं है। इसलिए कहना चाहता था कि यह बात सोचो कि किस तरह से है, क्यों हैं।

वाजपेयी जी नवे एक कहानी कही थी जो मैंने पढ़ी थी। उन्होंने महाभारत की एक कथा सुनाई थी। उन्होंने कहा था - एक बहुत बड़ा वीर था। महाभारत की लड़ाई में उसका रथ ऊपर उठा होता था। उसने एक बार राक्षस को मारने या किसी कारण से गलत बोला, अनैतिकता बरती। राक्षस तो मारा गया। लेकिन उसका रथ पृथ्वी में धंस गया। इसलिए यह न हो कि वाजपेयी जी का रथ धंस जाए। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि हमें उस हिसाब से सोचना चाहिए कि क्या करना है। भाईचारा दोनों तरफ से होता है और दुनिया में दो हाथ से ताली बजती है, एक हाथ से नहीं बजती। कथनी और करनी में कितना अंतर है, इस बात का मैं उल्लेख करना चाहता हूं लेकिन कहना नहीं चाहता। पहले दिन से ही श्रीगणेश कहिए या बिस्मिल्ला कहिए, जिस दिन किया, हाथ जोड़कर कहना चाहता हूं कि वह नहीं होना चाहिए। यदि आप पहले ही न कह देते तो कुछ बात बनती। मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता लेकिन अच्छा नहीं लगा, दिल को ठेस लगी। किसी आदमी की अवमानना हो, ऐसा क्यों किया गया। सोच-समझकर कहना चाहिए। जो बात कह दी वह कह दी। कही हुई बात पत्थर की लकीर होनी चाहिए। आदमी वह होता है जो अपनी बात को पुख्ता रखता है। जो आदमी कहकर मुकर जाता है, उसमें इसानियत नहीं होती, मानवता की गिरावट आ जाती है। इसलिए आदमी को सोच-समझकर बात करनी चाहिए कि मैंने यह कहा है तो कह दिया, नहीं कहा तो नहीं कहा। यह इसलिए कह रहा हूं क्योंकि मुझे आगे के लिए डर लगता है कि कहीं यह पद्धति न बन जाए। किसी के ऊपर से चूहा निकल गया तो वह रोने लगा। मुनीम जी ने पूछा कि सेठ जी, क्या बोत हो गई, रोते क्यों हो, चूहा ही तो निकला है। वे कहने लगे कि चूहे की बात नहीं है। मैं इस बात से डरता हूं कि यह कहीं रास्ता न बन जाए।

दूसरी बात हिन्दुत्व की कही गई। मैं मानता हूं और अपने पर गर्व करता हूं कि मैं हिन्दू हूं। लेकिन मेरा धर्म मानवता में विश्वास करता है। मेरा धर्म कहता है - यत्र विश्व भवति एक नीड़म। यह संसार एक घोंसला है, हम इसके वासी हैं। यह हमारा है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः

सर्वे सन्तु निरामया

सर्वे भद्राणि पश्चन्तु

मां कश्चित दुख भाग भवेत।

1444 hrs. (

डा. लक्ष्मी नारायण पांडेय पीठासीन हुए)

मैं भी हिन्दुत्व में विश्वास रखता हूं लेकिन हिन्दू होने का अर्थ यह है कि मैं सबसे प्यार करता हूं। इसलिए इंसान इंसान होने में फर्क है। मैं सिर्फ कथनी और करनी का फर्क चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि आप अपनी बात पर कायम रहें। वाजपेयीजी ने कहा। आपने एजैंडा में से निकाला।। मैं बहुत प्रसन्न हूं। लेकिन क्या हम इंसाफ कर पाए, क्या यह देश इस बात में विश्वास कर पाएगा? क्यों नहीं कर पाएगा, इसका उल्लेख मैं नहीं करना चाहता, आप करें। इसके पीछे इतिहास क्या है।

पीछे क्यों हुआ? यहां भी आश्वासन दिया गया था, सुप्रीम कोर्ट में भी आश्वासन दिया गया था, इसके बावजूद फिर उल्लंघना क्यों हुई, फिर क्या कारण बना। इसीलिए डर लगता है। एक शेर है, किसी ने कहा है, मैं नहीं समझता कि वह अनपार्लियामेंटरी है, क्योंकि मैं किसी के ऊपर आक्षेप नहीं कर रहा हूं, मैं उसको बदल भी देता हूं, वे इस सलीके से कुछ गलत बात कह रहे थे कि हम एतबार न करते तो क्या करते। एतबार करने की मजबूरी थी। यहां एतबार दिलाया गया था, सुप्रीम कोर्ट में एतबार दिलाया गया था, इसलिए एतबार करना पड़ता है, लेकिन वह टूट गया। आडवाणी जी बैठे हैं, मेरे बहुत बड़े भाई हैं, मैं इनसे पूछना चाहता हूं, मैं राजी हूं, सारे झगड़े मिटाओ, टकराव खत्म हो जाता है, भ्रान्ति खत्म हो जाती है। इस देश में भाईचारा पनप जायेगा, फिर हम एक दूसरे का सिर नहीं फोड़ेंगे।

'क्यों आपस में लड़ें, संगे मील पर,

इसमें नुकसान-ए-सफर तेरा भी है, मेरा भी है।

मत गिरा इस घर को, ये घर तेरा भी है, मेरा भी है।'

इस घर में सब को रहना है, फिर हम क्यों आपस में लड़ें। मैं यह चाहता हूं कि इस प्रकार का आप आश्वासन यहां पर दिलवा दें ताकि फिर दुनिया में कोई उठकर न कहे कि यह हमने इस तरीके से करना है। हमें आपस में मिलना है, इस बात को मैं करना चाहता हूं, तभी मैं कहना चाहता हूं, क्योंकि मुझे मुसीबत इसी बात की है और मैं इसी के आलिंगन की बात करता हूं कि कहने में और करने में फर्क न हो।

"Saying and doing, let them not be two different things. Let it be one single thing, and then I agree with Shri Shanta Kumar. It is then that we can create heaven on this earth, we can create harmony and we can create something which will be a good thing."

फ्रैगरेंस होगी, उसमें नैतिकता होगी-समझे कि नहीं?

अब देखने की बात यह है कि आगे हम क्या करना चाहता हैं। आपने बहुत कुछ कह दिया। इसमें इतनी अच्छी बातें लिखी हैं कि अगर वे सच हो जायें तो पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आयेगा। फिर वहां जाने की जरूरत नहीं रहेगी। आपने सारा कुछ कह दिया कि गरीबी भी हटाएंगे

... (व्यवधान)

सब कुछ दिया है। ऐसा लगता है कि हम उस यूटोपिया का निर्माण कर रहे हैं, जिसमें सब कुछ ठीक होगा, कुछ नहीं होगा। लेकिन मुझे डर एक बात का लगता है कि कहीं वैसी बात तो नहीं कि एक बेचारा गरीब आदमी था, बीस रूपये की मजदूरी करता था। उसके दो बच्चे थे, बीवी थी। वह शाम को जब रोटी पकाने लगी तो कहने लगा कि कल भैंस खरीदेंगे, १५ किलो दूध होगा। लेकिन उसके पास एक हजार रुपये नहीं थे। उस समय बैंक ऋण नहीं दिया करते थे। चार दिन बाद बात वहां की वहीं रही। घरवाली कहने लगी कि तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, न तुम्हारे पास एक हजार रुपये होंगे, न तुम भैंस खरीदोगे। तीन दिन बाद बेचारे बच्चे घबरा गये। कहने लगे, पिताजी एक डैपुटेशन आया है, हमारी बात सुन लो। वे बोले कि पिताजी भैंसे लो या न लो, लेकिन बात जरूर किया करो, इससे दिल लगा रहता है। कहीं यह दिल लगाने वाली बात तो नहीं है? कहीं आपने हमारा दिल लगाने के लिए इतना कह दिया हो। आपने कह दिया कि सारी बेरोजगारी हटा दो, शिक्षा का प्रसार कर देंगे, सुख-शान्ति कर देंगे, स्वास्थ्य भी दे देंगे, महिलाओं को शिक्षा दे देंगे, सब कुछ कर देंगे। लेकिन इसके लिए क्या ढांचा भी बनाया है? मैं चाहता हूं कि कुछ ढांचा हो, ऐसा कुछ प्रारूप हमें दीजिए कि हम कुछ कह सकें, कुछ दिखा सकें कि हां, यह-यह हमारी चीजें है, इसको हम करना चाहते हैं।

मैं इसमें एक चीज ले लेता हूं। आपने बेरोजगारी की बात कही है, लेकिन मैं पहले कृषि पर आ जाता हूं, क्योंकि कृषि एक आधार है। कृषि इस देश की तरक्की का आधार है। मैं अपने पाइंट में सारी बातें जोड़ूंगा। कृषि हमारी तरक्की का आधार है, इस देश की आर्थिक स्थिति की रीढ़ है। ७५ प्रतिशत आदमियों का कृषि पर जीवन-यापन होता है। अगर वह ठीक होगी और उनकी जेब में पैसा होगा तो इंडस्ट्री भी चमकेगी, दुकान भी चमकेगी, सारा देश भी चमकेगा। लेकिन क्या आपको पता है, मैं आपको बताना चाहता हूं, कृषि मंत्रालय में मैंने देखा है, मैंने पता किया है, मैंने उसको बदलने की चेष्टा की है, बहुत कुछ किया भी है, लेकिन अभी तक मन में एक किलो भी नहीं पीसा गया। आठ रुपये यदि इस देश की औसत आमदनी है तो आठ रुपये में से एक रुपया ७४ प्रतिशत लोगों को मिलता है और सात रुपये २६ प्रतिशत लोगों को मिलते हैं। यह एक अनोखी चीज है, जिसको हमें ठीक करना है, परिष्कृत करना है। यह बंदरबांट हम कितने दिन चला सकते हैं? इसको रोकना होगा, तब जाकर बात बनेगी। इसलिए मैं कहना चाहता हूं, आपने कहा है कि ६० प्रतिशत हम कृषि में देंगे, लेकिन ६० प्रतिशत कृषि में किस चीज पर देंगे। हम यह पैसा कृषि के लिए देंगे या सिंचाई पर देंगे या बच्चों की एजुकेशन पर खर्च करेंगे या पावर को देंगे, या उसकी सप्लाई के लिए देंगे, या उनकी सड़कों को देंगे, उनके लिए स्कूलों का निर्माण करेंगे। क्या-क्या करेंगे। सारा मिलाकर देखें तो ६० प्रतिशत पैसा आज भी मिलता है, इसमें कोई नई बात नहीं है। मैं चाहता हूं कि उसमें जो इन्वेस्टमेंट कम हो गया है, उसके बारे में मुझे बताइये कि आप क्या करना चाहते हैं।

आज भारतवर्ष में औसतन जितनी आपकी होल्डिंग है, वह ०.४८ हैक्टेयर है। इतनी सी रह गई है।

श्सन् १९५० के बाद, अब तक तीन पीढ़ियां आ गई हैं। पहले बाप के दो बेटे फिर उनके दो-दो या चार-चार बेटे, इस तरह भूमि बंटते-बंटते इतनी छोटी हो गई है कि अब उसमें कबड्डी ही खेल सकते हैं। इस तरह से ७४ प्रतिशत जनता जो कृषि पर निर्भर है कृषि से बाहर रहेगी, फिर यह धरती बोझ सम्भाल नहीं पाएगी। आप कहां से इतना रोजगार लाएंगे, कहां से इतने लोगों की शिक्षा का प्रबंध करेंग? देश में भुखमरी का सबसे बड़ा कारण यही है कि लोगों को रोजगार नहीं मिलता। गांव से लोग भागकर शहरों की तरफ आते हैं और यहां गंदी बस्तियों में, स्लम में रहते हैं। इसका कारण यह है कि गांवों में उद्योग नहीं हैं, रोजगार नहीं हैं।

हमने शुरू में इस बात पर ध्यान दिया था। आपने ऐलान किया है कि सूखे में खेती करके डबल करेंगे, लेकिन कैसे करेंगे यह नहीं बताया है। १९५० में जहां खाद्यान्न का भंडार ५० लाख टन था, वहीं अब १९२ लाख टन है। जिस दिन मैंने पद छोड़ा था, १३७ लाख टन के करीब था। तब लोग नहीं सोचते थे कि बाहर से भी मंगाना पड़ेगा। किसान ने हमें बहुत कुछ दिया है, लेकिन हमने उसे कुछ भी नहीं दिया। आप इस चीज का भी निर्धारण करें कि उसे उसका हक तो कम से कम मिले। आप सिंचाई का समुचित प्रबंध कर दें तो सूखी जमीन खत्म हो जाएगी, देश उन्नत हो जाएगा और हमारे किसान का नक्शा ही बदल जाएगा।

मैं राजस्थान कैनाल के बारे में लिखता-लिखता थक गया। जब मैं पंजाब में था तब भी उसके बारे में लिखता था। वहां लोग पानी से मर रहे हैं। मैं इसके बारे में आठ साल से लिखता आ रहा हूं। वहां टीम भेजकर अध्ययन भी कराया और उसकी रिपोर्ट भी मंगवाई। एक तरफ तो लोग पानी के बिना मर रहे हैं और दूसरी तरफ बीसीयों गांव बाढ़ में पानी से डूब जाते हैं, उनके घर कोई देखने वाला नहीं है। वह ऐसी जमीन है कि अगर सिंचाई का माकूल इंतजाम हो जाए तो वह इलाका लहलहाहट पैदा कर सकता है, भूमि सिंचित हो सकती है और अन्न पैदा हो सकता है।

मैं आडवाणी जी आपसे कहना चाहता हूं। गुजरात में होने वाला है। नर्मदा की नहर आने वाली है। जब मैं कृषि मंत्री था तो मैंने निर्माण कराया था। तब मैंने केशू भाई से कहा था, उनके पहले जो मुख्य मंत्री थे उनसे भी कहा था और उस वक्त के प्रधान मंत्री से भी कहा था कि आपका सारा पानी सौराष्ट्र जाएगा, जमीन में साल्ट है, सारा प्रोजेक्ट खराब हो जाएगा। अगर बूंद-बूंद करके देंगे तो उत्पादन तिगुना हो जाएगा, वहां का नक्शा बदल जाएगा और किसान का पेट भी भर जाएगा। चारों तरफ हरियाली आ जाएगी। मुझे खुद पता है, क्योंकि मैंने यह करके देखा है और इन हाथों से किया है।

इसलिए मैं कृषि के बारे में यही कहना चाहता हूं कि इस पर पूरा ध्यान दिया जाए। मैंने सब्सिडी रखवाई थी। देवगौड़ा जी यहां बैठे हैं, मैंने ७० प्रतिशत की थी, उन्होंने ९० प्रतिशत कर दी थी। औरतों के लिए और दूसरे लोगों के लिए भी की थी। मैं देवगौड़ा जी का इस काम के लिए मान करता हूं कि एक ही प्रधान मंत्री ऐसा आया जिसके दिल में यह बात आई। लेकिन इसके बावजूद उन लोगों को पैसा नहीं मिलता। राज्य सरकार पैसा नहीं देती। लिख दिया पांच हजार रुपये, लेकिन दिया कुछ भी नहीं। यह किसान का ही पैसा है, जिसे अनुदान के रूप में हम देना चाहते हैं। नहर निकालने का १०० रुपया देते हैं, लेकिन वहां दस रुपए ही पहुंचते हैं। अगर सही रकम पहुंच जाए तो वह उत्पादन डबल करके दिखा सकता है। मैंने इस बारे में मनमोहन सिंह जी से भी लड़ाई लड़ी थी और यह कराया था। यह क्यों नहीं हो पाता, इस बात को भी आप देखें। क्योंकि यहां कमी है इसलिए मैं आपको बता रहा हूं।

आज हमारी कृषि नीति का क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम है। चार बार इस सदन में बहस हो चुकी है। उसके लिए समिति भी बनाई गई थी, लेकिन पता नहीं क्या हुआ। उसमें लिखा था कि कृषि पर इनकम टैक्स नहीं लगेगा और कृषि का स्थान उद्योग के बराबर होगा, जिसमें ये सारी समस्याएं नहीं होंगी, क्योंकि मैं जानता हूं किसान कहां मरता है। बाहर के लोग भी कहते रहते हैं कि कृषि पर इनकम टैक्स लगाया जाए। उनको कुछ पता नहीं है। उनको एक बार गांव में लेजाकर खेत दिखाया जाए। दिन में वहां खड़ा कर दो तो सनस्ट्रोक हो जाएगा और रात को पानी देते वक्त खड़ा कर दो तो इनको निमोनिया हो जाएगा।

अभी कृषि मंत्रालय का कार्यभार प्रधान मंत्री जी के पास है। वे काम करें तो अच्छी बात होगी, लेकिन उनके पास इतना समय नहीं है। आप पूरा मंत्रिमंडल बनाएं। अगर हो सके तो सोमपाल जी को ही दे दें, उनको ज्ञान है, वे इरीगेशन को अच्छी तरह से समझते हैं। अगर यह भी न हो तो मेरा एक सुझाव मान लें।

१०० रुपया देते हैं, लेकिन वहां दस रुपए ही पहुंचते हैं। अगर सही रकम पहुंच जाए तो वह उत्पादन डबल करके दिखा सकता है। मैंने इस बारे में मनमोहन सिंह जी से भी लड़ाई लड़ी थी और यह कराया था। यह क्यों नहीं हो पाता, इस बात को भी आप देखें। क्योंकि यहां कमी है इसलिए मैं आपको बता रहा हूं।

आज हमारी कृषि नीति का क्या हुआ, मुझे नहीं मालूम है। चार बार इस सदन में बहस हो चुकी है। उसके लिए समिति भी बनाई गई थी, लेकिन पता नहीं क्या हुआ। उसमें लिखा था कि कृषि पर इनकम टैक्स नहीं लगेगा और कृषि का स्थान उद्योग के बराबर होगा, जिसमें ये सारी समस्याएं नहीं होंगी, क्योंकि मैं जानता हूं किसान कहां मरता है। बाहर के लोग भी कहते रहते हैं कि कृषि पर इनकम टैक्स लगाया जाए। उनको कुछ पता नहीं है। उनको एक बार गांव में लेजाकर खेत दिखाया जाए। दिन में वहां खड़ा कर दो तो सनस्ट्रोक हो जाएगा और रात को पानी देते वक्त खड़ा कर दो तो इनको निमोनिया हो जाएगा।

अभी कृषि मंत्रालय का कार्यभार प्रधान मंत्री जी के पास है। वे काम करें तो अच्छी बात होगी, लेकिन उनके पास इतना समय नहीं है। आप पूरा मंत्रिमंडल बनाएं। अगर हो सके तो सोमपाल जी को ही दे दें, उनको ज्ञान है, वे इरीगेशन को अच्छी तरह से समझते हैं। अगर यह भी न हो तो मेरा एक सुझाव मान लें।

मेरा एक सुझाव मान लीजिए। हमने आपको पहले भी प्रधान मंत्री दिए हैं। ... (व्यवधान)अभी जब एकता हो जाएगी तब फिर बात करेंगे।

... (व्यवधान)

हमने आपको पहले भी प्रधान मंत्री दिए हैं। सर्वश्री वी.पी.सिंह जी, चौधरी चरण सिंह जी, चन्द्र शेखर जी, देवगौड़ा जी, गुजराल जी और कुछ लोग इनके पास भी है।

... (व्यवधान)

हमसे मांगकर और ले लो। यह लेना-देना तो आपने करना है। हमने बूटा सिंह जी और वीरेन्द्र वर्मा जी भी दिए हैं।

... (व्यवधान)

श्री हरपाल सिंह साथी (हरिद्वार): सबको दे रखा है मगर आप नहीं आए। कृषि के ज्ञाता तो आप हैं। आप आ जाएंगे तो ठीक हो जाएगा।

... (व्यवधान)

श्री बलराम जाखड़ : मुझमें और उनमें फर्क यही है कि सारी उम्र तो कटी इश्के बुतां में, अब दो दिन के लिए क्या ख़ाक मुसलमां बनें?

... (व्यवधान)

मुझसे ऐसा नहीं किया जाता। आदमी वह है कि जहां खड़ा है, वहीं पुख्ता खड़ा रहे।... (व्यवधान) जलजला ऊंची इमारत को तो गिरा सकता है। मैं तो नींव का पत्थर हूं, मुझे कोई खतरा नहीं है। मुझे इस बात का खतरा नहीं है कि मैं गिर जाऊंगा। मेरी औकात क्या है, मैं जानता हूं। मैंने कभी गिरना नहीं सीखा, मैंने कभी बुरी बात करनी नहीं सीखी। मैं तो प्यार से बात करना चाहता हूं। मैं इस देश का वासी हूं। मेरे लिए यह देश मेरी मां है। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। इसके लिए जो कुछ करवाना चाहो, करवा लो। मैं यही कहना चाहता हूं कि यह गरीबी तब हटेगी जब किसान के घर में पैसा होगा, जब अनाज का उत्पादन ज्यादा होगा और जब देश की महिलाएं शिक्षित होंगी। महिलाओं का कृषि में आधे से ज्यादा सहयोग है लेकिन अभी तक उनको सम्मान नहीं दिया गया है। उनके लिए कृषि के संसाधन के लिए मैंने प्रयत्न किए थे। कृषि विज्ञान केन्द्र कहां गए? सारा मामला ठप्प पड़ गया है।

... (व्यवधान)

रिसर्च एंड डवलपमेंट इत्यादि का क्या हो रहा है? यह विदेशी कर्ज हमें खा जाएगा। जीरो परसेंट पर गेहूं आ गया है। हम मारे जाएंगे। जेनेटिक रिसोर्सेज का काम करवाया जाना चाहिए। मैंने यह प्रस्ताव रखा था लेकिन वह पास नहीं हुआ। इसे आप जल्दी से जल्दी देखें। ये बाहर वाले हमें खा जाएंगे। चावल और नीम पर ये पेटेंट बनाने वाले हैं। आप इनको हटवाइए। आप सोचिए कि आपको क्या करना है। मैं आपकी मदद करना चाहता हूं। मैं लड़ाई नहीं करना चाहता हूं लेकिन किसी बात पर हम दबना भी नहीं चाहते। जो बात हम कहना चाहते हैं, वह हम कहकर रहेंगे। मैं इंश्योरेंस की बात करना चाहता हूं।

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (पटियाला): एग्रीकल्चरल सब-सेंटर्स पर कांग्रेसियों ने अपनी कोठियां बना ली हैं।

... (व्यवधान)

श्री बलराम जाखड़ : मैंने किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। कांग्रेसी हो या कोई और लाटसाहब हो। मुझे कोई परवाह नहीं है, मुझे सिर्फ इस देश की परवाह है। कांग्रेस वालों ने खुद मेरे साथ क्या-क्या किया है, इस बात को छोड़िए।

... (व्यवधान)

लेकिन हमने कांग्रेस में जन्म लिया है। मैं कांग्रेस की बात करता हूं। कांग्रेस में हमारी आस्था है। इसमें हमारे देश की भूमि के लिए एक लगाव है, देशभक्ति की भावना है। हमने आज़ादी की लड़ाई लड़ी है। शहीदी का नाम हमारे पास है। किसके पास है? इसलिए मैं सीधी सी एक बात औद्योगीकरण के बारे में कहना चाहता हूं। एग्रो-बिजनेस कंसोर्शियम की बात थी

... (व्यवधान)

श्री हरपाल सिंह साथी : आप भूमि के बारे में बोले हैं। भूमि पड़ी हुई है। उस भूमि के लिए इन्तजाम आप लोगों ने किया होता तो अभी विदेश से जो हमने अनाज मंगाया, उसकी जरूरत नहीं पड़ती।

... (व्यवधान)

श्री बलराम जाखड़ :आपको अभी पता नहीं है। उसके लिए यदि कुछ करना है तो जो मैं तरीका बता रहा हूं, उसे अपनाएंगे तो अपने आप ठीक हो जाएगा। ऊसर भूमि में कुछ नहीं होगा जब तक पानी नहीं होगा। चाहे हजार एकड़ ऊसर भूमि आप किसी को दे दें, उसमें कुछ नहीं होगा जब तक उसमें पानी नहीं होगा। लेकिन अगर उत्पादन करना है तो हमें उसे वॉटर लॉगिंग से

बचाना पड़ेगा, लिफ्ट इरीगेशन की व्यवस्था भी करनी होगी। मेरे निर्वाचन क्षेत्र बीकानेर में जाकर देखिए। कांग्रेस जो आठ साल पहले करके गई है, वहीं का वहीं काम रुक गया है। शांता कुमार जी ने कहा था कि वहां पानी पहुंचा दिया है। मैंने इन्हें इसी पद पर बैठकर कहा था कि आपने दस साल यहां बैठने के लिए मुझे गरिमा दी थी।

15.00 hrs.

श्मैं यह कहना चाहता हूं कि आप राजस्थान को सुविधा दे दो, क्योंकि लोगों को २५-२५ मील से पानी का पानी लाना पड़ता है या फिर सूखे में रहना पड़ता है। शान्ता कुमार जी, आपके यहां तो हरियाली है। मेरे दिल में इस नक्शे को बदलने की तमन्ना है और इसको पूरा करना चाहिए। इस समस्या का समाधान ६० प्रतिशत किस प्रकार से करना है, इस बारे में सलाह कर लीजिए। हम भी सलाह देंगे, तब कहीं जाकर बात बनती है। इस बात को भुलावे में मत छोड़िए। इसके लिए सार्थकता चाहिए, नीयत चाहिए और हम में काम करने की नीयत है तथा हम काम करके दिखाना चाहते हैं।

दूसरी बात मैं इंश्योरेंस के बारे में कहना चाहता हूं। मैंने चार दफा इस स्कीम को बनाकर दिया है, लेकिन अभी तक इस दिशा में काम नहीं हुआ है। मैं चाहता हूं कि उस स्कीम को पूरा किया जाए। आज हमारे आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, पंजाब, मध्य प्रदेश के किसान तबाह हो रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश में तो ६० किसानों ने आत्म-हत्या तक कर ली है। क्या हम किसान इसी लिए पैदा हुए हैं कि हम फांसी का फंदा लगाते चले जायें? कृषि सबसे अनसर्टेन उद्योग है। भगवान जिसको सजा देना चाहता हैं, उसको किसान बना देता है। यह बात हमारे साथ भी है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आप बतायें, इसमें असल क्या है, नकली क्या है, छुपा क्या है और बाहर क्या है।

अभिभाषण में महिलाओं के बारे में भी कहा गया है। अगर एक महिला को शिक्षा देंगे, तो घर नहीं सुधर सकता है। इसलिए महिलाओं को शिक्षा देनी चाहिए। इसके बिना देश का विकास नहीं हो सकता है। इसमें आपने को-आपरेटिव्ज की बात नहीं की है। को-आपरेटिव बहुत बड़ा सैक्टर है। इसमें भी यदि ठीक तरह से सुधार हो, तो आधारभूत तरक्की हो सकती है। एग्रो-बेस्ड कन्सोर्शियम और मोर-हारवैस्ट स्कीम चलाई गई थी, इससे किसानों को बहुत काम मिल सकता है। गांवों में उद्योग लगेंगे। इसके साथ ही हमारा देश फलों के मामले में पहले स्थान पर है। दूध उत्पादन में भी पहले स्थान पर आने वाला है। फलों और सब्जी में तो हम चीन का मुकाबला कर सकते हैं। हमारा देश किसी भी क्षेत्र में नीचे नहीं है। लेकिन स्थिति यह है कि पैंकिंग, फारवर्डिंग, पैकेजिंग और कैनिंग में उत्पादन का २५ से ३० प्रतिशत तक डिस्ट्राय हो जाता है। इसका बन्दोबस्त करना होगा। जब यह बाहर के देशों में हो सकता है, तो हमारे देश में क्यों नहीं हो सकता है। इस बारे में मैं आडवाणी जी से एक बात कहना चाहता हूं। सातवें प्लान में इस समस्या के समाधान के लिए २४ करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया था और आठवें प्लान में यह राशि बढ़ा कर एक हजार करोड़ कर दी गई थी और इस राशि को चार परसेंट ब्याज पर देने की बात थी। यदि यह व्यवस्था हो जाती, तो इस समस्या का समाधान हो जाता।

दूसरी बात, अब जमाना बदल रहा है, दुनिया में हमने दूसरे देशों के साथ मिल कर चलना है। हमारी लिब्रलाइजेशन की योजना है और आपने स्वदेशी की बात कही है। स्वदेशी की बात तो बापू जी ने भी कही थी और स्वदेशी की बात स्वयं स्वामी दयानन्द ने भी कही थी। यह सबसे उत्तम बात है और इसी के सहारे हमने आजादी प्राप्त की थी। हम विकास का दरवाजा बन्द नहीं कर सकते हैं। हमें कुछ इस प्रकार से कदम उठाने चाहिए, ताकि हर क्षेत्र में हम बाहर के देशों का मुकाबला कर सकें।

यशवन्त सिन्हा जी सदन में उपस्थित नहीं है। मैं छोटे उद्योगों के बारे में कहना चाहता हूं। इसी से संबंधित परसों में एक ज्ञापन उनको दिया है। इस बारे में आप थोड़ा विचार कीजिए। मैं राजस्थान के बारे में कहना चाहता हूं। राजस्थान में स्पिनिंग मिलें जो धागा तैयार करती हैं, उनपर कोई एक्साइज डयूटी नहीं है, लेकिन जिन्होंने हथकरघा लगाया है, उनसे एक्साइज वसूल की जा रही है। यह राशि तकरीबन २५-३० करोड़ रुपए है। इस बारे में खास तौर से मैं आपका ध्यान बीकानेर के बारे में दिलाना चाहता हूं।

बलराम जाखड़ जारी मैंने उनको यहां मिलवाया भी, उन पर १५ प्रतिशत कर्जा है। आप २०-२५-३० हजार को बिल्कुल बेरोजगार करके छोड़ देंगे- यह कोई तरीका है। मिल में जो हैं उन्हें टैक्स फ्री, और जो हाथ से काम करते हैं, उन पर टैक्स हो, इसे तो हटवाओ। इस बात को जरा सोच कर देखिए कि आप क्या करना चाहते हैं?

आप भाषाओं की बात करते हैं। भाषाएं तो सारी अच्छी हैं। वे मोतियों की लड़ी हैं। भाषाएं किस को प्यारी नहीं हैं, मुझे सारी भाषाएं प्यारी लगती हैं। हिन्दुस्तान एक गुलदस्ता है और हिन्दी को हमने एक लड़ी बनाई थी, एक धागा बनाया था जिसमें उन्हें पिरो दें और सारी सज जाएं। मुझे कोई एतराज नहीं है। इसे भी हमने तेलगू में नहीं छापा, तमिल में नहीं छापा, उर्दू में नहीं छापा, मराठी में नहीं छापा, क्या इस तरीके से हो जाएगा? यह बात हरेक को सोचनी है कि हमने सबको उचित स्थान देना है, हमने सबको शिरोधार्य करना है, क्योंकि उनमें हमारी संस्कृति छिपी हुई है, सब भाषाओं में इतना साहित्य है जिसका कोई अंदाजा नहीं है। सब बराबर का काम करते हैं और करने वाले हैं।

दूसरी बाहर की बात रही। आप करना चाहते हैं, आपने उसमें लिखा है। आप और वाजपेयी जी खास तौर से उसमें दक्ष हैं। पहले भी वे हमारे इस विभाग के मंत्री रहे हैं और आज भी उनके पास यही महकमा है। हमें सह-अस्तित्व की बात करनी है, इस प्रकार से बात करनी है ताकि लोग हमारा आदर करें और हम उनका आदर करें। यह संसार बहुत छोटा है। अगर एक दफा बिखर गया तो बाकी कुछ नहीं है। भगवान ने पृथ्वी एक बार बनाई थी, बार-बार तो बनती नहीं है इसे कोई एक्सपैंड नहीं कर सकता है। मैं इसलिए कहना चाहता हूं कि हमारा भाई-चारे का संदेश सारी दुनिया में जाए और उनको पता लगे कि हां, हिन्दुस्तान में लोग हैं जिनके दिल में प्यार है, जीने की, आगे बढ़ने की तमन्ना है। ये उल्टा-पुलटा जो काम है कि यह बनाओ, वह बनाओ, ये जरा सोच-समझ कर करने की बातें हैं। भावावेश में आकर कोई ऐसा काम न करें जिससे कि अनर्थ हो जाए, हमारी नाक कट जाए। हम आगे बढ़ना चाहते हैं, दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहते हैं। 'यत्र विश्वे भवति,' हम इस तरह की बात कहते हैं, तो उसी तरह की बात करो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्,' की बात कहते हैं, उसी तरह करने की बात करो।

महोदय, मैं एक छोटी सी बात और कहना चाहता हूं। आज यहां बरनाला जी नहीं हैं। उन्होंने मुझे कुछ बातें कही थीं। मैंने उनको कहा भी था कि इससे पीड़ा होगी। मैं उनको कहना चाहता था कि आपने जो कुछ कहा, हमें ऐसा कहना चाहिए जिससे किसी को दर्द न हो। उन्होंने कहा कि पंजाब में आतंकवाद कांग्रेस ने फैलाया। यह बात सुन कर मुझे शर्म आती है, ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता। क्या भाई, भाई को मरवाएगा, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। दर्द किस का होगा। चाहे कोई भी मरे, वह मेरा है और यह काम हम करेंगे। जिन्होंने देश के लिए लड़ाई लड़ी, सारा कुछ हमारे शहीदों ने किया, उनके लिए हम करना चाहते हैं इसलिए यह बात अच्छी नहीं लगती।

'अरे क्या खूब रंग बदला है जमाने का, अपने अपनों पर वार करते हैं,

पहले मरते थे यार यारों पर, आज यारों से यार मरते हैं।'

यह मैं नहीं करवाना चाहता, यह बात अच्छी नहीं है। इस तरीके की सोच भी, ख्याल भी गलत है, कोई ऐसी भावना भी गलत है। यह हमारा है, इसको हम तोड़ नहीं सकते, इसको बचा कर रखना है, इसी हिसाब से सोचना है।

'जितनी बंटनी थी बंट चुकी है जमीन, अब तो सिर्फ आसमान बाकी है।'

अब देश में क्या बांटना चाहते हैं? हम लोग और क्या करना चाहते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि किसी तरीके से यह ठीक चले, प्यार की भावना हो, इस देश में सदभावना फैले। आप और हम मिल कर काम करें। लेकिन कुछ बातें हैं जो मैं इसमें डालना चाहता हूं इसलिए मैं इसका विरोध करता हूं और कोई विशेष बात नहीं है। मैं आज ज्यादा बोलना नहीं चाहता क्योंकि मेरे और साथी भी बोलने वाले हैं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

">SHRI JAG MOHAN (NEW DELHI): Mr. Chairman, Sir, I am rising to support this Motion of Thanks on the President's Address, and my reasons are that we should consider, at this moment, what are the requirements of time, what are the challenges that this nation faces. As I see it, this new Government is required not only to give a different set up of administration but also to provide a new dedication, a new dynamism and a new devotion to this nation.

A new direction has to be found. Our distinguished friend was just mentioning that so many problems are there, no solution has been found to them, how you will solve all these problems, etc. My answer to that is, if we provide a new awakening, if we serve a new deal to this nation, create a new consciousness in this nation, replace the culture of callousness, indifference, apathy and cynicism by a positive attitude, by a culture of contentment, compassion, balance and harmony, then we can turn the page of history. We have to see which of the two forces or the two groups can deliver the goods or change the direction. We have to see who has the potential to do so. For the last fifty years you had the opportunity. Unfortunately the position in which we find ourselves today is not a very happy position. So, if we want to turn towards the better end, you must give an opportunity to the other group to show its potential.

The basic point which I would like to make is that this Government has made a very good beginning. In the circumstances in which we find ourselves today it could do this much. I would like to invite your attention to a fundamental thing, to what Dr. Rajendra Prasad had said when we got our freedom:

"I feel that the work that confronts us is even more difficult than the work which we had when we engaged in the freedom struggle. We did not have the conflicting claims to reconcile, no loaves and fishes to distribute, no power to share. We have all these now and temptations are really great. Pray to God that we shall have the wisdom and strength to rise above these and serve the country which we have liberated".

Now the question is: Which is the power or the group which can rise above these temptations and show strength and wisdom? I think in this President's Address there is the indication that this wisdom and strength is possessed by this group. We have extended

the hand of cooperation, consensus and conciliation. We want to solve the problems by a new spirit.

I would also invite your attention to what Punditji said. We talk of the "Tryst with Destiny" and a "new awakening when the world was sleeping". But Punditji had also said one crucial point that the long suppressed soul of India is wanting to have a new expression. We just ignored this factor. We did not attend to that long suppressed soul of India. A new awakening had to be done in this nation. A new social and cultural revolution had to be brought about in this nation. Since we neglected it, we find ourselves in such a situation. Which is the power which can relieve this long suppressed soul of India? It is the new force which is now emerging. We want to awaken and give the nation a new consciousness and that is what I want to emphasise.

The day before yesterday our distinguished erstwhile speaker was saying that there was something wrong because we have always been getting a fractured verdict. Believe me, we are not attending to this section of the society. Since the society itself has been fractured, when the social structure has been fractured, when we are not looking to the roots of the problem, then the politics would be what it is today. We have to attend to the social and cultural roots and I am quite sure that the productive capacities of the nation will go up, will be suddenly upgraded if we attend to the roots of the problem which have not been attended to so far for the last fifty years.

The first question is this. I would not claim that we are perfect. We have our shortcomings. But the direction which we have chosen, the motivation which we have acquired is more hopeful. It gives us a better chance to improve ourselves.

I will just tell you what the challenges are. I am not criticising the erstwhile rulers but I only want to point out the legacy that they have left for us. What challenges emerge out of this legacy? We may say that we have progressed in this revolution. Shri Balram Jakhar was just mentioning that our production in agriculture has gone up. It is not a question of producing more. It is a question of what has been our pace of development vis-a-vis the rest of the world.

We live in a competitive world. We live in a complex and integrated world. We have to see that new knowledge has come into this world. Have we utilised this knowledge? Have we acquired a greater social and cultural cohesion which the people of other nations have acquired? I will give the figures.

In 1950, India produced two per cent of the world gross domestic product; today we are producing one per cent of the gross domestic product. It has gone down. If we take the industrial production, we used to produce fourteen per cent of the Third World Production and now we produce only six per cent. If we take our share in foreign trade, it used to be 1.6 per cent at that time and it is only 0.7 per cent now. The issue is not whether we have progressed or not. The issue is, what has been the pace of development? What has been the pace of our progress vis-a-vis the world as a whole or even the developing countries? We have shown regression. This is one aspect which needs to be pondered about.

I am not talking about the distant past. Even when we had the so-called `Reforms era', the Eighth Five Year Plan has been a total failure in respect of infrastructure. There has been a infrastructure-famine. The peak shortage of power, for example was nine per cent at the beginning of the Eighth Plan and it now stands at 19 per cent. A total infrastructure-famine has been created in this country.

Let us take the so-called `Green Revolution'. Even today, it is not a question of production. It is also a question of consumption. Two hundred and fifty million people get only three-fourths of the calories that are needed; they are hungry to the extent of one-fourth of the calories needed everyday. Five crore people get only half the calories which are needed. So, we are keeping the nation famished. There may not be a famine but they are famished. Every day, they go to bed hungry. We have to see this aspect also.

I will now give an example from the recent past. I am talking about the reform period. There are about 189 infrastructure projects pending. The cost and time overruns have cost this nation Rs.31,000 crore. This is not my figure. These are the figures given in the report of the Ministry of Planning and Programme Implementation. These are figures given in the Economic Survey of India. Can this poor nation afford this cost? Who is responsible for this? Why has it happened? It is because we did not have the dedication, we did not have the devotion, we did not have the effectiveness in administration and the efficiency in administration that are needed. It is because we did not tap the potential and the capacities. So, we now have to see which is the power which can give a new direction and bring higher efficiency and higher effectiveness. The Plan was prepared by them; they knew their capacities and then planned and yet their achievement is only this. What does it show?

It shows adherence to superficiality, living in a different world. the United Nation's latest concept of measuring the poverty is called the Capability Poverty Ratio. It depends on your capacity to stay above the poverty line, enjoy a reasonably good health and have a reasonably good food. According to the latest report, in India 61 per cent of the people are below the Capability Poverty Ratio. We may say that we have done this and that. But this is what the United Nation's figures say. What is our answer to this after fifty years of freedom? Why have we been relegated to the ground? Take for example, the poverty alleviation. If we take poor people as defined in the UN paper, 55 per cent of the Indians are below the poverty line. Compared to this, 20 per cent are below the poverty line in China and in sub Sahara it is 47 per cent. We come even below sub Sahara. Such a great cultural nation, such an advanced civilization cannot compare even with sub Sahara.

If we take the extremely poor people of different categories, India's extremely poor people come to 33 per cent; in China it is eight per cent; and in Sub-Sahara it is 30 per cent. So, even there we come lower. Even our own National Home Crime Record says that 18,195 suicides were poverty-driven suicides. So, we have to ask those rulers who have ruled this country for fifty years as to what their answers are to these questions.

What about the human development index? This figure was given by my distinguished senior colleague, Shri Shanta Kumar. According to that figure, India's position is 136. Only very small countries are below us. There is one more indication, that is gender disparity index. We call this country as Mother India, Mother Universe and Mother Earth. We claim to be the followers of Shakti Cult. What is the position? Out of 136 countries, India is placed at 103, which is even below Iran and Iraq which stand 75 and 93 respectively. So, what is this?

What is our scientific output? The UNESCO report says that India's share in the world output declined by 32 per cent between 1981 and 1995. Even in the industrial output where we claim to have made a lot of progress, we have not made much progress.

What about unemployment? According to our own estimates, 19 million people are unemployed and another 125 millions are going to be added to this in the next fifteen years. This is according to the yardstick which we have provided. What is the real yardstick? We take 40 per cent of our total population as requiring employment. Whereas according to the latest international figure, 50 per cent of the population must be provided employment. If you take that figure, another nine million will be added to this.

SHRI KALPNATH RAI (GHOSI): What is the solution?

SHRI JAGMOHAN : The solution is that you kindly give an opportunity to other people who can probably do better and bring better motivation to this nation. This is what my thesis is. I am not putting the blame on you.

When we talk about foreign debts etc., we neglect the real issues. We talk about the GDP. What is the GDP? Do not measure the GDP only in terms of money. If you bring more cars on the roads, you say that our the GDP has increased. But you have to see the quality of our life. According to the latest report, what is the genuine progress index? Take, for example, the environmental degradation. Just see to what extent we have polluted our cities, rivers and air.

Forty thousand people die prematurely because of air pollution in our cities alone. Our rivers have become virtually sewers and we are making progress! Who is going to foot all these bills? You see that there are 17 crore people who go to hospitals who need not have to go to hospitals if the environment had been healthy. What we are really exporting is our environment and cheap labour and we call it progress in terms of the GDP!

Look at foreign debt. We say that we have got this much of foreign debt. I am quoting from Shri Sangma's speech during that Special Session. He said that our external debt ratio was 26 per cent of the GDP. Our per capita external debt is Rs.3286 which is 35 per cent of the per capita income of Rs.9325. When a child is born in India, he is born with 35 per cent debt. Who is going to discharge all these? Our future generation will have to pay for this. So, let us not assume that we are all living comfortably.

I do not want to take your more time of yours. Though I have got many points to say I would only want to tell that we are under guise for the FDI, the Foreign Direct Investment, in the infrastructure field. We have also got that. We do not have what is called a jobless growth, we do not have a rootless growth, we do not have a futureless growth. That is what is apprehended by all of us.

If I read all the statistics, it will take time. Unemployment is increasing after the so-called reform period. We have to modify. We have to have a programme in which we have indicated as "

बेरोजगारी हटाओ'.

We have given the indication that we will give greater emphasis on job-creating economic activities and we will do that to that extent. We may not be able to do it in five years but we will do it, definitely. We have set in the right direction.

What I am saying is that we should also guard against neo-colonialism. I will just quote one figure. In the 1980s, the FDIs moved three times faster than the rate of the world trade growth and four times faster than the world output. It means that they are completely dominating the world. At this rate, we will be a different type of a colonial state. Then the decision-making will go into somebody else's hands. We have to guard against this. This is what we mean that we should encourage swadeshi. Swadeshi means we must have our own potential.

There is a basic point which I want to make. Terrorism and subversion are connected with economic activity. In this world, what is the basic challenge? Are we equipped to deal with this challenge? Seventeen million Kalashnikovs are being produced in the world and sophisticated weapons are available easily. They are easy to be hidden and operated. We can see this network all over India and they are being used in Tamil Nadu, Kashmir, North-East, Delhi and everywhere. But what have we done? During the last two years, what changes have we made in administration and what new thinking have we done to meet the new challenges that have

come about? To what extent have we modernised our Police and administration? We are still keeping our same old rigid cadre. New managerial techniques have been forced in the administration. Are we able to become more alert? Most of the terrorist crimes are not being detected and punished. I have got figures but I will not take your time. My only point is, we are really in a situation like what W.E. Yeats says that, when things fall apart, the centre cannot hold.

"Near anarchy is loosed upon."

He said about the world. I would say about India. Everywhere, the ceremony of innocence is crowned. This is what I want to emphasise. The worst are full of passionate intensity and the best lack lall convictions.

We are trying to bring new forces. We want to get conviction to the best. We want to remove this passionate intensity of the worst. We want to get a new set of conduct, a new set of values to the nation, a new confidence, a new cultural value and a new mindset.

Our friend, Shri Balram Jakhar has now gone. He was saying, "How will you do this? How will you do that?" I was just being reminded of an Urdu verse. It said:

कुछ नहीं तो ख्वाबे सहर तो देखा है

कुछ नहीं तो ख्वाबे सहर तो देखा है

जिस तरफ कभी देखा नहीं उस तरफ देखा तो है।

We want to find a new direction. We will do our best. You have to give the opportunity. We can also explore a new possibility.

Now, I want to say a fundamental point with which I started. What is that point? I said about India. For all these issues which I am raising, let us go and look at a thing beyond the visible horizon. Let us look beyond the party politics and beyond the vote banks. And you will say that we have not done the fundamental job which we should have done. What was that? We must remember that even now, we are being dominated by the undercurrents which really shape the output events. What are the undercurrents which now dominate? The same Mr. Macaulay, the same Mr. Morris, the same Mr. Mill, the same Mr. Marx and the same Mr. Metcalfe. Again, this majority is a minority in which we have been quoted from the British concepts. Our undercurrents are being fashioned by them. What should have been on ourselves. We have become a superficial imitative nation. We first followed with a model of the socialist economy. Then, we have gone wholeheartedly to capitalist economy.

There is no originality in our thinking? What was our great asset? Every nation has a special attribute. Japan's attribute is a sort of a `cooperative spirit'. The American attribute is `enterprise'. The British attribute is `balance'. What is the Indian special attribute? It was the power of the Indian mind which could think very deeply, creatively and constructively which made India, at one time, the mother of old civilisation as Will Durant, the celebrated American historian, put it. I can quote that figure. My distinguished friend quoted the Bhagwad Gita here. When you read the Bhagwat Gita, what strikes you most is the power of the Indian mind. It is not a great philosophical poem. It is not a poem of Lord Krishna. It is also the searching question that Arjuna posed to the inquisitive mind, the creative mind. He is always very conscious. It is this asset that we have lost.

सभापति महोदय :मैं आपको रोक नहीं रहा हूं लेकिन आपकी पार्टी का समय ही कम होगा।

SHRI JAG MOHAN : I realise it. I think, everybody has taken more than half-an-hour. I have not yet completed half-an-hour. Of course, I will not take more time than what Shri Balram Jakhar has taken. I am only quoting what Will Durant said:

"India was the Motherland of our race, and Sanskrit the Mother of Europe's languages; She was the Mother of our Philosophy; Mother of much of our Mathematics; Mother, through the Buddha, of the ideals embodied in Christianity; Mother, through the village community, of self-government and democracy. Mother India is, in many ways, the Mother of us all..."

What I would like to say is that this power of the Indian mind should have been recreated and we should have reconstructed ourselves in 1947 and thereafter. That would have become original and we could have found our own solutions. We have not done that.

What was our heritage? What are the components of that heritage? What was the product of the mind? It was the concept of Karmayogi. What was the concept of ram rajya? What does ram rajya mean? It means fair and just Government through fair and just means. What does karmayogi mean? It means devoted and dedicated work. Did we recreate them in the terminology which is modern today? ... (Interruptions)

Therefore, what we need today is to recreate these concepts. If we had recreated those concepts in the terminology which are relevant today, our administration would not have been that ineffective, inefficient and full of corruption, as it is today. Had our motivation been on the line of, what I said, fair and just Government through fair and just means, would we have landed ourselves in so much of corruption? Had we that balance and harmony, would we have had this environmental degradation? Would we have had so much of a consumerist society at the top and so many shameless people down below? It is because that we lost the original touch and became so imitative that we are finding ourselves in such a situation today.

What is the challenge? This challenge can be met by the forces which are now occupying the centrestage. As I have said, I do not say that we are absolutely perfect. We have our shortcomings. But the way we have chosen, the motivation which we want to impart and the basic change we want to bring is the relevant factor. I am quite sure that we would try our best and we would put in our best and there is no reason as to why we should not succeed in giving a new turn and a new direction to this nation ... (Interruptions)

डा. शकील अहमद (मधुबनी): बोतल भी पुरानी है, शराब भी पुरानी है, केवल ढक्कन नया है

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing is going on record.

(Interruptions) *

---

* Not recorded

... (व्यवधान)

सभापति महोदय: जगमोहन जी को पूरा करने दें, जब आपको समय मिलेगा, तब आप कहें।

श्री सत्य पाल जैन: लगता है शराब के बारे में इनकी जानकारी काफी है।

SHRI JAG MOHAN : I do not want to enter into any argument. What I wanted to say is, what were our concepts? What was our value system which we emphasised at the beginning? This is what I wanted to say. These are the under currents which are shaping our polity and administration. We should attend to them if we want to solve our problems.

Shri Jakhar was saying as to how would the Government do it. What I am trying to say is that we have to impart a new dynamism, a sense of dedication and find a new way of doing things. We have to draw inspiration. Only persons with a motivation and an awakened consciousness can do it and it cannot be done by persons who are fighting for small gains here and there. Our problems are so formidable and our legacy so unfortunate that we have to do our best. That is my proposition. There is nothing antiquity about it. It is only to recreate.

I did not want to say this because of paucity of time but since you have raised the issue I would now like to quote Shri Krishna Iyer and he is not antiquated. I believe, all of you know him. What did he say?

He says:

"Manava Dharma, that is our cultural heritage, in its comprehensive sense, more modern than all the instruments of United Nations put together. It is materialistic, ethical, moral, spiritual and must be admitted to be the genesis of human values in their highest cultural sense."

I was just trying to enlighten my friend. If he still feels it is an old bottle with a new cover, I leave it to his understanding. I feel he does not understand it.

In the end I would only quote Tagore to emphasise the meaning of all that I have just said. I have slightly modified it to make it more relevant to the present time. Tagore said:

"Let us Pray where the clear stream of reason has not lost its way into the dreary deserts, sands of dead habit;

where the mind is led forward by Thee into ever-widening thoughts and actions into that heaven of purity, freedom and truth, my father let my country awake."

I say, `let my country awake into the new freedom, new truth and new justice. That is what I want to impress upon this House. I do not want to repeat all that has been said earlier. I thought this was the fundamental point which needed consideration of the House not only from this side but also from the other side. I have said this in the spirit of conciliation, in the spirit of consensus and construction. It is a matter of re-creation of this nation, re-awakening of this nation. There was a time when Swamy Vivekananda got up and gave a new confidence to this nation. I think it requires another small quotation from Sri Aurobindo because we are still being dominated by the same value system or the same rush for a thing without understanding our roots. He said:

"British rule has been the record success in history in the hypnosis of a nation. It persuaded us to live in a `death of the will', creating in ourselves the condition of morbid weakness the hypnotist desired, until the Master of a mightier hypnosis laid his finger on India's eyes and cried, "Awake". Then only the spell was broken, the slumbering mind realised itself and the dead soul lived again."

That is what Swamy Vivekananda had created. The dead soul lived again. Now, unfortunately we are under another hypnosis. The new hypnosis is, we are getting Americanisation of the Indian mind, superficial imitative mind. We have to have a new renaissance which will give a new sense and direction to the nation.

I am sorry if I have taken much time.

">SHRI SURESH KURUP (KOTTAYAM): Respected Chairman, Sir, I rise to oppose the Motion of Thanks on the President's Address.

One would have expected a shaky coalition of this sort to present a moderate and reasonable agenda of governance and that the President's Address would reflect this. But what we see here is, among platitudes certain questionable schemes that would subvert the very essence of our Parliamentary democracy. This Government has gone way beyond the limited breathe imparted to it by its razor-thin majority. The discussion on the Confidence Motion and also the President's Address has revealed this. This Government which will collapse by the bat of an eyelid of some of the new found allies of the BJP, has the audacity to say that they are going to amend the Constitution in a major way and that they are going to appoint a Commission for that.

The Prime Minister has reiterated the Government's resolve to go ahead with its move of amendment of the Constitution. It will have far-reaching consequences. He has put it as though it was the most natural thing to do. This is one aspect of the BqJPs unhidden agenda which has unobtrusively crept into the so-called National Agenda. I find it extraordinarily strange that it is stealthily moving up the Government's order of priorities.

What is the rationale behind an unprecedented move to play around with our Constitution? The forefathers of the Constitution, the Members of the Constituent Assembly who drew rich experience from the national movement, did not put an expiry date on our Constitution. They did not see this document that is meant to guide and shape the destiny of this great nation as some sort of a pain killer sold by a haberdasher in a village market. However, they did not make it inflexible either. They provided for amendments to suit developing situations which arise from time to time. The Constitution has been amended many times, we all know that.

If it is the intention of the Government to update and attune the Constitution to the present times, there is already enough leeway. Then, one wonders why the Government is so anxious to take another look at the Constitution. It is here, Sir, our worst fears are aroused.

There is only one aspect of the Constitution which we cannot amend, it has repeatedly been asserted and pointed out by the Supreme Court, and that is the basic structure. Certain vital Constitutional provisions that make our democracy a true democracy, a democracy in spirit not just in words, are the right to freedom, right to life, the provisions that guarantee certain rights to the minorities of this country. In short, these are the Constitutional core that make this 900 million strong nation stand and be counted as a civilised democracy. It is this core -- beware the new-found allies of the BJP! -- with which the BJP wants to play havoc.

I would like to recall the Prime Minister's reply to the debate on Confidence Motion where he most charmingly slipped in yet another perverse idea. The hon. Prime Minister, taking the clue from some suggestions made in this House, went so far as to suggest that once elected the Lok Sabha should complete its five-year term. I should admit that this is a tempting proposition for many Members of Parliament. But we should remember that the people of this country voted out the `Emergency-regime' which extended the term of the Lok Sabha. It was in that connection the Prime Minister made his famous speech and said that this is a parlok sabha. Sir, such clever provisions go against the very grain of democratic polity.

You cannot bring stability through the backdoor. Remember this country where leaders as diverse in their political opinion as Jai Prakash Narayan and E.M.S. Namboodiripad debated in favour of recalling the representatives of the people during their tenure. They said that people should get the right to recall their representatives. And here we have, a monarch of morality wanting to invert such democratic aspirations!

Perhaps, it is not surprising that this morality mask has slipped far too often in the last 15 days revealing the face that is not exactly humane.

Sir, the general belief is that the BJP in coalition will be moderate and will moderate its extreme and divisive positions. Now, I wonder, if the Prime Minister in his endeavour to reform the Constitution will seek the able assistance of his Law Minister, Shri Thambi Durai. He has made a fantastic insight into the penal system. He virtually acquitted an accused in at least six serious criminal cases and, Sir, the accused happens to be none other than his political leader to whom he owes his position and political career.

Neither the Prime Minister in his reply to the debate on the Confidence Motion, nor has any other Member cared to reply to this point. Repeatedly, Members were raising this point. What is the attitude of the Government regarding these cases? Is it the attitude of the Ministry itself? What is the attitude of the Prime Minister? (Interruptions) Why are you interrupting? You can reply. I think, the hon. Home Minister would intervene. (Interruptions)

I would also like to point out that some serious situations have arisen in some of the State Legislatures where the Anti Defection Law is being subverted with impunity. Perhaps, the Government and its Ministers were advocating dramatic changes to the law of the land to see that this has an acceptable precedent. The fact that the BJP, the leading party of the Central Government, is in office in some of these States, should be a matter of concern to all.

Sir, I, as a Member of this House, had witnessed the adoption of the Anti Defection law which was unanimously adopted with great fanfare. It was adopted in the first Session of the Eighth Lok Sabha itself.

Sir, all the Members of this House cutting across party lines reposed faith in the impartiality of the Speaker and he was accepted as the final arbitrator. The faith was not in the individual but in the august office of the Speaker. However, in a matter of 13 years, the conduct of certain Speakers on this count has been called into question by the public as well as the media.

Here, what has degenerated is not the law but its implementation. We witnessed in the last couple of weeks the BJP's single-minded pursuit of majority at any cost. I am afraid that in the days to come the provisions of the Anti Defection law will be stretched to many directions.

I am afraid that we may witness it in this House itself. It is here that the office of the Speaker of this House becomes extremely crucial for parliamentary democracy.

Sir, the very edifice of this Government is one that smacks of deceit, betrayal and manipulation. The disturbing signs this Government has given through the President's Address should put any right thinking citizen on the alert. Hence, I oppose this Motion of Thanks on the President's Address.

">

श्री बेनी प्रसाद वर्मा (केसरगंज) : सभापति महोदय, आपने मुझे इस डिबेट में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं। मैं राष्ट्रपति जी ने अभिभाषण पर प्रस्तुत किये गये धन्यवाद के प्रस्ताव का विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं औपचारिक रूप से इसका विरोध करना नहीं चाहता हूं बल्कि हर सच्चे भारतीय को हृदय से इस सरकार का विरोध करना चाहिए।

हमारा देश जो अपनी आजादी का ५०वां साल मना रहा है वह उस महा-मानव की तपस्या का परिणाम है जिसने एक लंगोटी पहनकर पूरे संसार को विजय के लिए अहिंसक क्रांति का एक नया हथियार दिया। इसे हम अपना दुर्भाग्य ही कहेंगे कि हम आजादी की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं लेकिन उन महा-मानव के अनुयाइयों को और उनके दर्शन को हम फ्रिज में रखते जा रहे हैं। उनका नाम लिए बगैर देश नहीं चल सकता। सत्ता में बैठने की कल्पना करने वालों को महात्मा गांधी का नाम लेना ही पड़ेगा, और लेना ही पड़ा।

सभी जानते हैं कि आप अपने जन्मकाल में गांधी जी के कितने हमदर्द थे और सत्ता-काल में कितने प्रशंसक हैं। आपने महात्मा गांधी को इस अभिभाषण में मर्यादा-पुरुषोत्तम ">कहा है, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

गांधी जी का इस देश में राजनैतिक आदमी जितना सम्मान करता है उसके उतने पाप कट जाते हैं। अपने पाप काटने के लिए जहां आपने महात्मा गांधी को मर्यादा-पुरूषोत्तम कहा था वहीं नाथूराम गौडसे को आजाद भारत का प्रथम आतंकवादी कह देते। लेकिन वह कहने का आपमें साहस नहीं है, इसलिए आपकी अपने कैडर को ट्रेनिंग दूसरी है और जनता के वोट मांगने का आदर्श दूसरा है यानी मुंह में राम, बगल में छुरी। इस देश के लोगों ने कहावत सुनी होगी, इस देश के बच्चों ने किताबों में पढ़ा होगा। नयी लोक सभा की सरकार को साकार रूप में देखने का अवसर जो ५० वीं वर्षगांठ पर मिला, यह हमारी निरंतर गिरती हुआ राजनीति के कारण हैं, हमारे पूर्व-अधिकारियों की गलती के कारण है, जिसका हमें अफसोस होता है।

... (व्यवधान)

वे तमाम नेता जिन्होंने हमारा नेतृत्व और मार्गदर्शन भी किया, आज उधर बैठे हुए हैं। जिन्होंने सिद्धांतों से समझौता कभी न करने का पाठ पढ़ाया कि सिद्धांतों से समझौता कभी न करना, वे आज उधर बैठे हुए हैं। मेरी इस बात को हमारे नेता जार्ज फर्नान्डीज साहब कहीं बैठे सुन रहे होंगे। हम उनका आदर आज भी करते हैं और हमेशा करते रहेंगे।

इस देश में कोई भी राजनीति करने वाला, देश पर शासन करने का सपना देखने वाला आदमी या नेता, जब तक इस देश की सामाजिक संरचना को अपने दिमाग में नहीं रखेगा, तथा गांधी जी के दर्शन को आत्मसात नहीं करेगा, तब तक वह इस देश को ईमानदारी से नहीं चला सकता है। उधर बैठे लोगों ने वोट के लिए क्या-क्या पाप नहीं किए हैं।

16.00 hrs

द्वारा जारी वोट बड़ा नहीं होता, देश और समाज बड़ा होता है। यही कारण है कि आपने महामहिम राष्ट्रपति का आठ पृष्ठों का अभिभाषण जल्दबाजी में तैयार किया है, उसकी न कोई दिशा है और न कोई नीति है।

१६०१ बजे (श्री पी.एम. सईद पीठासीन हुए)

हमारे कांग्रेस के साथी ने कहा कि वही पुरानी शराब और बोतल है, सिर्फ लेबल नया है। इसमें क्या गलती है? आपका वही नेशनल एजेंडा है और वही पुराना अक्षरक्षः राष्ट्रपति जी का अभिभाषण है। जनता को ठीक से नहीं बताया गया कि किस काम को कैसे किया जाएगा? आपने कहा कि गरीबी और निरक्षरता खत्म कर दी जाएगी तथा अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी जाएगी।

श्री राजवीर सिंह : क्या आप इनके विरोधी हैं?

श्री बेनी प्रसाद वर्मा : हम इनके विरोधी नहीं हैं। शायद आपको पता नहीं देश के लोग कैसे गांवों में बसते हैं? अभी भी ऐसे जिले हैं जहां ७०-७५ फीसदी लोग झुग्गी-झोंपड़ियों में रहते हैं।

... (व्यवधान)

इसकी गणना भी हुई है। ... (व्यवधान) मैं ऐसे घर में पैदा हुआ हूं ।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : राजवीर सिंह जी, आपने इसकी शुरुआत की है। आप जरा आराम से इनकी बात सुनिए।

श्री बेनी प्रसाद वर्मा : संगमा जी से ठीक कहा कि आप राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में संवैधानिक बातों को भी ठीक से लिखना भूल गए। संविधान में जो डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स हैं, जिन को लागू करने की जिम्मेदारी सरकार की है, उसमें १४ वर्ष तक की आयु के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है। आपने जल्दबाजी में इतने महत्वपूर्ण दस्तावेज को प्राथमिक शिक्षा लिख दिया। इसमें जरा भी गम्भीरता नहीं है। आप चाहते हैं कि किसी तरह सरकार चल जाए, जोड़-तोड़ हो जाए और इस देश में समाज के उच्च वर्ग का प्रभुत्व स्थापित हो जाए। इसके अलावा आपकी कोई कल्पना नहीं है। आपका जो मूल संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ है, उसके और आपके आज तक के इतिहास को देखा जाए तो उसमें कोई अच्छी बात देखने को नहीं मिलेगी।

१९२५ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की गई थी। क्या उस समय हिन्दू धर्म को कोई खतरा था? उसको खतरा नहीं था। उस समय आजादी हासिल करने के लिए समाज के दबे, कुचले लोग गांधी जी के पीछे खड़े थे। उस समय आजादी हासिल हो जाती तो यहां समाज के दबे, कुचले लोगों का शासन स्थापित हो जाता। १९२१ में जब गांधी जी द्वारा शुरु किया गया सत्याग्रह सफल हो गया तो हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच लड़ाई कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का गठन किया गया। आपने पहले भी केन्द्र में सरकार बनाने में सहयोग दिया। बरसों से उपेक्षित लोगों की जब संसद में बात की गई और मंडल कमीशन लागू हो गया तब आपने राम को कैद से निकालने की बात करनी शुरु कर दी। आपने राम मन्दिर आन्दोलन शुरु किया। अच्छा होता अगर यहां जार्ज साहब बैठे होते। वह हिन्दुत्व की परिभाषा कर रहे थे। उन्होंने 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' का उल्लेख किया। उन्होंने यहां गांधी जी का नाम लिया। उन्होंने कहा कि गांधी ने कभी भारत को हिन्दुस्तान कहा था। सही बात है। अगर जार्ज साहब यहां होते तो मुझे ज्यादा आनन्द आता। मैं अगर कोई गलत बात कर रहा होता तो वह उसका जवाब देते। जार्ज साहब ने २०-२१ मार्च, १९९३ को हैदराबाद में जो कुछ कहा था, मैं उसे पढ़ कर सुनाना चाहता हूं। अगर मैं उसे पूरा पढ़ूंगा तो समय ज्यादा लग जाएगा। मैं उसका सिर्फ एक पैराग्राफ पढ़ कर सुनाना चाहूंगा।

"The run-up to the destruction of the Babri Masjid saw a virulent campaign of hatred by the Sangh Parivar towards the Muslims not much different from what was unleashed against the Jews in Germany when Adolf Hitler was making a bid for power. The new definition of nationalism being synonymous with Hindu Rashtra has in it echoes of the slogan of the exclusivity and superiority of the German race that was given by Hitler. And with it, the Sangh Parivar has not only given a new dimension to the two-nation theory of Jinnah, but has, even if vicariously, provided justification to the many insurgencies in different parts of the country".

श्रीमान इस तरह की बात जार्ज साहब ने हैदराबाद में संघ परिवार के बारे में कही थी। अब हिन्दुत्व की परिभाषा बदल रही है। यह इतिहास हमेशा अमर रहता है। इसको आगे आने वाले बच्चे भी पढ़ते हैं। इस प्रकार से आप उनको क्या दिशा दे रहे हैं? यह सरकार या सत्ता केवल राजनीतिक सत्ता-सुख या सरकारी सत्ता भोग के लिए नहीं होती, यह नई पीढ़ी को नई दिशा देने के लिए भी होती है। आज हमारे गृह मंत्री के रूप में जो यहां बैठे हैं, जब मस्जिद तोड़ी जा रही थी तब ये वहां भी मौजूद थे। जब इतिहास लिखा जाएगा, तो क्या यह छूट जाएगा कि जब भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में सरकार बनी तो उन्होंने पंथनिरपेक्षता की दुहाई दी और उसी के इशारे पर बाबरी मस्जिद का डिमौलीशन हुआ और उस समय इस सरकार के गृह मंत्री भी वहां पर मौजूद थे। पंथ निरपेक्षता का इससे बड़ा अनादर और मजाक क्या हो सकता है? यह सही है कि यदि इस देश में धर्मनिरपेक्षता का सिद्धान्त खत्म हो जाए, तो इस देश का जो नक्शा आज है वह नहीं रह जाएगा।

महोदय, भारतीय जनता पार्टी की ओर से चाहे जितना लंबा-चौड़ा भाषण दिया जाए लेकिन इस देश को नहीं बचाया जा सकता है। यदि इस देश को बचाया जा सकता है, यदि इस देश को अक्षुण्ण रखा जा सकता है, तो गांधी जी द्वारा बताए गए पंथनिरपेक्षता के सिद्धान्त द्वारा ही बचाया जा सकता है। मैं यहां पर गांधी जी द्वारा कहे गए शब्दों को उद्धृत करना चाहता हूं - 'हिन्दुस्तान उन सभी का है, जो यहां पैदा हुए हैं, यहीं पले हैं और जो किसी दूसरे देश को अपना नहीं मानते। इसलिए यह जितना हिन्दुओं का है उतना ही पारसियों का, या यहूदियों का, या भारतीय ईसाइयों का, या मुसलमानों और अन्य अहिन्दुओं का है। स्वतंत्र भारत हिन्दू-राज नहीं, भारतीय-राज होगा जिसका आधार किसी भी धार्मिक मत या सम्प्रदाय का बहुसंख्यक होना नहीं, बल्कि धर्मनिरपेक्ष रूप में संपूर्ण जमात का प्रतिनिधित्व होगा। मेरी कल्पना के अनुसार कई सम्प्रदाय वाले मिल जुलकर हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बना सकते हैं। वे अपनी सेवाओं के हिसाब से और अपनी योग्यता के आधार पर चुने जाएंगे। धर्म एक व्यक्तिगत मामला है, जिसका राजनीति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। विदेशी प्रभुत्व ने देश के अप्राकृतिक टुकड़े कर डाले हैं। विदेशी प्रभुता के न रहने पर हमें इस मूर्खता पर हंसी आएगी कि झूठे आदर्शों और नारों से हम किस तरह चिपटे रहे।'

श्रीमान गांधी जी का नाम तो लिया गया, लेकिन सच्चे अर्थों में अगर उन्हें आत्मसात करना है, तो इस मूर्खता को भी त्यागना चाहिए। जब संसद में आएंगे, तो धर्मनिरपेक्ष या पंथनिरपेक्ष होने का दम भरेंगे और बाबरी मस्जिद टूटने के बाद जब जनता में वोट मांगने जाएंगे, तो बड़े-बड़े पोस्टर लगाएंगे और लिखेंगे कि 'जो कहा-सो किया।' अगर इस प्रकार से कथनी और करनी में अन्तर रहेगा, तो गांधी जी को मात्र किताबों में मर्यादा पुरुषोत्तम लिख देने से आप गांधी जी को मानने वाले नहीं बन सकते।

श्रीमन, उस दिन जार्ज साहब ने भी कहा था और मैं आज उसी बात को फिर दोहराना चाहता हूं कि आप इस देश में अभिजात्य वर्ग का शासन स्थापित करना चाहते हैं। इस देश के करोड़ों दलितों और पिछड़ों को शासन से महरूम रखने के लिए धर्म का आडम्बर करना चाहते हैं- यह चलने वाला नहीं है। गांधी जी ने कहा था कि हिन्दू अगर यहां बहुमत में हैं, तो इसलिए हैं कि अभी हिन्दू अपने को कष्टभोगी मानने के लिए मजबूर हैं। सुख भोगी हिन्दू बहुत कम हैं जिनका प्रतिनिधित्व गृह मंत्री जी या प्रधान मंत्री जी करते हैं। इन कष्टभोगी हिन्दुओं की संख्या इस देश में ज्यादा है और सुखभोगी हिन्दुओं की संख्या कम है। इसलिए इन कष्टभोगी हिन्दुओं को संगठित होने से कोई नहीं रोक सकता, उसमें अल्पसंख्यक भी जुड़ेंगे, उसमें दूसरे धर्मों के लोग भी जुड़ेंगे।

महोदय, यह अल्पमत की सरकार, जिसे कहते हैं कि यह अपना कार्यकाल पूर्ण करेगी, हमारा कहना है कि यह सरकार छः महीने से ज्यादा सत्ता में रहने वाली नहीं हैं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर आए धन्यवाद प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

... (व्यवधान)

सन्यास से नहीं कर्मयोगी बनकर आपको हटाएंगे।

">

मेजर जनरल भुवन चंद खन्डूडी, एवीएसएम (गढ़वाल): माननीय सभापति जी, मैं महामहिम राश्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। इस बार का राष्ट्रपति जी का अभिभाषण, जो सरकार की नीतियों की घोषणा है, एक ऐतिहासिक भाषण है। जिसमें माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार ने एक अटल निश्चय किया है कि इस देश की पीड़ा, दुख, दर्द को दूर करने के लिए पहल करनी चाहिए। उन्होंने इस अभिभाषण के द्वारा एक नये भारत का निर्माण करने का संकेत, संकल्प किया है। जिससे हमारा भारत फिर से अतीत के भारत जैसा गौरवशाली, वैभवशाली और समृद्धशाली बन सके। इस दिशा के लिए देश और उसकी सरकार काम करेगी, इस प्रकार का संकल्प इस अभिभाषण में है। इस देश का इतिहास बहुत गौरवशाली है। हम अपनी गौरवशाली संस्कृति, उच्च संस्कार, चरित्र आदि दुबारा अपने जीवन में ला सकें, अपने प्रशासन में उसको सम्मिलित कर सकें।

... (व्यवधान)

श्री राजवीर सिंह : सभापति जी, यह सुनना नहीं चाहते।

मेजर जनरल भुवन चंद खन्डूडी,एवीएसएम (गढ़वाल): सुनना नहीं चाहते तो बाहर चले जायें।

सभापति महोदय : आप भी कंट्रीब्यूट कर रहे हैं।

मेजर जनरल भुवन चंद खन्डूडी,एवीएसएम (गढ़वाल): इस दृष्टिकोण को लेकर यह अभिभाषण दिया गया है और सरकार ने अपनी नीतियों की घोषणा की है। इसके लिए मैं सरकार को हार्दिक बधाई देता हूं और महामहिम राष्ट्रपति महोदय का आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने इस प्रकार का विचार सदन के सामने रखा।

महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के कुछ बिन्दुओं पर ही मैं समय सीमा के अन्दर अपने विचार रखूंगा। इससे पहले मैं सदन में एक और बात पर अपने विचार रखना चाहता हूं। यहां पर विश्वास मत के दौरान और आज भी चर्चा हुई कि यह अभिभाषण अति महत्वकांशी है। माननीय जाखड़ जी ने ठ्यूटोपियन' शब्द का इस्तेमाल किया और पूर्व संचार मंत्री, श्री वर्मा जी ने भी कुछ मजाक उड़ाते हुए कहा कि यह सब काम कैसे हो जायेगा? मैं सदन से निवेदन करना चाहता हूं कि जिस प्रकार की निराशा का वातावरण आज इस देश में बना हुआ है, जिस प्रकार का पेसीमिसम हर इंसान के दिल में छा गया है, उसको उभारने के लिए जब तक आप लम्बा, दूरदर्शी प्रोग्राम जनता के सामने नहीं रखेंगे , जब तक आप जनता को नहीं बतायेंगे कि लम्बे समय में देश को आप किस दिशा में ले जाना चाहते हैं तब तक आप पर कोई विश्वास करने वाला नहीं है। देश के अंदर जो निराशा का वातावरण बन गया है, उस निराशा के वातावरण को यदि आप खत्म करना चाहते हैं तो आपको अपने दूरगामी उद्देश्यों के बारे में जनता को बताना पड़ेगा। उनको समझाना पड़ेगा कि सचमुच कोई सरकार ऐसी है, कोई लोग ऐसे हैं जो चाहते हैं कि हम देश का उत्थान करें। सिर्फ भाषणबाजी करने के अलावा हम कुछ करना चाहते हैं और इसके लिए देश के सामने, जनता के सामने कुछ उद्देश्यों को रखना जरूरी है। आज बहुत से लोग मजाक उड़ाने लगे हैं कि भारत देश महान है। सब जगह दिल्ली आदि में लिखा है कि मेरा भारत महान है। मैंने थोड़े दिन पहले आटोरिक्शा के ऊपर लिखा हुआ पढ़ा कि १०० में से ९९ बेईमान, फिर भी मेरा भारत महान। आज देश के सामने यह मानसिकता बैठ गयी है कि हम सब बेईमान हैं। यह कैसे होगा? इस देश का कुछ होने वाला नहीं है, चलने दो सब चलता है। भ्रष्टाचार चलता है। भ्रष्टाचार पहले भी होता होगा। मैं अपने बचपन के जीवन के बारे में कहता हूं कि भ्रष्टाचार तब भी था लेकिन उस समय घूस के पैसे को लोग छुपाते थे। उसका उपयोग नहीं करते थे, डर कर उसका उपयोग करते थे। आज क्या हो गया है? भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। आज हमारी बड़ी-बड़ी कोठियां व आलीशान बिल्डिंगें हैं और जो आदमी भ्रष्टाचार नहीं करता, जो आदमी घूस नहीं लेता, उसे कहते हैं कि उसको नौकरी करनी ही नहीं आती।

... (व्यवधान)

आपको यदि सिर्फ टिप्पणी करनी है तो करिए लेकिन कभी तो देश के लिए सीरियसली सोचिए। टीका-टिप्पणी करने से काम नहीं चलने वाला है।

... (व्यवधान)

आप मुद्दों पर, विचारों पर बात करिए। आप पचास साल तक सुख राम जी को ट्रेनिंग देकर हमारे पास भेज सकते हैं, रातों-रात ट्रेनिंग खत्म नहीं होगी।

... (व्यवधान)

श्री कान्ति लाल भूरिया : जिसके घर में चार करोड़ रूपया निकला, आपने उसे डिप्टी सी.एम. बना दिया।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिए। खंडूरी जी, आप अपना भाषण दीजिए।

... (व्यवधान)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खंडूडी,एवीएसएम (गढ़वाल) : सभापति जी, आपके आदेशानुसार मैं इनकी बातों का जवाब नहीं दे रहा हूं। ये मेरी बात से सहमत न हों लेकिन गंभीरता से सुन तो लें। कभी तो सीरियसली सदन में बैठिए, यह मसखरापन कब तक चलेगा। यह देश आज पचास साल की आजादी के बाद कहां पहुंच गया है।

इस अभिभाषण में जो दिशा-निर्देश किया गया है, वह इस उद्देश्य से किया गया है कि देश का आत्म-सम्मान जागे, इस देश को ऐक्टिवली हिस्सा लेने का मौका मिले। इस देश का कुछ उत्साह तो हो। इस दृष्टिकोण से किया गया है। प्रधानमंत्री जी ने शनिवार को स्पष्ट कह दिया कि इसमें हर चीज की समय सीमा नहीं दी गई है कि कोई एक साल में होगा, कोई दो साल में होगा, कोई पांच-दस साल में होगा। लेकिन उस रास्ते में तो हम चलें, उस दिशा को तो हम लें। यदि आप समझते हैं कि उस दिशा में चलना गलत है तो कहिए। लेकिन इसका हंसी-मजाक उड़ाना कि क्योंकि हम कहते हैं कि सबको शिक्षा देंगे, सबको रोजगार देंगे तो क्या कोशिश करना गलत है। क्या उन उद्देश्यों का वर्णन करना गलत है? इसलिए मेरा निवेदन है कि यह सदन समझे कि किन उद्देश्यों से यह दिया गया है।

अब मैं उन बिन्दुओं पर आता हूं जो अभिभाषण में हैं। सबसे पहले मैं बिन्दु नम्बर २८ पर आ रहा हूं जो उत्तरांचल के बारे में है। मैं राष्ट्रपति जी और माननीय वाजपेयी जी की सरकार का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं कि हमारे क्षेत्र की लम्बे समय से जो मांग चली आ रही थी, उसे इस सरकार ने माना है और उसे कार्यान्वित करने के लिए एक संकल्प लिया है। मैं उत्तरांचल की सारी जनता की तरफ से राष्ट्रपति जी, अटल जी और उनकी सरकार को धन्यवाद देता हूं, आभार व्यक्त करता हूं। मैं साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी और उसकी सहयोगी पार्टियों, जिनकी लम्बी लिस्ट है, १३ सहयोगी पार्टियां हैं जिन्होंने इसे नैशनल एजैंडा में शामिल किया है, का भी आभार व्यक्त करता हूं।

... (व्यवधान)

उत्तरांचल और छोटे प्रदेश के बारे में कभी यह शंका यहां पर राष्ट्रपति जी के विश्वास मत द्वारा पैदा की गई कि इससे यह देश कमजोर होगा। मैं उन सदस्यों से निवेदन करना चाहूंगा कि कृपया आप समझिए, उन क्षेत्रों की परिस्थिति क्या है, क्यों वे पृथक प्रदेश की मांग करते हैं। जब १९९४ में आंदोलन चरम सीमा पर था, मैंने वहां खड़े होकर कहा था कि हम उत्तरांचल का निर्माण इस देश को शक्तिशाली बनाने के लिए करना चाहते हैं। यदि कोई चीज इस देश के अहित में होगी तो हमें उत्तरांचल नहीं चाहिए। हम देश को कमजोर करने के लिए उत्तरांचल नहीं मांग रहे हैं, हम चाहते हैं कि यह छोटा प्रदेश, जो भौगोलिक दृष्टि से अलग है, इतना शक्तिशाली बने कि देश को उस पर गौरव हो और मैं सदन को आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि सात से दस साल के अंदर यह क्षेत्र सैल्फ सफिशैंट होगा।

श्यह आर्थिक रूप से भी और अन्य संसाधनों से भी देश में एक ऐसा मजबूत राज्य बनकर उभरेगा, जिस पर पूरे देश को गौरव होगा। ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिनको लोग समझ नहीं पा रहे हैं। जैसे योजना आयोग को ही ले लीजिए। योजना आयोग के जो नार्मस बने हुए हैं, वे दिल्ली के लिए भी वही हैं और पहाड़ के लिए भी वहीं है। जो नार्मस मैदान के लिए हैं, वही माउंट ए वरेस्ट के लिए हैं। हमारे यहां योजना आयोग के अनुसार प्राइमरी हैल्थ सेंटर करीब-करीब पूरे हो चुके हैं। जब हम इनके पास इसके लिए जाते हैं तो ये कहते हैं कि हमारे मानदंडों के हिसाब से आपका कोटा पूरा हो गया है। लेकिन वास्तव में वहां एक नहीं सैंकड़ों गांव ऐसे हैं, जहां गर्भवती महिला को कुर्सी पर बांधकर ढलान पर छः-सात घंटे तक धकेल कर प्राइमरी हैल्थ सेंटर लेना जाना पड़ता है। अगर कोई वाहन उपलब्ध हो जाये तो तीन-चार घंटे में हम प्राइमरी हैल्थ सेंटर पहुंचते हैं।

इसी तरह से वहां सैंकड़ों नहीं, हजारों गांव ऐसे हैं जहां पीने का पानी नहीं है, जबकि गंगा,यमुना हमारे क्षेत्र से निकलकर और बहकर जा रही है। इसलिए मेरा यह कहना है कि यह मांग देश को कमजोर करने के लिए नहीं है। यह विकास की दृष्टि से है। भौगोलिक परिस्थिति ऐसी है कि अगर उस एरिया को प्रशासनिक रूप से छोटी इकाई बना दिया जाए तो इससे देश भी समृद्धशाली होगा। लेकिन इसमें भी राजनीति लाई जाती है। माननीय शिवशंकर जी ने उस दिन कहा था कि छोटे राज्य इसलिए बनाना चाहते हैं कि आप इस समय सरकार में हैं। जबकि राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के समय इन्हीं की कांग्रेस पार्टी के सदस्य श्री मुत्तेमवार जी, जो इनके पीछे बैठते हैं, तब कहा था कि हम विदर्भ चाहते हैं। आप विरोध कर रहे हैं, लेकिन आपके साथी छोटे राज्य की मांग कर रहे हैं। इसलिए आप इस पर गम्भीरता से सोचें। मुझे आशा है कि सरकार इस सम्बन्ध में जल्द ही इसके लिए बिल लाएगी। सरकार को चाहिए कि आगामी बजट सत्र में इससे सम्बन्धित बिल लाए और सभी पक्षों के लोग इस पर अपना आशीर्वाद दें।

बिंदु नम्बर चार में आम सहमति की बात कही है। मेरा मानना है कि यह सरकार की नीतियों का मूल मंत्र है। चाहे सरकार अल्पमत में हो या बहुमत में हो, जब तक आम सहमति से देश नहीं चलेगा, तब तक देश में उन्नति नहीं हो सकती। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। १९८४ में कांग्रेस को दो तिहाई बहुमत था। आम सहमति से देश चलाते तो सारी समस्याएं हल हो सकती थीं। लेकिन कुछ स्वार्थी लोगों ने, जो सब तरफ हैं, उन्होंने यह होने नहीं दिया। जो आम सहमति का वातावरण बनना चाहिए था, वह नहीं बना और उसका क्या नतीजा हुआ, यह सभी जानते हैं। आम सहमति से कई काम हो सकते हैं। इसलिए आम सहमति का वातावरण देश में बनना चाहिए। एक-दूसरे पर जो अविश्वास की भावना है, उसको दूर किया जाए। राजनीति होनी चाहिए, लेकिन देश के हित के लिए जो बड़े-बड़े मुद्दे हैं उन पर आम सहमति होनी चाहिए।

१०वीं लोक सभा में मैंने विपक्ष में खड़े होकर कई बार सुझाव दिया था कि क्या हम लोग कुछ मुद्दों के छांट नहीं सकते और उनको बिना राजनीति के क्यों नहीं सुलझा सकते। लेकिन मैंने देखा है कि जब हम यहां भाषण देते हैं तो ऊपर देखते हैं कि कल क्या छपने वाला है। इसलिए लोग अपनी पार्टी लाइन लेते हैं और अपनी पब्लिसिटी करते हैं।

कुछ बिंदुओं पर जैसे पोप का चुनाव होता है, हमें भी करना चाहिए । सारे कार्डिनल एक मकान में बंद हो जाते हैं और बाहर से ताला लगा दिया जाता है, किसी को अंदर जाने की इजाजत नहीं होती और जब तक सर्वमान्य निर्णय पर नहीं पहुंच जाते, अंदर ही रहते हैं, भले ही उसमें एक सप्ताह लगे या एक महीना लगे और जब निर्णय हो जाता है तो चिमनी से सफेद धुंआ निकलता है तो लोग समझ जाते हैं और ताला खोल दिया जाता है। लोग बाहर आते हैं तो किसी को यह पूछने का अधिकार नहीं होता कि अंदर क्या हुआ, क्योंकि सर्वसम्मति से एक राय होती है।

हमें इस प्रकार की नीति अपनानी चाहिए कि सब पार्टीज के नेता इकट्ठे बैठे और सब समस्याओं पर विचार करें, चाहे जनसंख्या की समस्या हो, स्वास्थ्य की समस्या हो या शिक्षा की समस्या हो। केवल तभी हम शायद किसी मंजिल पर पहुंच सकेंगे। यह सरकार आम सहमति की बात करती है। यह आशावादी विचार है। मुझे आशा है तथा मैं प्रार्थना करता हूं कि सब लोगों से कृपया कहिए कि कुछ मुद्दे तो ऐसे छांट लें जिन पर हम आम सहमति से काम करें।

मेरा अगला पैरा है- काम करके दिखाएं। यह कोई नया विचार नहीं है कि सरकार को काम करके दिखाना चाहिए। आज से नहीं बहुत पहले से जनता यह चाहती है कि सरकार कुछ काम करके दिखाए। मुझे याद आता है कि जब स्वर्गीय राजीव गांधी जी की सरकार १९८४ में बनी थी तो उनसे पूछा गया था कि आपकी सरकार कैसी होगी, उन्होंने कहा था:

My Government will be Government that work.

किसी पत्रकार ने उनसे पूछा कि आपके पहले की सरकार क्या काम नहीं कर रही थी; तो उन्होंने कहा था:

My Government will be the Government that works faster.

आज वास्तव में कुछ काम काम करके दिखाने की जरूरत है। उस नेता से बड़ी आशा थी। मैं उस समय फौज में था। हम भी सोचते थे कि वह युवा नेता हैं, देश का चेहरा बदल देंगे, दो तिहाई बहुमत से जीतकर आए हैं। खासकर मुम्बई में कांग्रेस के अधिवेशन में उन्होंने कहा था कि पॉवर ब्रोकर्स को हम खत्म करेंगे। देश में उनसे एक नई आशा जागी थी लेकिन सब खत्म हो गया। अतः मैं कहना चाहता हूं कि सरकार जमीन पर, असलियत में कुछ काम करके दिखाए, केवल कागजों पर ही काम न करे।

हमारे देश में आज़ादी के पचास सालों के बाद क्या स्थिति है? कितना पैसा खर्च हो गया, वह एक लम्बी चर्चा का विषय है लेकिन जमीन पर, वास्तव में सरकार को काम करके दिखाना है तथा उसमें सरकार को एकांउटेबिलिटी लेनी होगी। जिस व्यक्ति को काम दिया गया है, अगर उसने अच्छा काम किया है तो उसे प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और यदि गलत काम किया है तो सजा मिलनी चाहिए।

हमारे देश में पचास साल के अंदर प्रगति हुई है लेकिन उल्टी-पुल्टी प्रगति हुई है। अमीर और अमीर होता गया तथा गरीब और गरीब होता गया। मैं एक उदाहरण देना चाहता हूं। आज पांच सितारा होटल में एक कल्चर बन गया है। वहां पांच हजार, छ हजार रु. की एक प्लेट होती है। वहां जाने वाले व्यक्ति को भूख नहीं होती। वह केवल थोड़ा-बहुत टुकड़ा ले लेता है और बाकी सब खाना जब कचरा-पेटी में जाता है तो उस कचरा-पेटी में कुत्ता और इंसान का बच्चा एक साथ झपटता है। कुत्ता मजबूत हो जाता है और इंसान का बच्चा कमजोर हो जाता है क्योंकि वह कुत्ते से छीन नहीं पाता। उसी पांच सितारा होटल में एक कमरे में सोने के लिए पन्द्रह हजार रुपए एक व्यक्ति देता है जबकि बाहर सड़कों पर, फुटपाथ पर एक गरीब आदमी के पास ओड़ने के लिए कम्बल तक नहीं है। अकेली दिल्ली में ही न जाने कितने लोग ठंड से मर जाते हैं।

हमारे देश के ऊपर कर्जा बहुत बढ़ गया है, जिसके आंकड़े अभी जगमोहन जी ने दिए हैं। मैं मानता हूं कि प्रगति हुई है लेकिन कुछ जनसंख्या के बढ़ने के कारण और कुछ प्लानिंग में कमी होने के कारण ठीक से प्रगति नहीं हो पाती। जनसंख्या की समस्या का समाधान भी हमें आम राय से करना चाहिए। १९९१ में दसवीं लोक सभा में एक इसी प्रकार का प्रस्ताव आया था।

MR. CHAIRMAN : Please conclude because I have got a very long list of Members of your Party.

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूडी,एवीएसएम (गढ़वाल): महिलाओं के बारे में पैरा १३-१४ में उल्लेख किया गया है। बेरोजगारी के बारे में पैरा १६ में जिक्र किया गया है। बेरोजगारी एक अत्यंत उलझी हुई समस्या है। जॉब क्रिएट करने से कुछ नहीं होगा। हमारी शिक्षा पद्यति में सिर्फ हाई स्कूल, बी.ए., एम.ए. के सर्टिफिकेट दिए जाते हैं। जब तक हमारी शिक्षा पद्धति नहीं बदलेगी, जब तक हम शिक्षा को जॉब ओरिएंटेड नहीं बनाएंगे, तब तक शिक्षा में सुधार नहीं हो सकेगा और देश का भी भला नहीं हो सकेगा।

श्दूसरी बात, आज सब आदमी सरकारी नौकरी चाहते हैं। इसकी वजह यह है कि स्वरोजगार की कई योजनायें होते हुए भी उनमें इतना भ्रष्टाचार है, इतनी लालफीताशाही है कि ये योजनायें कारगर नहीं हो पाती हैं। यदि बरोजगारी की समस्या को आप हल करना चाहते हैं, तो आपको स्वरोजगार योजना को ठीक करना होगा।

जहां तक केन्द्र और राज्यों के संबंधों की बात है, अधिकार तो दिये जायें, लेकिन अधिकार के साथ-साथ जो पंचायत स्तर पर भ्रष्टाचार फैल गया है, उस पर आपको रोक लगानी होगी। यह स्थिति जवाहर रोजगार योजना की भी है। गांवों में आचरण खराब हो रहा है, आपको इस आचरण को ठीक करने की आवश्यकता है।

सुरक्षा के बारे में भी इस योजना में कहा गया है। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि इस राजनीतिक माहौल में हमने सुरक्षा के मुद्दे को पीछ ढकेल दिया है। हम नेशनल सिक्योरिटी काउन्सिल की बात कहते हैं और अन्य बातों के बारे में भी कहते हैं। गोपनीयता के बारे में देश को गुमराह किया जाता है और तथ्यों को छिपाया जाता है। इस बारे में मानसिकता को बदलना होगा और सतर्क रहना होगा। साथ ही सशस्त्र सेनाओं के बारे में मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि सशस्त्र सेनाओं के साथ न्याय नहीं हुआ है। मैं इस बारे में बहुत कुछ कह सकता हूं, लेकिन समय की कमी है। इस बारे में जो मानसिकता बन गई है, वह इन शब्दों में व्यक्त की जा सकती है -

God and soldiers are remembered in distress and difficulty. Distress over and difficulty resolved, God is forgotten and soldiers slighted.

यह नहीं होनी चाहिए।

अंत में, मैं एक बात कहना चाहता हूं। विसंगतियों का मूल कारण यह है कि हमारा संस्कार, हमारा आचरण और हमारा चरित्र खत्म हो गया है। इस बारे में अभिभाषण में भी जिक्र किया गया है। मैं सरकार से अपेक्षा करता हूं कि हमारे संस्कार इस प्रकार से बनाए जायें, हमारा चाल-चलन इस प्रकार का हो और हमारा चरित्र इस प्रकार का हो कि इस देश में नवयुवकों और हमारे देशवासियों का संस्कार ठीक हो, उनकी आचरण ठीक हो और चरित्र निर्माण ठीक हो और उनके अन्दर देश के हित के लिए त्याग और तपस्या का भावना जाग्रत हो। इन शब्दों के साथ मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

">SHRI N.JANARDHAN REDDY (BAPATLA): Sir, with your kind permission, I would like to mention a few words on the President's Address to the Joint Session which was read out by the President.

It is the practice that whenever there is an election, manifestoes are presented to the public and out of the manifestoes if one party gets elected, programmes will be chalked out those things will be mentioned in the President's Address. Here, the national Party, the Bharatiya Janata Party, has given to the public a manifesto with its programmes and given it a go by in preparing the President's Address. In between, they have created another document called the National Agenda for Governance.

In this connection, the BJP President and the present Home Minister, respected Shri Advani, mentioned that the manifesto of the BJP is no longer relevant and the National Agenda is relevant. In the House, he mentioned it.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L. K. ADVANI): What I said yesterday was not what you are saying now. I never said that it was not relevant. I said that so far as this Government is concerned, it would be governed by the National Agenda.

SHRI N. JANARDHANA REDDY : That is right. That means your manifesto is no more there...(Interruptions). The manifesto of yours, the manifesto of the AIADMK will not be there...(Interruptions) Please do not interrupt me. When you were speaking, you were asking us to sit down. Now, you please sit down.

MAJ.GEN. BHUWAN CHANDRA KHANDURI AVSM (GARHWAL): I was not asking you to sit down...(Interruptions)

SHRI N. JANARDHANA REDDY : When you were speaking, you asked our friends to sit down. So, when I am speaking, why do you interrupt me? Please sit down. You are a disciplined Major...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : The Speaker is not yielding. Please do not disturb.

... (Interruptions)

SHRI N. JANARDHANA REDDY : I was also the Chief Minister of Andhra Pradesh. We had also prepared the Governor's Address. Some of the ideas and words used in this Presidential Addressed are hijacked from the President's Addresses made during the time of the Congress Government. I do not think that Shri Vajpayee has written this. Usually the practice is that you ask the bureaucrats to write this, you go through that and the Cabinet approves it. It is the practice. That is why, the President's Address is the rehash of the National Agenda, rather I can say that it is a carbon copy of the National Agenda. It does not matter. But it has got tall claims, false promises which no Government can implement even if it is given five years time. High sounding words have been used that they are going to build new India -- India free from triple curse of insecurity, hunger and corruption. More than that, they say that they will ensure that no child will go to sleep with hunger. This sounds me very nice provided they are going to implement them. Why I say this is that Shri Advani has mentioned in this House that this Government is relying on the National Agenda. They have promised so many things in their manifesto. About Article 370, Shri Vajpayee said, " Why do you raise it when we do not want to do it?" They had mentioned to the people that they would abrogate Article 370 and also introduce a common civil code. We were opposing it and even now we oppose it but they came out with their manifesto. The same thing was done by the TDP, the present friend of yours, when they went back from the promises made in their election manifesto after getting the votes. In 1994 election manifesto, Mr. NTR gave promises to the State that he would provide rice at Rs.2.00 per k.g. -- Shri Vajpayee knows it well -- would bring down rates of power tariff to Rs.50 per horse power and there would be total prohibition in the State. The present Chief Minister who succeeded him -- in whatever manner he succeeded him -- he promised in 1996 elections that even the medical permits for the alcohols would not be given. He said that these three programmes were his programmes. He got the votes and it was given a go by. So the TDP had deceived the State, the BJP has deceived the nation. But they have done it in the beginning itself. Perhaps that is good.

I do not know whether the officers have brought to his notice some of the things about primary education to all. This was one of the promises that was mentioned by the President. The solution of providing primary education to all does not lie in the additional expenditure . It is not at all that. As Shri Shanta Kumar had said when he moved the Motion, that the political will is necessary. The four States that are lagging behind in primary education are be U.P., Bihar, Madhya Pradesh and Rajasthan. In U.P., the BJP Government is there.

Madhya Pradesh which introduced the Innovation Education Generation Scheme operated by Panchayats has shown results. Whereas the other two States that are ruled by the BJP have not done so. Sir, this thing has to be done by the States and not by the Centre. The Central Government can give directions and can help the States financially with regard to Education. They promised that education will be given to women free upto college level. Sir, you know pretty well that education is in the Concurrent List. Their administration lies with the State Governments. How is the Centre going to implement it? Are they going to take over Education from the Concurrent List or simply treat as a Central Programme or interfere with the State Administration? It is quite vague. That is why I said that the document itself is quite vague.

Mr. Chairman, Sir, about the Agriculture, they have mentioned that 60 per cent of the Plan outlay will be utilised for agriculture. My friend Shri Vaiko Gopalaswamy was very happy about it. But it is not a new thing. It is already 60 per cent. About the Agriculture and agricultural allies including power and technology utilisation, it is already nearly 60 per cent. I wish that they should improve upon it.

We should kindly remember to what Dr. Balram Jhakhar has said in his speech that out of Rupees Eight you are spending on agriculture, it is Rs. 1.75 only which is reaching the farmer. So, there, they have to find a way out. Previously, it was the same Rozgar Yojna, which was not introduced by late Rajiv Gandhi, where, out of Rs.100/- spent for rural development, it was only Rs. 17 that was actually reaching the village. But then, he thought of giving it directly, which you all approved it. So, this Government should also do something thinking about it.

More than that, they were kind enough on the day when there was some natural calamity at Midnapore, they sent their Minister and released some money immediately. It was not the question of releasing money, it was not the question of sending people there. The main thing was the concern about that calamity. I agree with them. What they have done is quite correctly.

But there have been 300 suicidedeaths of cotton farmers in Andhra Pradesh and Karnataka. It is a disease that is spreading to other States also. About it, the Central Government has given a few crores of rupees to the States and the States have given Rs. one lakh on account each death and washed off their hands. Is it going to solve the problem of the farmers? One has to find out the route cause of it.

Therefore, I appeal to the hon. Prime Minister that a Committee of agro economists, technologists, farmers and farmers sympathisers should be constituted immediately to go into this aspect and help the farmers. Otherwise, we are put to shame while looking into us by other countries as to how our farmers are being treated.

Mr. Chairman, Sir, they have made a mention about the crop insurance. They have rather mentioned `effective crop insurance'. I do not know what it is. But the present crop insurance is the only insurance against the bank loan, the farmer draws. That is all. If a farmer is there who spends his own money, develops some crop and if it gets destroyed by the natural calamity, there is no insurance at all. He is not permitted to have insurance. There is no insurance as such. So, `effective insurance' means -- I am of the opinion -- that Shri Atal Bihari Vajpayee will think about something special which will benefit all the farmers. Sir, the suicidal

deaths of cotton farmers have taken place because there is no effective crop insurance. Had there been some effective crop insurance scheme, those deaths would not have taken place and their lives would have been saved.

You have mentioned about States' reorganisation. You want to carve out Uttaranchal in Uttar Pradesh, Vananchal in Bihar and Chattisgarh in Madhya Pradesh. I want to remind the Prime Minister that when I met him in Rashtrapati Bhavan during the Vice-President's swearing-in ceremony, he just mentioned to me about carving out smaller States and I told him that I would be sending him a note about this. He was then the Leader of the Opposition. It was written by an eminent economist and administrator Shri B.P.R. Vittal who gave clear analysis. He was the one who argued for smaller States, but now he has gone back saying smaller States are a burden over the State exchequer. I have sent those papers to the Prime Minister and I received an acknowledgment of the receipt of that letter. I hope he might have gone through it. For historical reasons he might have accepted two or three, but please do not open a Pandora's box in this matter.

You have mentioned that morality and ethics is the foundation of the Government. I wish it were. But we have seen in Uttar Pradesh 91 Ministers where a pandal is needed to have a Cabinet meeting; where a man involved in a murder case is holding charge of the Ministry of Science and Technology to improve murder technology; and a man dealing in illicit liquor has been made the Minister of Culture, to have that culture developed! So, if you say that BJP has nothing to do with the Uttar Pradesh Government, it is all right. But, if you want to bring the same culture and morality, I am sorry, God only save this Government.

In this President's Address, there is an appeal for consensus approach, but your double-talk, double-speak and double-cross is seen everywhere, including in the Speaker's election. I thought this Government is out of deals. You made a deal with Kumari Jayalalitha; you made a deal with Kumari Mamata and I thought it would end with Shri Sukh Ram. But you ended with Babu Deal. You mentioned in Lucknow that talks are going on for TDP's joining the Government. That is not a new thing. We know that they are going to join your Government the moment they fielded their candidate for the post of Speaker and got your support.

In Lucknow, Shri Vajpayee mentioned that stability has been achieved yesterday. Yes, you won the confidence vote. I congratulate you on that. But stability does not lie on numbers alone. The TDP supported you with eleven votes. You won two more votes by nominating unethically two Anglo-Indian Members before getting the Confidence Vote. Usually it is not done. It does not matter, you got it done. But what happened after that? Shri Babu Khan, a Minister in the State, a Muslim friend of ours coming from a good family, has resigned from the Telugu Desam Government. Does it show that the country has got confidence in your Government? Can it give a stable Government if a community is not having confidence in your Government? You are telling that you have kept out all the programmes that will create problems to certain other communities.

Shri Chandrababu Naidu has been shouting from the rooftops, `Look, Fernandes is there, Hegde is there, Mamata is there, Jayalalitha is there; they will safeguard the interests of secularism. Do not worry'. But yet Shri Babukhan, a very good follower of the Telugu Desam has resigned because they have voted for a Government in which a particular community has no confidence. Stability is not a mere number. You may get a hundred-vote majority but that does not mean confidence. You may get the majority here. As Shri P.A. Sangma has rightly said, you got the confidence vote here but you lost the confidence of the public. That is why, you have had to deny that there is a hidden agenda. There is a hidden agenda. This agenda is not the real agenda.

They want to formulate a national policy on population. The same people objected when Shrimati Indira Gandhi introduced family planning in 1976 in a big way. They agitated, giving out all sorts of circulars and finally they got her defeated. The same party is coming out and saying that there is going to be a national policy on population.

The last para, i.e., para 42 says, `It also marks the 50th Anniversary of the martyrdom of Mahatma Gandhi. Is it sincere? The R.S.S. Chief ... (Interruptions) It is much talked about and I am not a new man to give this information in this House or outside. When Prof. Rajendra Singh was asked, `What is your opinion about Nathuram Godse who killed Gandhi?', he said, `Godse was motivated by (the philosophy of) akhanda Bharat. His intention was good ...' How can they say that they think about Mahatma Gandhi's martyrdom and that they are the inheritors of the fruits of sacrifice made by Mahatma Gandhi and other freedom fighters?

I have got great respect for Shri Atal Bihari Vajpayee though I have not got ... (Interruptions)

श्री राम नगीना मिश्र(पडरौनी): सभापति महोदय, इस देश में गांधी जा का सदैव सम्मान हुआ है और होता रहेगा।

... (व्यवधान)

SHRI N. JANARDHANA REDDY :The R.S.S. was established in 1925. It did not participate in the `Simon Commission, go back' movement in 1928; it did not participate in the Satyagraha movement in 1930; it did not participate in the Satyagraha movement

again in 1932; it did not participate in the individual Satyagraha in 1940 and it also did not participate in the Quit India movement in 1942. How can they claim that they are inheritors of freedom? Though not all, at least some of them say that they have got connections with the R.S.S.

They want to develop a national water policy, at the instance of Ms. Jayalalitha or whoever it may be. It is good. A River Valley Authority has to be there. This is an important need for the country. The other day it was said that water is just like or more important than petrol. According to them, this is a stable Government and not a weak Government. The construction of the Alamatti dam against the interests of Andhra Pradesh should be stopped. Ms. Jayalalitha has put in certain conditions; we do not know whether Shri Chandrababu Naidu has also put in conditions or not. But we, the Andhras, request you to stop the construction of the Alamatti dam. It is being constructed against our interests. Similarly, in the Upper Thungabadra, the interests of Rayalaseema is involved. They are against the Bachawat Award.

I hope the Prime Minister will look into these problems. I am of the opinion that he would survive. But I want to tell him a story. Three people were crossing a rivulet. In the midst of the rivulet the water started gushing. One Shiv bakt prayed, `Shiva, Shiva help me'. Lord Shiva came and put him out. Another was a Vishnu bakt. He prayed, `Krishna, Krishna help me'. Lord Krishna came and rescued him. Third one prayed, `Madurai Meenakshi help me, Kanchi Kamakshi help me, Kanakadurga help me'. Madurai Meenakshi thought that Kanakadurga will help him and Kanakadurga thought Madurai Meenakshi will help him. But at last he was washed away. Now, you have got to look at the various fingers. Mr. Prime Minister, on the day you moved the Motion of confidence you told us, `I did not wait for the finger of the referee to rise'. Now, you have to watch Jayalalitha's fingers; Mamata's fingers; Babu's fingers; Samata's fingers and Hegde's fingers. I hope their fingers will not point you. But you have to watch. Thank you.

">KUMARI KIM GANGTE (OUTER MANIPUR): Mr. Speaker, Sir, I take this opportunity to put forward in this august House the points of concern of the North-East in general and Manipur in particular which is beset with all kinds of problems. The need of the hour is to bring back peace immediately. There might be differences of opinion and views. There might be ideological differences among different parties. But I plead to support me and I hope even if there are differences of opinion and views, I would not be shouted down. I plead for your support and for a patient hearing. ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Go ahead, nobody will shout.

KUMARI KIM GANGTE : Thank you. What I have observed from the first day till today is that all the hon. Members from the ruling party as well as from the opposition wanted to be listened to. It is not an advice from me. I am a new person to this august House. What I would like to say is that even if there are differences of opinion, I feel that reasoning should prevail in this august House. I feel ashamed at the way we shout at one another. I feel like crying because this is where our people have sent us to reason and to sort out the nation's problems. I am not advising. This is the pain in my heart which I have just spoken out.

Sir, human rights have been violated in the North-Eastern region. The North-East which is beset with violence and problems is groaning in pain. I am happy that I could be present here to tell the hon. Members of this august House as to how much we are suffering over there. The need of the hour, I mention again, is to bring back peace immediately.

17.00 hrs.

Law and order problem is at its lowest ebb and violations of human rights are at their zenith. We have been crying for so many years but till today, the same thing is happening and no chnage is visible.

Sir, we have got too many problems to speak about. I do not know how many minutes you are going to give me. I am a new Member. Hence, Mr. Speaker Sir, I would request you to let me finish my points in the interests of our people and the country.

MR. CHAIRMAN : You may go on. Since you are making your maiden speech, nobody will interrupt you. But kindly be brief as far as possiblle.

KUMARI KIM GANGTE : Sir, apart from the economic problems, there are a lot of other problems. As a human rights activist , I would also like to bring it to the knowledge of this august House that the Armed Forces Special Powers Act should be lifted immediately. Under the imposition of Armed Forces Special Powers Act, people are suffering; people are dying. If the Armed Forces Special Powers Act was meant to solve the problems of the North-East but instead of solving them, it has aggravated the situation. The Armed Forces Special Powers Act was imposed in 1958. The imposition of this unpopular Act is not at all accepted by the people of the North-Eastern States. We cannot accept this as it has not at all solved our problems. We also cannot understand as to why this Act had to be imposed on the North-Eastern States even before the problem of insurgency came about. Sir, I plead that this Armed Forces Special Powers Act be lifted from the North-Eastern part of our great country. If the North-East is a part of this great country, please hear the cries of the people and listen to their groanings.

17.02 hrs (Dr. Laxmi Narayan Pandey in the Chair)

Sir, one of the factors which brought problems to the North-East is our economic backwardness. As regards to communications, there are no rail links to many parts of the North-Eastern States. Particularly, Manipur has no rail link. The nearest railhead from Imphal, which is the capital of Manipur, is Gawahati and the distance between them is more than 580 kilometres. So, we need rail links.

Sir,We need more land routes also. There are just two National Highways. The National Highway No.39 is not being used by the people for many compelling reasons. The National Highway No. 53 should be made a double so that the State which is right in the border with Myanmar would have a link with the main stream. There are also only two flights direct from Imphal to Delhi in a week. Flights should be increased.

We need more National Highways for linking border areas and States to the mainstream. The National Highway from Morch to New Sontal, that is, the border town between India and Myanmar, should be linked to Jeribum via Churachandpur. This will bring economic development to the people of that area and also improve trade and commerce. This will arrest shifting cultivation and preserve environment. This will enhance the overall economic development of the State and the north-eastern parts of India. This will also enhance better trade with neighbouring countries like Myanmar, in pursuance of the free border trade policy of our country.

Sir, water resources should also be exploited. We have the Loktak hydroelectric project which generates about 105 MW. Out of this, only 12 per cent has been given to the State. We are buying power worth about Rs. 43 crore which has affected the economy of the State very badly. So, the Loktak project should be handed back to the State 12 per cent of the generated power given free to the State is not justified.

Sir,the commercial and nationalised banks in Punjab have waived off loans to the extent of Rs. 50,000. The people in my State are economically backward and especially because the whole State is now in turmoil, commercial and nationalised banks should be instructed to do what has been done in respect of the people in Punjab.

In the case of Departments like Forest, Agriculture, Social Welfare, Family Welfare Industry, Horticulture and for all the Centrally-sponsored schemes, the Central Government should bear the expenditure cent percent. At present, the State Government bears the expenditure to the extent of 25 per cent while the Central Government's share is to the extent of 75 per cent. So, these schemes cannot be implemented in time because the North-Eastern States are suffering from financial constraints.

Sir, I come to Health. That people are suffering from malnutrition and different kinds of diseases. Many people have to rush to other States for better medical facilities. The state's economy has been affected badly as a result of this. There is no infrastructure available in so far as the field of health is concerned. In my State, the hospitals require to be modernised. Here again, the poor people are the most affected. They are not able to go outside for better the medical facilities.

Sir,I think, Manipur and other adjoining areas get the highest rainfall in the country. In spite of this, almost all the North-Eastern States have the drinking water problem. This needs to be solved immediately. Sometimes, even during the rainy season, for many many days the people suffer for want of safe drinking water.

Sir, I come from the Outer Manipur Parliamentary Constituency. The Outer Manipur Parliamentary constituency, in the valley, though the people have the voting right yet they do not have any candidature right. I call it a violation of political rights. So, more Parliamentary constituencies should be created so that these people who have been denied their political rights of being candidates are given their political rights.

MR.CHAIRMAN : Please conclude now.

KUMARI KIM GANGTE : Sir, I hope, I am not violating others' rights. But I would like to speak for a few more minutes.

Sir, at the moment, in the 50th year of India's Independence, people are suffering. Our countrymen in the North-eastern India and especially in Manipur are suffering from hunger, thirst and from deprivation of every basic human needs. People are hungry; people are fighting for survival.

It is a shame for our country that our people there are suffering so to this extent. I do not know how many of us have visited these unfortunate people.

Sir, I would like to quote a few facts and figures. Right now, about 15,109 houses have been burnt down. About 1,11,284 people have been displaced. Some people are living in caves in the jungles due to violence. The people in the Outer Manipur Parliamentary constituency, in the the hilly and remote areas are suffering because of lack of communication facilities. During the rainy season, one cannot even travel by a jeep. One has to walk on foot. As a result, people cannot even reach the HQs of the hill districts. I know, right now, people are living in caves. Could the hon. Members of this august House imagine of such things? I am not exaggerating facts. I am quoting figures. 1,508 people have been killed. The education of about 12,993 students have either been affected or they have been unable to continue their education.

Independence has no meaning to these people. The people of the older generation, who could remember the rule of the white men, the British rule - I am ashamed to say - are longing for the rule of the white men. They told me that at least in those days, when the white men ruled our country, they were safe; and at least their lives were protected. But in the 50th year of our Independence, people there do not know what Independence is, for they are not independent in the true sense of the word.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

KUMARI KIM GANGTE : Sir, finally, I would like to plead with the hon. Members of this august House to remember these people and also to immediately take steps to help and rescue these people from all these tragie problems.

">

श्री चिन्मयानन्द स्वामी (मछलीशहर): सभापति महोदय, इस सदन के समक्ष आपने मुझे अपने विचार प्रस्तुत करने का जो अवसर प्रदान किया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

महोदय, ५० वर्षों के बाद इस सदन को एक ऐसे धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा करने का अवसर मिला है, जिसमें बहुत सारी बातें नितान्त मौलिक हैं और इसके पहले संभवतः इस प्रकार की बातें नहीं थी। सबसे पहली बात इस धन्यवाद प्रस्ताव में आम सहमति की कही गई है। उस संबंध में मैं कहना चाहूंगा कि सरकार बहुमत से तो बनती है, लेकिन उसको चलाने के लिए के वल बहुमत ही काफी नहीं होता, उसके लिए सर्वानुमति आवश्यक होती है। हम लोग जब निर्वाचित होते हैं, जिस क्षेत्र से चुने जाते हैं, वहां अनेक दलों के व्यक्ति चुनाव लड़ते हैं, अलग-अ लग लोगों की विचार धारायें आपस में एक न होते हुए भी मतदान होता है और जिस व्यक्ति को ज्यादा वोट मिलते हैं, वही चुना जाता है। जब हम उस क्षेत्र से चुन लिए जाते हैं, तो उस क्षेत्र के सभी मतदाताओं के हम प्रतिनिधि होते हैं। हम केवल उन कुछ लोगों के प्रतिनिधि नहीं होते हैं, बल्कि उन सबके प्रतिनिधि होते हैं, जो उस क्षेत्र में मतदान का अधिकर रखते हैं और उस क्षेत्र में रहते हैं। हम जब उस क्षेत्र में जाते हैं, तो उस क्षेत्र के लोग भी बिना इस अपेक्षा के कि कौन किस दल से चुना गया है, अपनी बात कहते हैं, अपनी राय देते हैं और अपनी जरूरतों को बताते हैं। एक समझदार और जिम्मेदार सासंद के नाते कोई भी सासंद उनकी इसलिए उपेक्षा नहीं करता कि यह दूसरे दल से आया है या दूसरे दल का कार्यकर्ता है। उनके सुझावों, उनकी आवश्यकताओं को उतना ही महत्व देता है, जितना कि वह अपने दल के कार्यकर्ताओं के सुझावों और आवश्यकताओं को देता है। मैं पूछता हूं, क्या यह प्रयोग हम सरकार चलाने में नहीं कर सकते? जब हमारे देश में प्रधान मंत्री जी के द्वारा सर्वानुमति की बात कही जाती है, तो उसको एक व्यंग और हास्य का रूप दे दिया जाता है। यह विचार एक नई कार्य शैली को जन्म देता है कि हम सर्वानुमति से सरकार चलाना चाहते हैं।

महोदय, कोई भी सत्य समग्र तभी होता है, जब हम सभी प्रकार के विचारों का, सभी प्रकार की धारणाओं का समावेश करें। इस प्रकार जो आर्च बनता है, जिसमें दोनों तरह की ईंटें - उल्टी और सीधी - लगाई जातीं हैं, तो वह आर्च मजबूत होता है और खड़ा रहता है। इसी तरह से सदन के दोनों पक्ष राष्ट्रीय हित में, देशहित में सर्वानुमति बनाने की बात करें, तो सहमति बनती है और उससे निश्चित ही देश तमाम झंझटों से और ऐसी तमाम परिस्थितियों से उभर सकता है, जो केवल असहमति के कारण संभव नहीं हो पाती हैं।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं। यह इस सदन की प्रथा है या राजनीतिक प्रथा है कि प्रतिपक्ष के हमारे मित्र जब अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए खड़े होते हैं, तो शुरुआत में ही वे प्रस्ता व या विधेयक का विरोध करते हैं। जब कोई व्यक्ति पहले से ही मन बना लेगा कि हमें विरोध ही करना है, तो वह विरोध में तर्क जुटाएगा, विरोध में अपनी मानसिकता बनाएगा। वह ऐसा क्यों नहीं करता कि तथ्यों को सामने रखकर, गुण और अवगुण के आधार पर, देश हित में क्या है और क्या नहीं है, यदि वह इस आधार पर अपनी बात कहे, तो मैं समझता हूं कि वह बात न केवल एक पक्ष की होगी, न केवल एक व्यक्ति की होगी, बल्कि वह बात पूरे सदन की होगी और पूरे देश की होगी और तब उस सरकार के लिए उस बात को मानना बाध्य भी होगा।

श्इसलिए सर्वानुमति की बात कह कर, मैं अपने मित्रों से कहना चाहता हूं कि कई चीजें हम छोड़ना चाहते हैं, कई गलतियां जो आपने की हैं उन्हें हम छोड़ना चाहते हैं और कई गलतियां जो हमने की हैं उन्हें भी छोड़ना चाहते हैं।

... (व्यवधान)

अगर उस गलती को चलाना ही योग है, अगर उस गलती को कायम रखना ही योग है तो आप सच्चे अर्थों में योगी हैं। लेकिन उन गलतियों को छोड़ना अगर योग है तो मैं भी एक योगी हूं जो गलतियों को छोड़ना जानता हूं, अच्छाइयों को अपनाना जानता हूं। हमें समय के साथ कई चीजें सीखनी होंगी, समझनी होंगी।

महोदय, मैं देश का आभारी हूं कि ऐसी परिस्थितियों में, जब अस्थिर सरकारें थीं, बार-बार चुनाव हो रहे थे, बार-बार सरकारें बदल रही थीं, उस समय लोगों का मन दुखी था, जब चुनाव का अवसर आया तो उन्होंने आगे बढ़ कर जिस तरह मतदान किया है उससे निश्चित ही उनकी रूचि लोकतंत्र के प्रति दिखाई पड़ी है। जिसके लिए मैं इस सदन के माध्यम से मतदाताओं के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं।

सभापति महोदय, मैं अपने वरिष्ठ मित्र श्री बलराम जाखड़ का धन्यवाद देना चाहूंगा, जो इस सदन के अनुभवी सदस्य हैं। उन्होंने तमाम सकारात्मक पहलुओं को उठाया है, तमाम पोजिटिव प्वाइंटस उठाए हैं। जब वे सकारात्मक पहलू उठा रहे थे तो सत्ता पक्ष में भी मेजें थप-थपाई जा रही थीं। उनके सकारात्मक बिन्दुओं का स्वागत हो रहा था। सदन इस परम्परा से अगर चलेगा तो निश्चित ही यह सरकार, जो बहुमत की सरकार है, एक सर्वानुमति की सरकार बन सकती है और देश को सर्वानुमति का संदेश दे सकती है। इसमें एक बहुत अच्छी बात शामिल की गई है, मैं तमाम बातों पर नहीं जाना चाहता हूं क्योंकि समय कम है, कि हम पिछड़ी जातियों के बारे में, पिछड़े व्यक्तियों के बारे में पिछले ५० सालों में चिन्ता करते रहे हैं। उनके लिए

नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था की गई। यह एक अच्छा कदम था, प्रशंसनीय कदम था। लेकिन उन क्षेत्रों की, जो प्राकृतिक कारणों से, नैसर्गिक कारणों से, भौगोलिक कारणों से मुख्य धारा में नहीं आ पाए, पहचान करने का काम, जो पिछली सरकारों को करना चाहिए था, यदि वह किया गया होता तो जैसा मणिपुर की माननीय सदस्या अभी बोल रही थीं, अपनी पीड़ा व्यक्त कर रही थी उन्हें इस पीड़ा को व्यक्त करने का अवसर न आता।

सभापति महोदय, जो अलग प्रांतों की मांग की जा रही है, चाहे वह वनांचल की हो या उत्तरांचल की मांग हो, जिसको देने का वायदा इस सरकार ने किया है, वह मांग जायज इसलिए हो जाती है क्योंकि पिछले ५० सालों में उस क्षेत्र का अध्ययन नहीं किया गया। अगर उन क्षेत्रों की जरूरतों का अध्ययन करते हुए उन्हें पिछड़ा करार दिया गया होता और तदनुसार उनके ि वकास के लिए योजनाएं बनाई गईं होती तो ५० वर्षों में वे मुख्य धारा में आ गए होते। तब कोई कारण नहीं थी कि कोई अलग प्रांत की मांग करता, अलग घर की मांग करता। अलग घर की मांग तभी कोई करता है जब उसके पूरे घर में न्याय नहीं होता, समानता नहीं बरती जाती। मैं निवेदन करना चाहूंगा कि यह समस्या केवल प्रांतों तक सीमित नहीं है बल्कि यह क्षेत्रों में भी है। हमारे कई मित्र, चाहे वे प्रतिपक्ष के ही क्यों न हों वे भी सहमत होंगे कि सभी संसदीय क्षेत्र समान रूप से प्रगति नहीं कर रहे हैं। मैं जिस क्षेत्र से चुन कर आया हूं वह पूरी तरह से गां वों का क्षेत्र है, पूरे संसदीय क्षेत्र में केवल एक नगरपालिका है और वह भी तृतीय श्रेणी की। पूरा क्षेत्र गांवों का है। ऐसे कितने क्षेत्र होंगे। जब यहां से प्रत्येक संसदीय क्षेत्र को एक करोड़ रुपया दिया जाता है वह विकसित क्षेत्रों को भी दिया जाता है, जो पिछड़े क्षेत्र हैं उनको भी दिया जाता है। अगर इससे पहले यह आइडेंटीफाई किया जाए, पता लगाया जाए कि कौन सा क्षेत्र किस मामले में पिछड़ा है- क्या वहां औद्योगिक पिछड़ापन है या शैक्षिक पिछड़ापन है।

श्आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, कृषि के क्षेत्र में पिछड़े हैं। किस-किस मामले में पिछड़े हैं अगर इसका अध्ययन किया जाएगा तो देश को समान प्रगति के जो अवसर मिलेंगे, उनमें वे क्षेत्र भी लाभान्वित होंगे जिनमें विकास की किरणें अभी तक नहीं पहुंची हैं। मैं स्वयं मध्य प्रदेश में छिंदवाड़ा जिले के एक गांव को जानता हूं, जो गहराई में बसा हुआ है और जहां सूरज की किरणें भी नहीं पहुंचती हैं। ऐसे और भी क्षेत्र हो सकते हैं। चमोली के आसपास उत्तरांचल प्रदेश की बात कही जा रही है, जहां कोई अधिकारी आज तक पहुंचा ही नहीं है।

... (व्यवधान)

माननीय सभापति जी, मैं अपने क्षेत्र की बात कर रहा हूं।

... (व्यवधान)

यह सब पिछले चालीस साल का हिसाब-किताब है।

... (व्यवधान)

आप अपना चेहरा आइने में देखिये, आप हमें क्यों कह रहे हैं। एक गांव में जब मैं वोट मांगने के लिए गया तो वहां पर गांव वालों ने बताया कि सांसद की तो बात ही छोड़ दीजिए, वहां जाने वाला मैं पहला प्रत्याशी था। क्षेत्रीय पिछड़ेपन को दूर करने का जो निश्चय इस सरकार में दिखाई पड़ता है वह प्रशंसनीय है और राष्ट्र की समृद्धि के लिए यह निश्चय ही एक आधार बन सकता है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात पीने के पानी के बारे में कही गयी है, जो मुझे बहुत पीड़ित करती है। भारत की राजधानी दिल्ली में दूध १०-१२ रुपये लीटर मिलता है लेकिन मिनरल पानी १५ रुपये लीटर मिलता है। आजादी के ५० वर्ष बीत जाने के बाद भी हम लोगों को पीने का पानी मुहैया नहीं करा पाए हैं। आज दूध सस्ता है और पानी महंगा है। सभापति जी, एक कहावत कही जाती है कि 'अंधेर नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा'। आज श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के कंधों पर ५० साल की इस अंधेर नगरी से देश के लोगों को निकालने की जिम्मेदारी आई है।

सभापति महोदय, जब मैं अपने क्षेत्र में जाता हूं तो वहां के गांव के लोगों की एक ही मांग होती है कि पीने के पानी के लिए हैंडपम्प चाहिएं, बम्बा चाहिए। वहां इस बात के लिए झगड़ा होता है कि उसके दरवाजे पर हैंडपम्प लगा है, मेरे दरवाजे पर हैंडपम्प नहीं है। मैं कहना चाहता हूं कि जहां शहरों में एक-एक कमरे में दो-दो नल लगे हुए हैं वहां गांव का आदमी एक नल के लिए भी तरस रहा है। जो नल लगाए गए हैं उनकी भी अपनी एक कहानी है। केवल उसी दिन पानी निकलता है जिस दिन लगाए जाते हैं, फिर पानी नहीं निकलता। सवाल यह है कि उनका रखरखाव कौन करेगा? उनके नट-बोल्ट और वाशर टूट जाते हैं और उनके लगाने की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता है। पीने के पानी की योजना को समयबद्ध पूरा करने की जो बात कही गयी है, उसमें निश्चय ही वजन है। मैं समझता हूं कि एक बहुत बड़ी जरूरत की ओर ध्यान दिया गया है। मैं समझता हूं कि आदमी एक बार अन्न के बिना रह सकता है लेकिन पानी के बिना नहीं रह सकता। मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उनका ध्यान उस आवश्यकता की ओर गया है जो गरीब और अमीर सब की जरूरत है।

सभापति महोदय, पर्यावरण की बात बहुत पहले से कही जाती रही है और जल तथा वायु में शुद्धता लाने के जो कार्यक्रम बनाए गये हैं उनका एक उदाहरण मैं देना चाहता हूं। गंगा कार्य योजना बनाई गयी, गंगा अथॉरिटी बनाई गयी, लेकिन गंगा जल की स्थिति यह है कि गंगा का पानी पीने की बात तो दूर, स्नान करने लायक भी नहीं है। सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से गंगा पवित्र मानी जाती रही है। न्यायालय में भी लोग गंगा की कसम खाते थे और उसको स्वीकार भी किया जाता था। उसके पीछे आधार यह था कि गंगा को पवित्र माना जाता था और कहने वाला भी अपनी बात को पवित्रता के साथ कहता था। गंगा के किनारे जहां देश-विदेश से करोड़ों लोग इकट्ठा होते थे वह आज ऊपर से लेकर नीचे तक प्रदूषित हो गयी है, गंगा का जल भी शुद्ध नहीं बचा है। छः सौ कारखानों का गंदा पानी लगातार गंगा में गिर रहा है और उसका कोई उपाय नहीं है। फर्जी एन.ओ.सी. दिए जाते हैं, फर्जी काम होते हैं। जो कारखाने के मालिक हैं उन्होंने प्रमाण-पत्र तो दे दिया है लेकिन फिर भी वे अपने कारखाने का गंदा पानी गंगा में गिराते हैं।

श्यहां तक कि उसमें टेनरी का भी पानी होता है, चमड़े का धुआं भी होता है। यह पर्यावरण की स्थिति है। गांव में आज भी इतना कचरा छूटता है, अगर हम उसका उपयोग करना चाहें तो उससे गांवों की रोशनी भी हो सकती है और खेतों के लिए आवश्यक उर्वरक तथा खाद भी मिल सकती है लेकिन पर्यावरण सुधारने के साथ-साथ रोशनी और उत्पादकता में योगदान के रूप में इस्तेमाल करने के लिए कोई योजना नहीं बनायी गई। पहली बार सकारात्मक दृष्टि से सोचने के लिए एक पहल दिखायी पड़ रही है।

सभापति जी, इस देश में उद्योगों का हाल खराब है। इस देश में परम्परागत उद्योग थे। वे लघु उद्योगों में बदले। अगर उन उद्योगों को पर्याप्त संरक्षण मिलता, उनको कच्चा माल मिलता, जरूरी इनफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध कराया जाता तो देश की चुनौतियां लघु उद्योग स्वयं सम्भाल सकते थे। चूंकि लघु उद्योग गांवों में, अर्दधविकसित कस्बों में और अविकसित कस्बों में होते हैं, इसलिए ग्रामीण आदमी भी उसमें हिस्सेदारी ले सकता था, उसमें मजदूरी कर सकता था, अपना पेट पाल सकता था, रोजी अर्जित कर सकता था लेकिन लघु उद्योगों के लिए ऐसी कोई कारगर नीति राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक नहीं बनायी गई।

सभापति महोदय : स्वामी जी, साढ़े पांच बजे हम को नियम ३७७ लेने हैं। अगर सदन की राय हो तो आप अपना भाषण कंटीन्यू रख सकते हैं। उसके बाद नियम ३७७ ले लिए जाएंगे।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : पहले हम नियम ३७७ लेंगे। उसके बाद आप अपना भाषण जारी करें।

... (व्यवधान)

श्री रामदास अढावले(मुम्बई उत्तर-मध्य) : २८ तारीख को सुब्रहमण्यम स्वामी सदन में उपस्थित नहीं थे। हमें उनकी चिन्ता थी। अखिर वह आ ही गए।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Shri Chinmayanand may continue his speech now.

श्री चिन्मयानन्द स्वामी : मैं लघु उद्योगों के बारे में निवेदन कर रहा था। लघु उद्योग प्रायः अविकसित कस्बों या गावों में स्थापित होते हैं। उसका कच्चा माल सीधे-सीधे उन्हीं गांवों से आता है। कच्चा माल ही नहीं बल्कि उसमें काम करने वाले श्रमिक भी उन्हीं गांवों के आसपास के लोग होते हैं। लघु उद्योगों के द्वारा जहां कच्चा माल गांवों से, खेतों से लिया जाता है, वहीं किसानों को भी लाभ होता है। किसान की उपज को सही कीमत मिलती है, तत्काल कीमत मिलती है। साथ-साथ जो गांव का रहने वाला मजदूर है, शिक्षित नहीं है, उसको रोजगार मिलता है और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त होती है। लेकिन पिछले पचास सालों में क्या हुआ। जितनी नीतियां बनाई गईं, वह बड़े-बड़े उद्योगों को दिमाग में रखकर बनाई गई। लघु उद्योगों के ऊपर केवल दया के आंसू बरसाए गए, उनको संरक्षण नहीं दिया गया। अब भी इन्फ्रास्ट्रक्चर के मामले में लघु उद्योगों को न तो विद्युत मिलती है, न उनको पानी मिलता है, न वहां आने-जाने में के लिए सड़कें होती हैं, न रेल लाइन नजदीक होती है जहां से उनके माल को ले जाया जाए और सबसे बड़ा संकट यह होता है कि जो कुछ वे बनाते हैं, उसकी मार्केटिंग का कोई ठीक इंतजाम नहीं किया जाता। नतीजा यह होता है कि यदि हम अपने उत्तर प्रदेश के लघु उद्योग ही लें, तो तमाम कागज के उद्योग, जो गन्ने के बचे हुए हिस्से से निर्मित होते हैं, वे ठप्प पड़ते जा रहे हैं, चलने की स्थिति में नहीं हैं। मैं समझता हूं कि लघु उद्योगों की ओर दृष्टि डालकर उनके संकट को दूर करने के संबंध में सोचा जाए तभी वे प्रभावी हो सकते हैं। यदि लघु उद्योगों को संरक्षण मिलेगा तो निश्चित ही जो विदेशी बड़ी-बड़ी कम्पनियां आज हमारे यहां अचार, चटनी, पापड़ और नमकीन बनाने के लिए आ रही हैं, उनकी जरूरत इस देश में नहीं रहेगी। यह चुनौती हमारे लघु उद्योग अपने आप स्वीकार कर लेंगे। यदि उनकी जरूरत पड़ेगी तो उन बड़े कामों में पड़ेगी जो हाई-टैक के काम है। इसके लिए सरकार सर्वथा धन्यवाद और आभार की पात्र है।

इसके साथ एक महत्वपूर्ण बात जल नीति के बारे में कही गई। हिन्दुस्तान में शायद सबसे ज्यादा पानी बरसता है। इस देश में पानी बरसने के कारण ही भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा - 'अन्नात भवन्ति भूतानि प्रजन्यातत'। इस देश में जल से अन्न पैदा होता है जो आसमान से आता है। उस पानी को रोकने का हम कोई इंतजाम नहीं कर पाए। पानी बरसता है और बहकर नदियों, नालों से समुद्र में चला जाता है। यदि हमने उस पानी को रोकने का उपाय किया होता, तालाब बने होते, छोटे-छोटे बांध बनाकर उसे रोका गया होता तो जहां हमारी सिंचाई की जरूरतें पूरी होतीं वहीं भूगर्भीय जल जमीन से इतना नीचे नहीं गया होता। हमें और बहुत कम स्तर पर पानी मिलता। जो जल नीति बनाई जा रही है, मैं समझता हूं कि इसमें आसमान से उतरे हुए जल की व्यवस्था की गुंजाइश होगी, उसमें उसकी चिन्ता की गई होगी।

मैं एक महत्वपूर्ण बात की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। ३३ प्रतिशत महिलाओं के आरक्षण की बात पिछली कई सरकारों ने की है, लेकिन वह आरक्षण प्राप्त करने के बाद इस सदन में और दूसरे सदनों में, चाहे वह विधान सभा के हों, चाहे पंचायत के हों, वे प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभा सकें और अपना पक्ष ठीक से रख सकें, इसके लिए उनका शिक्षित होना जरूरी था। यदि ३३ प्रतिशत आरक्षण के साथ-साथ उनकी शिक्षा को निशुल्क बनाने का इंतजाम अब तक नहीं किया गया। स्नातक तक की शिक्षा को निशुल्क करके न केवल सरस्वती और शारदा की प्राचीन परम्परा को पुनर्सथापित करने की कोशिश इस सरकार ने की है बल्कि देश में महिलाओं की प्रतिभा को निखारने के लिए उन्हें एक बहुत कारगर और प्रभावी अवसर प्रदान दिया है जिसके लिए यह सरकार सर्वथा बधाई की पात्र है।

मैं एक और बिन्दु की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इस देश में बच्चे पैदा तो होते हैं लेकिन बच्चे पैदा करने वाले लोग उन के प्रति इतने लापरवाह हो जाते हैं कि उन्हें हम सन्यासियों को पालना पड़ता है। हमारे यहां सैंकड़ों बच्चे ऐसे हैं जो पैदा किसी और ने किए हैं और जिन्हें पाल हम रहे हैं, उनकी शिक्षा, भोजन का प्रबंध हम कर रहे हैं। यदि उनके लिए कोई नीति बने, इसमें घोषणा की गई है कि एक राष्ट्रीय नीति बच्चों के लिए बननी चाहिए। बच्चे पैदा करने की जो आजादी लोगों को मिली हुई है, उस का नाजायज लाभ उठाया जा रहा है जो इस देश को एक सरदर्द के रूप में ढोना पड़ता है, इस पर चिन्ता प्रकट की गई ये दोनों चीजें मिलाई जानी चाहिए जनसंख्या और बच्चों की शिक्षा। बच्चे पैदा करने का अधिकार लोगों को मिलना चाहिए लेकिन उनका पालन करने की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित होनी चाहिए कि उनका लालन-पालन किया जाएगा, उन्हें शिक्षा दी जाएगी। जिन बच्चों की आयु अभी मुश्किल से पांच -सात साल की नहीं हुई है,

श्किसी भी रास्ते पर चले जाएं, चाहे जयपुर की तरफ चले जाएं या आगरा की तरफ चले जाएं, हर ढाबे में गिलास धोते हुए, प्लेटें धोते हुए बच्चे मिलेंगे। भारत का भविष्य प्लेट-ग्लास धोते हुए दिखाई पड़ता है तो याद आता है कि यह देश कभी गोपाल का देश था। छोटे-छोटे बच्चों को देखकर याद आता है कि यह देश कभी प्रहलाद का देश था। इसे देख बड़ी शर्म आती है। इसलिए बच्चों पर जो ध्यान देने की बात कही गई है, यह महत्वपूर्ण है। उनकी शिक्षा के, संवर्दधन के, उनके पोषण के और उनके लिए आने वाले समय में रोजगार के, ये सब उपाय यह सरकार निश्चित करना चाहती है। इसलिए उन बच्चों पर जो ध्यान गया है, यह आने वाली पीढ़ी पर मेहरबानी की गई है। मैं इसके लिए भी सरकार को धन्यवाद देता हूं।

मैं आखिरी बात कहना चाहता हूं। इस देश में सामाजिक न्याय की बात की जाती है। लेकिन वह किसे कहते हैं? एक जाति को जब दूसरी जाति के खिलाफ भड़काया जाता है, तो क्या यह सामाजिक न्याय है? एक जाति को दूसरी जाति के खिलाफ खड़ा किया जाए, तो क्या यह सामाजिक न्याय है? जातियों को प्रगतिशीलता के नाम पर गाली दी जाए, क्या यह सामाजिक न्याय है? होना यह चाहिए कि हर जाति को जातीय कारणों से छोटा-बड़ा न समझा जाए। हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है, आप देख लें, जापान में रहने वाले को जैपनीज, अमेरिका में रहने वाले को अमेरिकन, चीन में रहने वाले को चाइनीज, ब्रिटेन में रहने वाले को ब्रिटिश कहा जाता है और इसी तरह से पाकिस्तान तथा अन्य देशों में है कि आदमी की पहचान वहां के देश से होती है और देश की पहचान आदमी से होती है, लेकिन भारत में जो पैदा होता है वह शायद ही अपने को भारतीय कहता हो। हम अब भी आपस में जातियों में बंटे हुए हैं। जब तक यह चीज रहेगी तब तक सामाजिक समरसता की बात दूर की कौड़ी लगेगी। इसलिए सरकार ने सामाजिक समरसता की बात करके जो राष्ट्रीय एकता के लिए संकल्प लिया है, यह स्वागत योग्य है। जब तक राष्ट्रीय एकता नहीं होगी, इस जननी जन्म भूमि के प्रति आस्था नहीं होगी, जब तक हम जातीय आधार पर एक-दूसरे के दुश्मन होंगे, तब तक हम देश का विकास नहीं कर सकते। इसलिए प्रत्येक वर्ग को, उसमें रहने वाले हर व्यक्ति को, पूरे समाज को नागरिक अधिकारों की ओर उन्मुख किया गया है, यह सराहनीय कदम है।

मैं जानता हूं इस सरकार के सामने अनेक चुनौतियां हैं, अनेक सवाल हैं, लेकिन उन सवालों को, संकल्पों को आकार देने में यह सरकार सफल होगी। माननीय प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में और माननीय आडवाणी जी के गतिशील नेतृत्व में यह सरकार पांच साल पूरे ही नहीं करेगी, बल्कि यह सरकार ५० सालों का हिसाब चुकता करने का दम भी रखती है। यह सारा देश एक है और यह सरकार देश को एक नया संकल्प और नया रास्ता देगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

">SHRI K. NATWAR SINGH (BHARATPUR): Sir, I rise to speak on the Motion relating to the President's Address I speak from this side for the first time. It was my good fortune to sit on the other side from 1984 to 1989. As things might turning out, perhaps we will be able to exchange places in the very near future.

I have respect for the shrines of the minds of the authors of the President's Address. But I must say that it is a document - and I say this with very great respect - that reads like a rather expensive laundry list because it has been taken out from the manifesto of the Bharatiya Janata Party. Which has Shri Vajpayee on the front cover and the back cover has Shri Advani. Perhaps, that is a mistake. It should be the other way round.

Then, we have the National Agenda for Governance which was produced after the elections. Then we have the Address of the President of India. Now, I am not sure whether the Members of Shri Advani's Party are committed to the manifesto of the B.J.P. or to the National Agenda or to the President's Address or to Shri Golwalkar's book. Shri Chandra Shekhar in his intervention quoted from this book.

Shri Golwalkar's book is not available in the library of Parliament. I tried to find out why, but it is not there. I happen to be the Secretary of the Jawaharlal Nehru Memorial Fund, and it has a copy of this book. I shall not tax you or the Members of the House by reading from it, but it is worth suggesting that the younger Members and the newer Members of this Parliament make an effort to read the book. All I can ask with great respect which I have for Shri Advani, one of the great leaders of the country, is does he agree with what is said in the book or does he not? Yes or no, the answer is very simple, and I shall await his answer.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI L. K. ADVANI): Were you not there when Shri Chandra Shekhar referred to it?

SHRI K. NATWAR SINGH : I heard him.

SHRI L. K. ADVANI: I said, at that time, that so far as this often cited quotation is concerned, the author of the book himself did not agree with it.

SHRI BASU DEB ACHARIA(BANKURA): But what about your view?

SHRI K. NATWAR SINGH (BHARATPUR): Do you not agree with the book?

SHRI L. K. ADVANI: I do not agree with those particular portions which are cited again and again that there is a reference to Nazi Germany and minorities. I do not agree with it.

SHRI K. NATWAR SINGH : Sir, I am not quoting any passage from the book. I am asking you whether you agree with the philosophy and thrust of the book or you do not. You can say `yes' or `no'.

SHRI L. K. ADVANI: That is hardly a question.

SHRI K. NATWAR SINGH : Do you want me to put it differently? ... (Interruptions)

SHRI L. K. ADVANI: The book has so many ideas with which I may or may not agree. I know that out of that only one portion is quoted again and again.

SHRI K. NATWAR SINGH : I know that Advaniji is careful with his language. I know that he is a lover of words and phrases as I am. I most respectfully and humbly ask him: "Do you agree even broadly with the philosophy of this book or not?"

SHRI L. K. ADVANI: That is not a question.

1756 hours (Shri Kinjarapu Yerrannaidu in the Chair)

... (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): Shri Natwar Singh, are you a journalist that you are asking that question time and again? This is not a Press Conference. You make your speech, but do not ask the same question time and again. Why are you putting that question again and again when he is giving a categorical reply? ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : I am requesting the hon. Members to please sit down. Shri Natwar Singh, please address the Chair.

... (Interruptions)

THE MINISTER OF POWER (SHRI R. KUMARAMANGALAM): May I request you to extend the time of the House? ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Now, the time is six o'clock. With the consent of the House, we will extend the time.

SHRI R. KUMARAMANGALAM: With your permission and through you, Sir, may I request the Members to consider extension till seven o'clock?

SEVERAL HON. MEMBERS: Let it be up to eight o'clock.

MR. CHAIRMAN: First, let us extend it up to seven o'clock and we will see later. With your consent, I extend the time by one hour.

... (Interruptions)

SHRI K. BAPIRAJU (NARASAPUR): What we are doing every time is that we are extending it by one hour. The Government is also like that.

MR. CHAIRMAN: You know about the procedure and everything.

SHRI K. NATWAR SINGH : The hon. Member was asking me to make my speech I am I do not think that the Minister of Home Affairs needs his support. He is quite able to look after himself.

Now, Sir, for the whole day, we have been hearing about the so-called sins of omissions and commissions of the Congress Party for the last 45 years.

I was surprised to hear my dear friend, Shri Jagmohan, of all people, castigating the establishment because he was a very important and a high profile member of that establishment for better part of his life. I appreciate the spirit in which he spoke because I think he raised profound metaphysical and intellectual questions which should be discussed in the House. That is what we are for.

I have spent 45 years of my life studing foreign affairs.

I shall speak about the references at page 6 and references in these two other documents to the foreign policy of India. Shri Atal Bihar Vajpayee was the Foreign Minister of India in 1977-79. Did he change one iota of Jawaharlal Nehru's foreign policy?

18.00 hrs. He was the Prime Minister for 13 days. Did he make any change in the foreign policy of India? There have been other non-Congress Governments in the centre. Has any Government, any Foreign Minister, made any basic, fundamental change in the foreign policy of India which has stood the test of time? There has been a national consensus on foreign policy? They wish deny it if they can. But they cannot.

The framework for the foreign policy of India was drafted and was drawn up by Pandit Jawaharlal Nehru, not in 1947. He spoke about nonalignment at the Tripuri Congress in 1938. He addressed his mind and intellect to international problems and India's place in it in 1927 at the Brussels Conference on anti-imperialism and India's foreign policy is not tied to any doctrine and I want to remind Shri I. K. Gujral -- he is not here -that the very strength of our policy is that we have not embraced any dogma or any doctrine because dogma and doctrine are enemies of thought and new thinking. The strength of our foreign policy is that from the day that we got independence, we did not subscribe to the assumptions of Cold War. Nonalignment was born not in Bandung in 1955 or in Belgrade in 1961. It was born long before independence. What I find is that in the address of the President there is a perfunctory reference to Non-alignment. It is the core of our foreign policy. It is fashionable now to decry nonalignment.

I appreciate the fact that the National Agenda for the 1940s, 50s, 60s, 70s and 80s is different. We are living in a different world. If the nonaligned countries could get together to fight racialism, colonialism and imperialism and work for disarmament, the same group with the leadership of India which, I am said to note, has not been given for the past two years, should be able to assert itself again on the new agenda and it should produce new ideas in nonalignment and use that movement, as an instrument and vehicle for gathering public opinion to prevent the hegemony of one single power.

I ask this Government. Why is it not possible for them to do so? It is because they are a Government on crutches and the crutches consist of prominent warlords. We have already heard Shri George Fernandes. I have great respect for Shri George Fernandes. He has spoken about Tibat, Srilank,Burma to share his views Burma.They are complex issues involving the relationships between nations, the lives of millions of people. He has pronounced on serious matter . He is a senior, very experienced, member of the Government. There are 125 foreign Embassies and High Commissions in Delhi. They report to their Government on what confusion exists on particularly sensitive issue where words are important, precision is important.

It is stated on page 31 of this document, of the election manifesto: -

"Re-evaluate the country's nuclear policy and exercise the option to induct nuclear weapons."

Fortunately it does not find mention here. Of course, Shri Golwalkar wrote his book before the atom bombs were exploded. So, I do not know what he would have said. But I am very glad, Mr. Prime Minister, that your Party and you, as the most distinguished member of that Party, along with Shri Lal Krishna Advani, have abandoned what is stated on page 31 which reads as follows: -

"Re-evaluate the country's foreign policy and exercise the option to induct nuclear weapons. "

I am glad that you abandoned your nuclear adventurism.

It is one thing to make a public pronouncement on the nuclear policy which in opposition. It is quite another thing when you are in Government. So, with folded hands, I appeal to you that the maximum amount of verbal restraint must be used when matters of this high importance are discussed or mentioned out side this House.

Then, we have heard on foreign policy that we shall try our best to become Members of the Security Council of the United Nations. How my other colleagues have dealt with the other matters in the President's Address. I am only talking about the foreign policy.

Shri Atal Bihari Vajpayee has agreed with the foreign policy of India all his life. He has quoted Pandit Jawaharlal Nehru. I must say that I was a bit surprised when he spoke about his visit to China in 1979 in rather complacent terms because he knows that his trip to China was aborted. It did not produce the result that they said it did. The result of a breakthrough in the border dispute came when Shri Rajiv Gandhi went to China in 1988 and met Mr. Deng Xio Ping. That is a fact. It is not my imagination.

I want to know from the Prime Minister one thing because he was not here when I said this. Mr. Prime Minister, will you make fundamental changes in the policy framework laid down by the then Prime Minister of India Pandit Jawaharlal Nehru or will you not? I do not think you will, because you are now sitting in the same place where Pandit Jawaharlal Nehru sat for seventeen years. He thought deeply, he reflected, introspected and exchanged views with others and arrived at those conclusions. He felt that

Hindustan, Bharat Mata and Bharat Varsh India, was not just any country; it was a concept; it was an idea; it was a destination; it wais a pilgrimage; it was a fulfilment and this country could never be a camp follower of any other country.

And Pandit Jawaharlal Nehru said this long before the Jan Sangh was born, long before the Bharatiya Janata Party was heard of. I do not know if the RSS had any views in 1947 on foreign affairs. So, I want to place on record, through you, and humbly before the Prime Minister and his colleagues in his Government that the manner in which foreign policy has been dismissed in this document is totally inadequate when they talk about foreign affairs.

We are a country of hundred crore people. Our voice counts. When the Prime Minister of India goes abroad, he does not go as a leader of a particular party. He goes there as a representative of one billion people and I am sure that he will never forget that. Mr. Prime Minister, you were good enough, broad-minded enough to refer to the fact that a Congress Prime Minister elected to send you to lead the Indian Delegation to the Human Rights Commission. I humbly request you that now you are in Government you will return the compliment when the occasion arises...(Interruptions)

What I am trying to say is that the consensus that has been built on foreign affairs has been built over the last fifty years. I want that consensus to extend to other areas. Mr. Prime Minister, the leader of the Congress Party, even before you took oath, said that we would offer constructive cooperation. We maintain that. I am not going to refer to what happened in the first two days in the House. Other people referred to it. I only want to confine myself to the debate on foreign affairs.

I have just one more point to make. I will take one minute. I am not an expert on Finance. But the President's Address has not touched it. I hope that when the Budget comes up before this House, we will talk about the VDIS. The idea was that the funds from the VDIS will be devoted to infrastructure, to basic minimum services like pure drinking water etc.

I am interested to know from my friend The Finance Minister, Shri Yashwant Sin if the VIDS funds are being used properly. He has great experience in Government, much more than anybody else with perhaps the exception of Shri Jagmohan, on how modern Government runs because the difficulty that is going to be there for you, is that most of you have to learn the techniques of modern Government. It is not easy. Shri Yashwant Sinha knows a great deal about it. I will be interested to find out from him as to what is being done by the States to the amount given on the VDIS.

">SHRI C. SREENIVASAN (DINDIGUL): Sir, I thank you for giving me an opportunity to speak on behalf of my party the AIADMK under the dynamic leadership of Dr. Jayalalitha in support of the Motion of Thanks on the Presidential Address.

I take this opportunity to place on record my deep appreciation for presenting very honest programme of action for the Government under Shri Vajpayee. I am further grateful to the hon. Prime Minister for including in the National Agenda 33 per cent reservation for women, granting official status to Tamil along with 17 other languages and solution to the Cauvery River water dispute as per the demand of Puratchi Thalaivi Dr. Jayalalitha in the interest of Tamil Nadu.

I must also thank the Vajpayee Government for releasing 300 megawatts of power to Tamil Nadu from the North Eastern power grid at the request of Dr. Jayalalitha to save the people of Tamil Nadu from the power shortage due to Shri Karunanidhi's misrule... (Interruptions)

He should not make allegations. As per new rules, he should not go through the written speech...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please sit down. He is a newly elected Member. He has taken permission from the Chair to read his speech.

... (Interruptions)

speech...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: Please sit down.

... (Interruptions)

ruling on that...(Interruptions)

* Not recorded

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, he is a newly elected Member. He has the permission of the Chair to read it. He has taken permission from the Chair.

... (Interruptions)

wrong precedent.

MR. CHAIRMAN: It is not a wrong precedent. Shri Baalu, please cooperate with the Chair.

... (Interruptions)

He is a senior Member. He was there in the Tenth Lok Sabha. How are you going to allow him?...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Why are you arguing?

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please do not disturb the new Member.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri T.R. Baalu, you are a senior Member. Why are you interrupting like this everytime? Please sit down.

... (Interruptions)

(Interruptions)... You are sitting in the chair for the first time... (Interruptions)

SHRI S.S. PALANIMANICKAM (THANJAVUR): He is not a new Member. He is a senior Member.

MR. CHAIRMAN: Shri T.R. Baalu, it is a funny objection. You cooperate with the Chair.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: They are objecting to your reading. You may speak in your own language.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri T.R. Baalu, please sit down now.

श्री भजन लाल(करनाल) : सभापति महोदय, कायदा यह है और पुराना मैम्बर होने के नाते जहां तक मेरी जानकारी है अगर सरकार की तरफ से कोई स्टेटमैंट हो, तब तो माननीय सदस्य पढ़ सकते हैं, वरना यहां स्पीच पढ़ने का कोई कायदा नहीं है। मैंने आज तक ऐसे पढ़ते हुए देखा नहीं। इस मामले में हम आपकी रूलिंग चाहेंगे।

... (व्यवधान)

THE MINISTER OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI M. THAMBI DURAI): Sir, he can use the notes. He cannot read the whole thing, I agree ..(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri T.R. Baalu, please sit down. It is not a good thing to interrupt like this.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Sreenivasan, please complete your speech.

SHRI C. SREENIVASAN : Sir, I am not reading. I am just referring to some points... (Interruptions)... Let me speak in my own language - Tamil. Sir, kindly cooperate with me.

* I would like to emphasise the point I was making here now. I feel that it is only due to the mismanagement of affairs by the present Chief Minister of Tamil Nadu that things have come to this pass. It has resulted in power shortage which has taken its toll... (Interruptions)

Sir, am I not making myself very clear?... (Interruptions)*

have given an advance notice for this.

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Shri Baalu, do you object to his speaking in Tamil? ...(Interruptions)

* -* Speech originally delivered in Tamil

श्री राजो सिंह(बेगूसराय) : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है कि नियम ३५२(

xi)

में लिखा है कि लिखित भाषण पढ़ने से पहले चेयर से लिखित में इजाजत लेनी पड़ेगी। कल को आप भी ऑनरेबल मैम्बर थे। आपने इसका अध्ययन किया होगा। परमिशन देने का राइट स्पीकर को है। आप इस बात को देखें। अगर उन्हें अपना लिखित भाषण पढ़ने की इजाजत मिल गई है तो ही आप उन्हें एलाऊ करें।

MR. CHAIRMAN: Please cooperate with the Chair.

MR. CHAIRMAN: I know the rules and procedures.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri C. Sreenivasan, you should not read your whole speech. If something is there, you can quote from that.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri T.R. Baalu, please sit down. I have already given him the instruction in this regard.

... (Interruptions)

He has gone and spoken to his Member and passed on some message...(Interruptions)

SHRI M. THAMBI DURAI: Sir, I had only gone and asked him to give his speech without reading.

MR. CHAIRMAN : All of you may please take your seats.

through the record.

MR. CHAIRMAN: I will go through the record. If there is anything objectionable, I will remove it.

There is a conversation between an hon. Cabinet Minister and the Member concerned in Tamil: " Ellam Appadithan Pesara, Neenum Pesayya"...(Interruptions)

SHRI M. THAMBI DURAI: He has imputed some motives...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please listen to the Chair. If any objectionable expression is there on the record, I will remove it. Please sit down.

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions) ... (Not recorded)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions) ... (Not recorded)

MR. CHAIRMAN: Please sit down. Why do you unnecessarily waste the time of the House? Please sit down.

...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please go back to your seats. Please listen to the Chair first. Shri Baalu, if any objectionable expression is there, I will go through the record and remove it.

(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: Please listen to the Chair.

(Interruptions) *

MR. CHAIRMAN: You are a senior Member. If any privilege issue is there, you may come in a proper way later on.

* Not recorded

संसदीय कार्य मंत्री तथा पर्यटन मंत्री (श्री मदन लाल खुराना) : मेरा सभी सदस्यों से निवेदन है कि यह ऐक्सटेण्डेड टाइम है। यह इसलिए दिया गया है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग बोल सकें और अगर टेक्निकल बातों पर ही समय बरबाद कर देंगे तो ... (व्यवधान)

Affairs Minister you should protect the interests of the hon. Members.

श्री मदन लाल खुराना : लीडर्स के कहने पर कि मेम्बर्स ज्यादा संख्या में बोल सकें इसलिए ७ बजे तक समय बढ़ाया गया है और इन्हीं टेक्निकल पौइंटस पर आप लोग लड़ रहे हैं।

MR. CHAIRMAN: My request to the hon. Members is not to make provocative speeches. This is a discussion on the Motion of Thanks to the President's Address. That is why you may speak whatever you want to speak in a calm and quiet manner. There should be no provocation.

critical power cut.

Is it correct? I want to verify this. (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please address the Chair. Do not address other hon. Members.

... (Interruptions)

SHRI C. SREENIVASAN : In the last elections, Dr. Jayalalitha canvassed for a stable Government with Shri Atal Bihari Vajpayee ably leading the BJP. In Tamil Nadu the AIADMK and allies have got thirty out of forty seats. The people of Tamil Nadu have fully rejected the DMK. Shri M. Karunanidhi should have resigned immediately but he has not. We want ... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, what is wrong in it? This is not correct on your part.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions)*

---

* Not recorded

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, please sit down. What is wrong in it?

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, give me one minute. Your party will get a chance. You can speak whatever you want at that time.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: What is wrong in it? What is wrong in what the hon. Member has spoken?

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: What is your feeling?

just check up the record. There is no subject, predicate or object. What can I make out of this sentence?

MR. CHAIRMAN: Shri Sreenivasan, please conclude. The allotted time is over.

SHRI C. SREENIVASAN : I request the hon. Prime Minister to recall the findings of the Sarkaria Commission against Shri Karunanidhi. Justice Sarkaria has said and I quote `Mr. Karunanidhi has indulged in corruption in a scientific manner'. The findings should be revived by taking them out from the cold storage and Shri Karunanidhi should be chargesheeted. (Interruptions)

everyone here. (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, you will get a chance. Why do you disturb him?

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Your party will also get a chance. You can condemn whatever you want at that time.

... (Interruptions)

cannot make out anything. (Interruptions)* What can we do? (Interruptions) Let him speak in Tamil.

---

* Not recorded

MR. CHAIRMAN: It is not good on your part. If some intelligent people are there, they can speak in English very well. What is there in it?

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I am removing from the records that comment made by the hon. Member. Please sit down.

... (Interruptions)

SHRI VAIKO : Mr. Chairman, Sir, you please allow him to speak in English.

SHRI V. DHANANJAYA KUMAR (MANGALORE): When he started speaking in Tamil, it was Shri Baalu who objected to it. (Interruptions)

House.

MR. CHAIRMAN: Shri Baalu, please sit down. No provocation please.

SHRI VAIKO : Sir, I will take only one minute.

MR. CHAIRMAN: Please sit down. Let us not unnecessarily waste the time of the House.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: I am not allowing anybody other than Shri Sreenivasan to speak. Please sit down.

SHRI C. SREENIVASAN : There are continuous caste and communal riots in Tamil Nadu. This morning our hon. MDMK leader Shri Vaiko has mentioned about the Coimbatore bomb blasts and how Shri Advani was saved from the danger.

This is hightime the Central Government should act by dismissing the Tamilnadu Government headed by Shri Karunanidhi and restore peace in the State. ... (Interruptions) Sir, I call upon all patriotic Indians to support BJP's Government for the success of the policies of the BJP Government.

With these words I support this Motion.

">

कैप्टेन जयनारायण प्रसाद निषाद (मुजफ्फरपुर): सभापति महोदय, मैं राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर जो धन्यवाद का प्रस्ताव रखा गया है उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। उसमें बाल श्रमिकों के बारे में कहा गया है। मैं पूछना चाहता हूं कि बाल श्रमिक कैसे बनते हैं। मैं बताना चाहता हूं कि बाल श्रमिक भूख और लाचारी में बनते हैं। कोई भी माता-पिता अपने बच्चों को बाल श्रमिक नही बनाना चाहता, लेकिन जब उनकी रोटी की कोई व्यवस्था नहीं है और जब वे भूखे मर रहे हैं, तो वे सोचते हैं कि भूखे मरने से तो अच्छा है बच्चे को कहीं काम पर लगा दिया जाए। इसलिए भुखमरी के कारण माता-पिता लाचारी में अपने बच्चों से फैक्ट्रियों में काम कराते हैं। अगर सरकार चाहती है कि सचमुच में बाल श्रमिक न बनें और बाल श्रम बन्द हो और हमारे देश का कोई भी बच्चा फैक्ट्रियों में कार्य न करे, तो सरकार को चाहिए कि वह हर पंचायत में आवासीय स्कूल की स्थापना करे जिनमें ऐसे बच्चों को भर्ती किया जाए जो गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन यापन कर रहे हैं और जिनमें बच्चों के भोजन वस्त्र से लेकर मैट्रिक तक की शिक्षा की व्यवस्था हो।

सभापति महोदय, दूसरी बात इस अभिभाषण में कही गई है कि बेरोजगारी को हटाया जाएगा। एक प्रकार से यह नारा भारतीय जनता पार्टी ने दिया है कि वह बेरोजगारी को हटाएगी, लेकिन वह इस बढ़ती हुई बेरोजगारी को कैसे हटाएगी, इसकी कोई रूपरेखा नहीं दी गई है। मैं कहना चाहता हूं कि जब तक आप बिजली की आपूर्ति मांग के अनुसार नहीं करेंगे तब तक देश से बेरोजगारी नहीं मिट सकती है। बिना बिजली के देश में कोई उद्योग, फैक्ट्री, कृषि या पढ़ाई नहीं चल सकती है। आज हर क्षेत्र में विद्युत की आवश्यकता है और मांग प्रति दिन बढ़ती जा रही है। बिना विद्युत के किसी भी चीज की बढ़ोत्तरी नहीं हो सकती है। हम लोग कांग्रेस सरकार को धन्यवाद देते हैं कि १९५० में पैदा होने वाली बिजली को जो उस समय तीन फिगर यानी ७४३ मैगावाट थी वह उसकी नीतियों और कार्यों के कारण बढ़कर अब पांच फिगर में यानी ८६,००० मैगावाट हो गई है। इसके बावजूद मांग और आपूर्ति में २१ प्रतिशत का अंतर है। जब तक यह गैप पूरा नहीं किया जाएगा तब तक आप बेरोजगारी को दूर नहीं कर सकते हैं। इसके लिए आपने कोई निर्णय नहीं लिया है, कोई सुझाव इसमें नहीं दिया है, कोई रास्ता नहीं बताया है कि आप बेरोजगारी को कैसे दूर करेंगे। यदि सचमुच में आप इस गैप को पूर्ण करना चाहते हैं, तो आपको नान-कन्वेशनल इनर्जी की तरफ ध्यान देना होगा और समय तथा धन खर्च करना होगा। अगर आपके पास आज पैसा हो, तो आप ५४ हजार मैगावाट बिजली विंड से नान-कन्वेंशनल इनर्जी के रूप में पैदा कर सकते हैं, लेकिन अगर आप कन्वेंशनल इनर्जी बनाना चाहेंगे, तो समय और धन बहुत ज्यादा लगेगा, जो इस देश के हित में नहीं है। समुद्रीय जल तरंगों से ७९ हजार मैगावाट बिजली आप पैदा कर सकते हैं। आप हाइडल के छोटे-छोटे प्रोजेक्ट लगाकर १० हजार मैगावाट बिजली पैदा कर सकते हैं। ये सब चीजें एक साल में हो सकती हैं। मैं प्रधान मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि बिजली की मांग और आपूर्ति का गैप पूरा करने के लिए नान-कन्वेंशनल इनर्जी का सहारा लेकर बिजली का उत्पादन बढ़ाएं जिससे कि आपका बेरोजगारी खत्म करने का नारा सफलीभूत हो सके ।

सभापति महोदय, इस अभिभाषण के पैरा नं. ३८ में कहा गया है कि भ्रष्टाचार और हमारी राजव्यवस्थाओं में मूल्यों के ह्रास तथा राजनीति के अपराधीकरण का एक कारण चुनावी प्रक्रिया में दोषों की व्याप्ति है। स्वतंत्र, निष्पक्ष और भयमुक्त चुनाव कराने और धन तथा बाहुबल के प्रयोग को रोकने के लिए सरकार एक व्यापक चुनाव सुधार विधेयक लायेगी, जिसके लिए पहले ही आधारभूत कागज तैयार किया जा चुका है। इस बारे में हमें कहना है कि राजनीति में जो आज अपराधीकरण है उसे दूर करने का कोई सुझाव नहीं दिया गया है। आपने विधेयक का जो आधारभूत कागज तैयार कर लिया है उसकी जानकारी सभी सदस्यों को दें। सर्वप्रथम राजनीति से अपराधीकरण हटाने के लिए बूथ कैप्चरिंग और बोगस मतदान को हटाना होगा।

... (व्यवधान)

होता होगा, हर जगह होता है। कहीं बोगस मतदान होता है, कही बंदूक दिखाकर बूथ पर बैलट पेपर छाप दिये जाते हैं। दोनों चीजें एक समान है। चाहे बिहार में हो, चाहें उत्तर प्रदेश में हो, या दिल्ली में हो।

... (व्यवधान)

श्री राजोसिंह : आप लोगों के यहां होता है कि कमीशन से मिलकर, कमीशन की मार्फत फायदा उठा लिया जाता है।

... (व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह : बिहार में जिसकी सरकार होती है वह कलक्टर से मिलकर रिजल्ट भी बदलवा लेता है।

... (व्यवधान)

श्री राजोसिंह : अगर ऐसा होता तो आप और हम यहां नहीं होते। ...

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please sit down. No interruptions.

... (Interruptions)

श्री प्रभुनाथ सिंह : आप तो आ जाते लेकिन हमारे साथ जो दो लाख सौ हजार की बढ़ोतरी थी लेकिन वहीं छपरा में कमी थी।

... (व्यवधान)

SHRI P. SHIV SHANKAR (TENALI): Sir, if he is going to cast aspersions on collectors, etc., will you consider expunging those things from the record?

श्री राजो सिंह : कलेक्टर सर्टिफिकेट नहीं देते तो आते कैसे?

... (व्यवधान)

श्री शिवराज सिंह चौहान (विदिशा) : आपके पीछे जो मेम्बर बैठे हैं उनसे कहिये।

MR. CHAIRMAN: No cross-talking please. If anything is wrong, I will expunge it from the record.

... (Interruptions)

श्री राजो सिंह : आप लोग वोट से आए हैं तो क्या हम नौमिनेट हुए हैं? ... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Unnecessarily you are standing up every time. Please sit down. No cross-talking.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: What is this? I am requesting the hon. Member not to interrupt. No cross-talking please.

... (Interruptions)

कैप्टन जयनारायण प्रसाद निषाद : सभापति जी, यह मेरी मेडेन स्पीच है इसलिए मैं सदस्यों से कहूंगा

... (व्यवधान)

मंत्री जवाब देता है भाषण नहीं देता। मैं यहां पहली बार भाषण दे रहा हूं इसलिए आपसे आग्रह करूंगा कि आप इंटरप्ट न करें। चुनाव आयोग ने हाथ खड़ा कर दिया है, मान लिया है कि चुनाव में बोगस मत और बूथ कैप्चरिंग को नहीं रोका जा सकता। आप परिचय-पत्र बनाने में ८० प्रतिशत से भी ज्यादा रुपया खर्च कर चुके हैं। अगर थोड़ा रुपया और खर्च करके सभी मतदादाओं को परिचय पत्र जारी करा दें तो भी उससे बूथ कैप्चरिंग और बोगस मतदान नहीं रुकेगा। उसके लिए आपको कानून बनाना पड़ेगा कि जिस समय मतदान हो तो परिचय पत्र और मत-पत्र दोनों साथ साथ बक्से में गिरें। इस तरह से अगर कोई बोगस मतदान या बूथ कैप्चरिंग करना चाहेगा तो उसे पहले परिचय-पत्र हासिल करना पड़ेगा। वहां उस दिक्कत होती है। इकट्ठा करने के बाद अगर वह बूथ पर आएगा तो वहां कर्मठ, ईमानदार पोलिंग पार्टी होने से उसे वहां भी दिक्कत आएगी।

इसलिए यदि हम सभी मतदाताओं को परिचय पत्र ईशू कर दें और यह नियम बना दें कि वोट डालते समय ये दोनों साथ होने चाहिए तो इससे फायदा होगा। बाहर का कोई भी अपराधी वोट नहीं डाल सकेगा, बोगस मतदान नहीं कर सकेगा। सबसे बड़ी बात यह होगी कि जो अधिकारी अपने मनचाहे उम्मीदवार या पार्टी के लिए बूथ छाप लेता है, उसे ऐसा करने का मौका नहीं मिलेगा। अपराधी आता है, बूथ कैप्चर करके, बोगस मतदान करके, चला जाता है। यदि ऐसा सिस्टम लागू किया जाएगा तो सदन में अपराधी लोग नहीं पहुंच सकेंगे।

इलैक्शन कमीशन ने जो सिक्युरिटी मनी बढ़ा दी है कि ऐसा करने से बैलेट पेपर छोटा होगा, इस बारे में मैं कहना चाहता हूं कि सिक्युरिटी मनी बढ़ाने से बैलेट पेपर छोटा नहीं होगा। डमी कैन्डीडेटस को कौन रोकेगा। सबने ६-६ डमी कैन्डीडेट रख दिए तो अनेक कैन्डीडेट हो जाते हैं। इसके बाद धरतीपकड़, आसमान-पकड़ आदि लोग उसमें खड़े हो जाएंगे तो बैलेट पेपर छोटा कैसे होगा। यदि कोई १६ प्रतिशत वोट नहीं लेता है तो आप जमानत जब्त कर लेते हैं, उसमें सजा का प्रावधान है, मेरा सुझाव है कि हर उम्मीदवार के लिए १ प्रतिशत वोट लाना अनिवार्य कर दिया जाए। यदि कोई १ प्रतिशत वोट नहीं लाए तो उसके लिए मौलिक अधिकार के हनन, सरकारी तंत्र के दुरुपयोग के अभियोग में छः महीने की सजा का प्रावधान किया जाए। जो व्यक्ति १ प्रतिशत वोट नहीं ला सकता, उसे लड़ने का अधिकार नहीं है। मैं यह सुझाव विचार के लिए रख रहा हूं। आप मानें या न मानें, वह आपका काम है। हमेशा चिल्लाते रहिए कि बक्सा बदल दिया, ये छाप दिया, वो छाप दिया, बदनाम करते रहिए।

दूसरी बात धन बल की है। आप उसे हटाने जा रहे हैं। उसमें मेरा सुझाव है कि चुनाव के समय नेताओं को दूसरे के क्षेत्र में जाने से रोका जाए। यदि आपका और्गनाईजेशन है, आप जनता के बीच में जाते हैं तो नेताओं को वोट मांगने के लिए किसी दूसरे के क्षेत्र में जाने की क्या जरूरत है। यदि आपका और्गनाईजेशन मजबूत है, हर पंचायत में आपके कार्यकर्ता हैं तो आपकी नीति जनता के बीच पहुंच जाएगी। नेताओं के जाने से खर्च बढ़ता है, जातिवाद बढ़ता है। यदि मैं निषाद जाति का हूं तो मुझे निषाद-बहुल क्षेत्र में भेजा जाता है। दलित नेता को दलित बहुल क्षेत्र में भेजा जाता है, धार्मिक नेता को धार्मिक बहुल जगहों में भेजा जाता है। इससे साम्प्रदायिकता बढ़ती है, जातिवाद को बढ़ावा मिलता है। चुनाव के दरम्यान हैलिकॉप्टर का इस्तेमाल करना बंद कर दिया जाए, तभी हमारी आम कार्यकर्ता की इज्जत बढ़ेगी। हम पांच साल में एक बार चुनाव के लिए जाते हैं। हमें हमेशा अपने क्षेत्र में जाना पड़ेगा, जनता की परिस्थिति को जानना पड़ेगा और उसका निवारण करना पड़ेगा। यदि आपकी पंचायत में २०० सदस्य हैं और यदि चुनाव के समय एक सदस्य को १० घर की जिम्मेदारी दे दें तो एक पंचायत की २००० घरों की जिम्मेदारी हो जाती है। सुबह दांत साफ करते-करते वह १० घर घूम ले और उसके बाद अपने काम पर चला जाए, फिर शाम को लौटकर १० घर देख ले।

दो हजार घर आप सुबह शाम टच कर रहे हैं। जिस दिन पोल होना है, दस घरों से वोटरों को निकालकर वोट डलवा दिया जायेगा। इसमें आपको लाउडस्पीकर बजाने की कहां जरूरत पड़ेगी, पोस्टर छपवाने की कहां जरूरत पड़ेगी और बैनर टांगने की कहां जरूरत पड़ेगी। लेकिन इसके लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी, आपको जनता के बीच जाना पड़ेगा।

मैं इस सम्बन्ध में अपना सुझाव देता हूं कि सरकार ५० हजार रुपये से ज्यादा खर्चा करने पर रोक लगा दे। किसी भी प्रत्याशी को दो व्हिकल से ज्यादा का इस्तेमाल करने पर रोक लगे, ताकि जब भी आप जायें तो आप पैसे के बल पर १०० व्हिकल दौड़ाकर लोगों को ठगने की कोशिश न करें। अगर निश्चित तौर पर आप चाहते हैं कि चुनाव सुधार हों और अपराधी चुनकर संसद में न आयें और जनता के प्रतिनिधि चुनकर आयें तो आपको यह सब करना पड़ेगा। आपने राष्ट्रपति के अभिभाषण में इस तरह का प्रावधान करने का कोई उल्लेख नहीं किया है, इसलिए मैं आपके इस धन्यवाद प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री वशिष्ट नारायण सिंह (विक्रमगंज) : सभापति महोदय, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

मैं आज अपनी बात इस देश के एक महान व्यक्तित्व के एक संस्मरण से शुरू करना चाहता हूं। स्वर्गीय लोकनायक जयप्रकाश नारायण धनबाद गये हुए थे। धनबाद की उनकी सभा में भारी भीड़ इकट्ठी हुई थी। उसके बाद जब जयप्रकाश नारायण जी पटना में लौटे तो वहां बहुत चिन्तित थे, बहुत उदास थे, बहुत उद्विग्न थे और बहुत बेचैन थे। उस समय उनके पास हम लोगों को सुनने का, रहने का मौका मिला था। हम लोग वहीं थे। जयप्रकाश नारायण जी से उनकी उदासी का कारण, उनकी उद्विग्नता का कारण, उनकी बेचैनी का कारण हम लोगों ने पूछा। जयप्रकाश नारायण जी ने उस समय यह जवाब दिया और आज इसीलिए मैं इसका उलेलख इस सदन में करना चाहता हूं कि आज के प्रसंग में उनकी उदासी का जो कारण था, वह बड़ा प्रासंगिक दिखता है। उन्होंने कहा था कि जनता की उम्मीदें और आकांक्षाएं इस आन्दोलन से बहुत बढ़ गई हैं। लोगों की उम्मीदें बहुत जग गई हैं और जे.पी. आन्दोलन को आशा भरी नजरों से लोग देख रहे हैं। मैं सोच नहीं पा रहा हूं कि जो लोगों की आकांक्षाएं हैं, उम्मीदें हैं, उनको मैं किस ढंग से पूरा कर पाऊंगा, किस ढंग से अपने कन्धों पर मजबूती से ले चल सकूंगा।

आज इस प्रसंग का उल्लेख मैं इसलिए करना चाहता हूं कि जे.पी. आन्दोलन के समय में जो भीड़ इकट्ठी होती थी और आज जो भीड़ इकट्ठी हुई है, दोनों की आकांक्षाओं में थोड़ा फर्क जरूर है। जे.पी. आन्दोलन के समय जो भीड़ इकट्ठी हुई थी, वह भीड़ एक ऐसी भीड़ थी, जो कि सड़क और संसद के बीच में एक संवाद भी स्थापित हो, इसके लिए भी वह आन्दोलन हो रहा था। लेकिन आज हमारे भारत के प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सभाओं में भी भारी भीड़ इकट्ठी हुई है, प्रसंग बदला जरूर है। एक ओर लोकशक्ति और राजशक्ति के समन्वय का आन्दोलन चल रहा था। लोकशक्ति को चलाने वाला कोई दूसरा बड़ा व्यक्तित्व तो बाहर के मैदान में नहीं खड़ा है, लेकिन देश का एक ऐसा व्यक्ति देश का प्रधान मंत्री हुआ है, जिसकी सभाओं में काफी भीड़ इकट्ठी हुई है।

१और लोग उम्मीद से देख रहे हैं कि शायद अब तक की जो समस्याएं हैं, उनके निदान का रास्ता निकल सके। राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में सोशियो इकोनोमी कंटेंट पर भी चर्चा हुई। जबकि इस पर यहां विस्तार से चर्चा नहीं की गई है। सोशियो इकोनोमी कंटेंट की बात इसलिए कह रहा हूं कि जहां आर्थिक सवालों पर इसी सत्र में वित्त मंत्री ने भारत की वित्तीय व्यवस्था की चर्चा की, वहीं हमारे रक्षा मंत्री ने भारत के हालात की चर्चा की, ये दोनों ही दुखद हैं। इससे निजात पाने की जरूरत है। भारत के वित्त मंत्री ने इसी सदन में अपने भाषण में कहा था कि राजकीय कोष के लिए अनुमान से अधिक खर्च है। भारत के रक्षा मंत्री ने भी इसी सत्र में अपने भाषण में कहा था कि ५२ करोड़ की आबादी इस देश में दस रुपए के आधार पर अपना गुजारा कर रही है। इससे भयावह चित्रण भारत का और कोई दूसरा नहीं हो सकता।

मैं मानता हूं कि अभिभाषण में जिन चीजों का उल्लेख किया गया है, वे तत्व ऐसे हैं, यदि उन पर ईमानदारी से और प्रभावकारी ढंग से विचार किया जाए तो इस देश की समस्याओं का निदान किया जा सकता है। इधर दो-तीन बरस से राष्ट्र में कुछ मुद्दों पर बहस चल रही है। राष्ट्रपति महोदय ने भी उनकी चर्चा की है। वे आज भी बहस के मुद्दे बने हुए हैं और आगे भी होंगे। जैसे महिलाओं को ३३ प्रतिशत आरक्षण देने की बात राष्ट्रपति महोदय ने की है। एक और विशेष बात का उल्लेख राष्ट्रपति के अभिभाषण में किया गया है, जिसकी मैं प्रशंसा करना चाहता हूं। हम बिहार के लोग, केवल बिहार के ही नहीं, पूर्वी उत्तर प्रदेश के, उड़ीसा के और मध्य प्रदेश के लोग आक्रांत हैं इस सवाल से जो पिछड़ा हुआ संघीय ढांचा है, जो पिछड़ा हुआ इलाका है। इसके लिए एक आयोग बनाया जाएगा, जिससे जो अमीर है, सम्पन्न है उन राज्यों की तुलना में, यदि उनकी योजनाओं को विकास में प्राथमिकता दी जाए तो उनकी तुलना में वे भी खड़े हो जाएंगे, इस पर विशेष ध्यान देने का काम किया गया है।

कई ऐसी चीजों का उल्लेख किया गया है जिनके ऊपर यदि ध्यान दिया गया तो राष्ट्र में अच्छी शुरूआत करने की प्रक्रिया शुरू हो सकती है। महिलाओं को स्नातक स्तर तक की मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था करने की बात कही गई है। यह कोई साधारण चीज नहीं है और न ही कोई साधारण कार्यक्रम है। इसके अलावा और भी ऐसे कार्यक्रम हैं।

यहां कई सवाल आए हैं और कई मुद्दे उठाए गए हैं। सबसे बड़ी बात है ६० प्रतिशत बजटरी आरक्षण ग्रामीण क्षेत्रों में खर्च करने की और ग्रामीण संरचना के लिए अन्य बातों को भी उठाया गया है। इसी तरह से एग्रो इंडस्ट्रीज की बात कही गई है। यदि इस पर देश को खड़ा कर दिया जाएगा, तभी यह देश बचेगा, बनेगा और चलेगा। आज हमारे सामने एक और खतरा खड़ा हो गया है। राजस्थान में भुजिया के क्षेत्र में और राजस्थान में बने हुए पापड़ों के क्षेत्र में तथा मैसूर में बनी हुई संदल सोप के क्षेत्र में विदेशी कम्पनीज प्रवेश कर रही हैं। आज यह खतरा पैदा हो गया है इसलिए इससे निजात पाने के लिए छोटे उद्योगों और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना पड़ेगा। इस पर भी राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर विशेषरूप से चर्चा की गई है। यह एक ऐसी शुरूआत की गई है, यदि इसको सबकी सहमति से लागू किया गया तो देश में एक ऐसा समय आ सकता है और आ रहा है जिसमें देश एक नई दिशा में प्रवेश करेगा।

मैं कुछ बातों का और उल्लेख करना चाहूंगा। योजनाएं पहले भी बनी हैं, अब भी बन रही हैं और भविष्य में भी बनेंगी। भारत के वर्तमान प्रशासन को और भारत के प्रधान मंत्री तथा उसके मंत्रिमडल को कुछ चीजों पर सोचना पड़ेगा कि जहां फिजूलखर्ची पर रोक लगानी है, वहीं पर खर्च की सीमा पर नियंत्रण भी करना पड़ेगा, तभी देश को विकास के रास्ते पर ले जा सकते हैं।

एक ओर आलीशान भवनों में रहने की प्रवृत्ति पर रोक न लगाई जाए, खर्च की सीमा पर अंकुश न लगाया जाए, दूसरी ओर विकास की योजनाएं बनती जाएं, आमदनी न बढ़ने पाए, सड़क पर सोने वालों की संख्या बढ़ती जाए तो इस देश को सोचना पड़ेगा कि किस ढंग से देश को चलाया जाए? आज इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने की जरूरत है।

सभापति महोदय, मेरे दो सवाल हैं- एक, प्रवासी मजदूरों की दिल्ली में बढ़ती हुई संख्या और दूसरे, उनके सवाल पर गंभीरता से इस सदन में विचार होना चाहिए। बिहार और उत्तर प्रदेश ऐसे राज्य हैं जिनके मजदूर पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में रोजी-रोटी की तलाश में आ रहे हैं और यहां फुटपाथों पर सोने के लिए मजबूर हैं। प्रवासी मजदूरों के कल्याण, हिफाजत, सुरक्षा और हालत में अनवरत सुधार और उनके साथ बरती जाने वाली विसंगतियों की तरफ विशेष ध्यान देने की जरूरत है। आज दिल्ली में जहां यह सदन अवस्थित है, यदि मजदूरों की तरफ हम देखें तो दिल्ली में भारी संख्या में बीस प्रतिशत के आसपास केवल बिहारी मजदूरों की संख्या हो गई है। बिहारी मजदूरों की संख्या क्यों बढ़ती जा रही है? इसका कारण यह है कि बिहार में उन्हें रोजगार के अवसर नहीं मिल रहे हैं, विकास की किरणें वहां अभी नहीं पहुंच पाई हैं। अभी तक जो योजनाएं चली हैं, वहां जितने केन्द्रीय प्रतिष्ठान हैं, उनमें से कुछ बंदी के कगार पर हैं और कुछ बंद हो गए हैं, चाहे वह डालमिया समूह का सवाल हो या किसी अन्य समूह का सवाल हो, वे सब मरणासन्न हालत में हैं। बिहार में औद्योगिक संरचना समाप्त होती जा रही है और दूसरे उद्योग-धंधे भी ठप्प पड़ते जा रहे हैं। यह बात मैं बिहार की सिंचाई योजनाओं के लिए भी कह रहा हूं। अंग्रेजों की दी हुई सिंचाई योजनाएं आज बिहार में चरमरा गई हैं। उनको केन्द्रीय सहायता से नए तरीके से खड़ा करने की जरूरत है तभी बिहार राज्य भी अन्य राज्यों के साथ बराबरी पर खड़ा हो सकता है।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि पिछड़े राज्यों के लोग रोजी-रोटी की तलाश में बाहर जा रहे हैं, उनकी बेरोजगारी तभी दूर हो सकती है जबकि श्रम-शक्ति का साइंटिफिक तरीके से उपयोग किया जाए। बिहार में भूमि तथा पूंजी दोनों काफी कम हैं। विज्ञान तथा कम्प्यूटर्स का इतना प्रयोग न किया जाए कि मजदूर बेकारी के कगार पर पहुंच जाएं। उन मजदूरों का ख्याल रखा जाना भी जरूरी है।

... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः बिहार के बारे में भी कुछ बोलिए।

... (व्यवधान)

श्री बशिष्ट नारायण सिंह : आप मुझे बिहार के बारे में बोलने के लिए कह रहे हैं? क्या बिहार में सरकार नाम की भी कोई चीज है? क्या वहां कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज है? बोलिए।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Narayan Singhji, please conclude. Only one minute is left.

श्री बशिष्ट नारायण सिंहः जब बिहार में सरकार नाम की कोई चीज नहीं है तो सरकार के बने रहने का नैतिक आधार भी नहीं है।

... (व्यवधान)

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

">